



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

“

भिक्षुवाणी

विण अंकुस जिम हाथी चाले, घोड़े विगर लगाम।
एहवी चाल कुगुरु री जाणों, कहिवा नें साधु नांम॥

अंकुश के बिना हाथी चल रहा है और लगाम
के बिना घोड़ा चल रहा है। कुगुरु की चाल भी
ऐसी ही है, वह साधु का नाम धराता है किन्तु
संयम के बिना चल रहा है।

— आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली

• वर्ष 27 • अंक 50 • 21 सितम्बर - 27 सितम्बर 2026



प्रत्येक सोमवार

• प्रकाशन तिथि : 19-09-2026 • पेज 24

₹ 10 रुपये

साधना से सिद्धि, क्षमा से शुद्धि : पर्युषण महापर्व 'अमृत देशना' विशेषांक



वीर की क्षमा, भिक्षु की मर्यादा, तुलसी का मंगल वरदान है,
महाश्रमण की दिव्य निश्रा में, लाडलू योगक्षेम से जागा आत्म-ज्ञान है!
तेरापंथ की तपो-साधना से आलोकित 'पर्युषण' का यह पर्व महान है,
'खमत-खामणा' के पावन स्वर से शुद्ध आत्म भगवान है!



श्रद्धाप्रणत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार


लाडनूँ सुधर्मा सभा में खाद्य संयम की प्रेरणा के साथ पर्युषण पर्व का आगाज़

त्याग और आत्म-शुद्धि का महापर्व है पर्युषण : आचार्यश्री महाश्रमण

चतुर्थ पट्टाचार्य श्रीमज्जयाचार्य के महाप्रयाण दिवस पर पूज्यश्री ने किया पावन गुणानुवाद

लाडनूँ।

08 सितम्बर, 2026

तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी लाडनूँ की धरा पर योगक्षेम वर्ष का महामंगल प्रवास कर रहे जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में पर्वधिराज पर्युषण का आध्यात्मिक वातावरण में मंगल शुभारंभ हुआ। प्रातःकालीन मंगल प्रवचन सत्र में भाद्रपद मास के इस अतिमहत्त्वपूर्ण पर्व के प्रथम दिन 'खाद्य संयम दिवस' के रूप में साधक वृंद ने साधना का संकल्प लिया।

पर्वधिराज पर्युषण और चातुर्मास का आध्यात्मिक महत्त्व :

१. आध्यात्मिक साधना का विशेष समय : महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के प्रसंग का शुभारंभ करते हुए फ़रमाया कि भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का वर्णन पर्युषण पर्वधिराज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में किया जाता है। आज से जैन श्वेतांबर तेरापंथ परंपरा का अतिमहत्त्वपूर्ण पर्व पर्युषण का शुभारंभ हुआ है। भाद्रपद महीने में इस पर्व का पदार्पण होता है। इसी से जुड़ा हुआ भगवती संवत्सरी का सर्वोच्च दिन होता है, जिसकी आराधना की जाती है।

२. त्याग व तपस्या की महिमा : चातुर्मास में यों तो चार महीने होते हैं, उनका यथासंभव अच्छा उपयोग हो सकता है। चातुर्मास का पूर्वार्ध, यानी भगवती संवत्सरी तक का समय त्याग, तपस्या आदि की दृष्टि से कुछ अतिरिक्त महत्त्व वाला होता है। यह समय अपने आप में महिमा मंडित वाला है। यह आध्यात्मिक साधना का विशेष समय होता है।

नयसार का भव और सम्यक्त्व की प्राप्ति :

१. संत सेवा और मार्ग दर्शन : आचार्यश्री ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा के दौरान नयसार के भव



का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि नयसार ने साधु संतों को भोजन आदि का दान दिया और रास्ता बताने के लिए मार्ग सेवा में साथ चले।

२. उपदेश से सम्यक्त्व : संतों ने उपदेश दिया, साधुओं द्वारा किसी को उपदेश, ज्ञान आदि देना उपकार का कार्य होता है, इससे नयसार को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई।

प्रज्ञापुरुष श्रीमज्जयाचार्य जी का महाप्रयाण दिवस व खाद्य संयम :

१. चतुर्थ आचार्य का स्मरण: आचार्य श्री ने आगे फ़रमाया कि आज का दिन हमारे धर्म संघ से भी जुड़ा हुआ है। आज हमारे धर्म संघ के चतुर्थ आचार्य प्रज्ञापुरुष श्री मज्जयाचार्य का महाप्रयाण दिवस है। श्रीमज्जयाचार्य एक ज्ञानी व्यक्तित्व थे। बाल्यावस्था में ही उनकी दीक्षा हो गई और बाद में वे धर्म संघ के चतुर्थ आचार्य के रूप में प्राप्त हुए। उन्होंने धर्म संघ के उन्नयन के अनेक कार्य किए। आचार्य श्री ने उनसे संदर्भित एक गीत का आंशिक संगान किया।

२. खाद्य संयम की प्रेरणा : आचार्य श्री ने खाद्य संयम दिवस के संदर्भ में लोगों को खाने में संयम करने की प्रेरणा प्रदान की।

युवाचार्य श्री, साध्वी प्रमुखाजी एवं साध्वी वर्धाजी का विचार-पाथेय :

१. युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी: युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने दस धर्मों की व्याख्या के अन्तर्गत 'मुक्ति

'लोहे की बेड़ियाँ तो कट गईं... पर राजा खुद को कैदी क्यों मानने लगा?'

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने कहा असली बंधन बाहर नहीं, हमारे भीतर हैं, जो प्रसंगों के माध्यम से साझा किया।

१. असली बेड़ियाँ :

दृष्टांत : एक राजा ने कैदीखाने में बेड़ियों से जकड़े एक दुखी कैदी को देखकर दयावश उसे मुक्त करवा दिया। परंतु इसके बाद राजा ने गहरा आत्म-निरीक्षण किया कि क्या वह स्वयं भी राज्य के मोह, वैभव और सांसारिक बंधनों में नहीं जकड़ा हुआ है?

संदेश : असली बेड़ियाँ बाहरी नहीं, भीतर के मोह, लोभ और आसक्ति हैं।

२. ईर्ष्या का बंधन :

दृष्टांत : एक बुढ़िया दिन-प्रतिदिन कमजोर और बीमार होती जा रही थी। कारण पूछने पर पता चला कि पड़ोसी के घर में रोज़ सुबह बजने वाली बिलौना (मथनी)

की आवाज़ उसकी छाती पर चोट करती थी, क्योंकि उसके पास गाय-भैंस नहीं थी।

संदेश : दूसरों की उन्नति और सुख को देखकर जलना इंसान को बिना बीमारी के भी भीतर से खोखला कर देती है।

३. भय का बंधन :

दृष्टांत : राजा ने शर्त रखी कि बकरी को भरपेट खिलाया जाए लेकिन वह मोटी नहीं होनी चाहिए। रोहक ने इसका चतुर समाधान निकालते हुए बकरी को शेर के पिंजरे के पास बाँधकर चारा दिया। निरंतर शेर का भय होने के कारण बकरी भरपेट खाकर भी दुबली ही रही।

संदेश : भय और मानसिक दबाव इंसान की शांति और स्वास्थ्य नष्ट कर देते हैं। निष्कर्ष: सच्ची 'मुक्ति' बाहरी त्याग से नहीं, बल्कि भीतर के मोह, ईर्ष्या और भय को मिटाने से मिलती है।

'एक गलती... और बदल गया अगला जन्म!'

साध्वीवर्या जी ने कहा कि प्रतिक्रमण केवल एक बाह्य अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मा का अवलोकन कर अपनी भूलों और कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ) को सुधारने का माध्यम है। यदि समय रहते कषायों का प्रतिक्रमण न किया जाए, तो यह साधना पथ में किस प्रकार बाधक बनता है, इसके 4 ऐतिहासिक दृष्टांत:

१. क्रोध (चंडकौशिक सर्प) : क्रोध का प्रतिक्रमण न करने के कारण एक साधक मुनि को चंडकौशिक सर्प की योनि में जाना पड़ा।

२. मान (बाहुबली) : मान (अहंकार) का आत्म-अवलोकन और प्रतिक्रमण न होने से बाहुबली जी को केवलज्ञान की प्राप्ति में विलंब हुआ।

३. माया (साध्वी लक्ष्मण) : माया (छल-कपट) का विशोध्यन न करने से साध्वी लक्ष्मण संयम पथ की विराधिका बनीं।

४. लोभ (नंदन मणियारा) : आसक्ति और लोभ का प्रतिक्रमण न करने के कारण नंदन मणियारा को स्वयं द्वारा बनवाई बावड़ी में मेंढक बनना पड़ा।

धर्म' पर अपना उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि जब तक आदमी के भीतर क्षमा, मुक्ति, रिजुता, मृदुता आदि गुण

प्रगट नहीं होते वह आदमी धार्मिक नहीं कहला सकता। यहां मुक्ति धर्म का तात्पर्य है - लोभ कषाय का विरोधी धर्म।

दीपक और अंधकार...

साध्वीप्रमुखा श्री जी ने आहार संयम पर एक प्रसंग साझा किया। एक बार एक छोटे बच्चे ने जलते हुए दीपक को देखकर अपनी माँ से पूछा, 'यह दीपक प्रकाश तो फैला रहा है, लेकिन नीचे अंधकार क्यों पैदा कर रहा है?'

माँ ने बच्चे की इस जिज्ञासा को शांत करते हुए एक गूढ़ बात कही — 'जो जैसा खाता है, वह वैसा ही उगलता है।' दीपक वास्तव में अंधकार को ग्रहण (भक्षण) करता है, इसलिए वह अंधकार ही बाहर निकालता है।

मुख्य संदेश एवं शिक्षा:

१. आहार और विचार का संबंध : जिस प्रकार का अन्न हम ग्रहण करते हैं, हमारे मन और विचार भी उसी प्रकृति के बनते हैं। शुद्ध आहार से शुद्ध विचारों का जन्म होता है।

२. आध्यात्मिक साधन : शरीर एक माध्यम है; सही और संयमित आहार शरीर को स्वस्थ रखता है ताकि वह आध्यात्मिक यात्रा में एक उपयोगी उपकरण बन सके।

जब तक लोभ कषाय विद्यमान रहता है, तब तक मुक्ति की ओर अग्रसर होना संभव नहीं है। व्यक्ति जब निर्लोभता की चेतना को जागृत कर लेता है तो सब बंधनों से मुक्त होने की दिशा में उसकी गति हो जाती है।

२. साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी : साध्वी प्रमुखा श्री ने 'खाद्य संयम दिवस' पर उपस्थित जनमेदिनी को उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि जैसा हम आहार करते हैं, हमारे विचार भी वैसे ही बन जाते हैं। आहार संयम का तात्पर्य है - आहार का विवेक करना। आहार का उद्देश्य क्षुधा निवारण, इंद्रियों की शक्ति को बढ़ाने का होना चाहिए, जिससे यह हमारी संयम यात्रा में सहयोगी बन सके।

३. साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी : साध्वी वर्या संबुद्धयशा जी ने पर्युषण के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि जैन धर्म में अनेक पर्व मनाए जाते हैं किन्तु पर्युषण पर्व का एक अलग ही महत्त्व है क्योंकि यह पर्व आत्मा व आत्मा की शुद्धि से जुड़ा हुआ है। इसी कारण इस पर्व को पर्वधिराज की संज्ञा दी गई है। पर्युषण के आगमन के साथ ही जन-जन में धर्मांधना करने का उत्साह जागृत हो जाता है।



युवाचार्य श्री ने आचार्यश्री को बताया धर्मसंघ का 'आर्किटेक्ट'

“आयो जैन-जगत रो प्रमुख पर्व संवत्सरी रे, छायो सकल संघ में रंग...” : आचार्यश्री महाश्रमण

पर्वाधिराज पर्युषण के शिखर दिवस पर पूज्यश्री ने फरमाया वर्धमान के विवाह से केवलज्ञान व निर्वाण तक का अलौकीक इतिहास

लाडनूं।

15 सितम्बर, 2026

जैन धर्म का महापर्व पर्युषण लाडनूं की धरा पर स्थित जैन विश्व भारती के सुरम्य व विशाल परिसर में विराजमान जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, शांतिदूत, अध्यात्मवेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में अगाध आध्यात्मिक गरिमा के साथ संपन्न हुआ। पर्वाधिराज पर्युषण का शिखर दिवस 'भगवती संवत्सरी महापर्व' के रूप में आयोजित हुआ। सूर्योदय से पूर्व ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु आध्यात्मिक लाभ उठाने हेतु श्रीचरणों में पहुँच गए थे और संपूर्ण परिसर जनाकीर्ण दिखाई दे रहा था। सुधर्मा सभा के मंच पर पूज्यप्रवर के पदार्पण पर श्रद्धालुओं के जयघोष से समूचा वातावरण गुंजायमान हो उठा। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्यश्री द्वारा 'आत्मा की पोथी पढ़ने का...' गीत के पावन संगान से हुआ।

भगवती संवत्सरी का महात्म्य व जीवनशैली में संस्कारों की प्रेरणा :

१. त्याग, संवर व क्षमा का गरिमामय दिन: पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पर्वाधिराज पर्युषण के शिखर दिवस पर पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आज भगवती संवत्सरी का पदार्पण हुआ है। श्वेतांबर परंपरा में यह दिन भाद्रव शुक्ला चतुर्थी अथवा भाद्रव शुक्ला पंचमी के दिन आता है। वर्ष में अनेक उत्सव आते हैं, किंतु हमारी परंपरा में भगवती संवत्सरी से बढ़कर कोई आध्यात्मिक पर्व नहीं है। यह त्याग, तप, मैत्री और क्षमा का दिन है। कल का दिन प्रायोगिक और व्यावहारिक खमत-खामणा का दिन होता है।

२. तप, साधना व नियम पालन : आज के दिन चारित्रात्माओं के लिए उपवास तथा श्रावक-श्राविकाओं के लिए अष्ट प्रहरी पौषध, चौविहार व तप का दिन होता है। तप में प्रत्याख्यान



हो तो संवर की पुष्टि होती है। साधु के ५ महाव्रत, समितिर्थाँ व गुप्तिर्थाँ होती हैं तथा श्रावकों के लिए १२ व्रतों की व्यवस्था है। जो अंतिम श्वास तक अखंड साधुत्व की आराधना करता है, वह भाग्यशाली होता है।

३. युवा पीढ़ी के लिए पावन पाथेय : आचार्यश्री ने प्रेरणा दी कि बाल व युवा पीढ़ी में धर्म के संस्कार रहें। देश या विदेश कहीं भी जाएँ, प्रतिदिन कम से कम २१ बार नमस्कार महामंत्र का जप यथा-संभव अवश्य करें। विदेश में भी संवत्सरी उपवास का ध्यान रखें। जीवन में नॉन-वेज (मांसाहार) व शराब आदि व्यसनो से बचने के प्रति जागरूकता होनी चाहिए तथा जैनजन्म व तेरापंथ की न्यूनतम जानकारी रखनी चाहिए। साधु-साध्वी व समणी वृंद बाल पीढ़ी में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करें।

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा : विवाह, कठोर तप, केवलज्ञान से निर्वाण तक :

जादुई सूत्र : बदल देंगे आपकी ज़िंदगी!...

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने जीवन को मंगलमय, सुखमय और शांतिमय बनाने के लिए परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजी द्वारा दिए गए तीन अत्यंत महत्वपूर्ण और सरल सूत्रों पर चर्चा की गई है। इन सूत्रों को अपनाकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार ला सकता है:

१. सहना सीखो (Tolerance) : जीवन में विपरीत परिस्थितियाँ, समस्याएँ या दूसरों का कटु व्यवहार सामने आने पर विचलित न होकर सहनशीलता (Patience) बनाए रखना। सहनशक्ति ही शांति का आधार है।

२. कहना सीखो (Right Speech): अपनी वाणी में मृदुता (Softness),

१. गृहस्थ जीवन व २ वर्षों का कठोर संकल्प : पूज्यश्री ने अध्यात्म यात्रा का वाचन आगे बढ़ाते हुए फरमाया कि वसंतपुर नरेश समरवीर की पुत्री यशोदा के साथ वर्धमान का विवाह हुआ और वे एक पुत्री के पिता बने। माता-पिता के समाधिमरण के पश्चात वर्धमान ने अपने भ्राता नंदिवर्धन व चाचा सुपाश्व से दीक्षा की अनुमति मांगी। नंदिवर्धन के आग्रहानुसार दो वर्षों के राजकीय शोक के दौरान वर्धमान ने धरती पर शयन, पूर्ण ब्रह्मचर्य और सचित्त जल से स्नानादि के त्याग का कठोर संकल्प लेकर साधना का जीवन जिया।

२. वर्षीदान, निष्क्रमण व पंचमुष्टि लोच : दीक्षा में एक वर्ष शेष रहने पर नवलोकान्तिक देवों के प्रतिबोध के पश्चात वर्धमान ने १ वर्ष तक वर्षीदान किया। दीक्षा के दिन देवनिर्मित भव्य शिविका में विराजित होकर ज्ञातखंड उद्यान पहुँचे। अशोक वृक्ष के नीचे समस्त वस्त्र-आभूषण त्याग

विनम्रता और मिठास लाना। यह सिखाता है कि कैसे सोच-समझकर और मधुरता के साथ अपनी बात रखनी चाहिए, ताकि दूसरों के मन में कड़वाहट न आए।

३. रहना सीखो (Balanced Living) : अपनी दैनिक दिनचर्या (Daily Routine) में सादगी, अनुशासन और संतुलन का पालन करना। जब व्यक्ति का रहन-सहन व्यवस्थित होता है, तो उसका मन भी स्थिर और शांत रहता है।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति इन तीन बातों—सहना, कहना और रहना—को अपने जीवन में उतार लेता है, तो उसके भीतर 'मृदुता की ज्योति' जलती है, जिससे जीवन स्वतः ही आनंदित और सार्थक बन जाता है।

5 साधु... या 5 राजा?...

(सामुद्रिक शास्त्री के एक दावे ने उड़ाए होश!...)

आचार्य प्रवर ने आचार्य भिक्षु और उनके चार प्रमुख शिष्यों के व्यक्तित्व की विलक्षणता का वर्णन किया।

१. पांच महापुरुषों का समागम : एक बार आचार्य भिक्षु अपने चार शिष्यों—भारमल जी, खेतसी जी, वेणीराम जी और हेमराज जी—के साथ विहार कर रहे थे। उस समय उनकी भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो सामुद्रिक शास्त्र (शरीर की रेखाओं और लक्षणों का अध्ययन करने वाला

शास्त्र) का ज्ञाता था।

२. विलक्षण प्रतिभा का अवलोकन: उस व्यक्ति ने उन पांचों महापुरुषों के शारीरिक लक्षणों और उनके ओजस्वी व्यक्तित्व को देखकर गहरा आश्चर्य व्यक्त किया। उसने स्पष्ट कहा कि इन पांचों के लक्षणों में ऐसी विलक्षणता है कि यदि ये साधु न बने होते, तो ये निश्चित रूप से किन्हीं पांच राज्यों के अत्यंत प्रभावशाली राजा या चक्रवर्ती सम्राट बनते।

सच्ची क्षमा का 'सीक्रेट'!....

युवाचार्यश्री महावीर कुमार जी ने क्षमा धर्म की व्यापकता और आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला।

१. क्षमा का स्वरूप : युवाचार्य श्री ने स्पष्ट किया कि क्षमा केवल एक ऊपरी शब्द नहीं, बल्कि वीरों का आभूषण (क्षमा वीरस्य भूषणम्) है। यह दुर्बलता नहीं, बल्कि शक्ति संपन्न व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली उच्च कोटि की सहिष्णुता (Tolerance) है।

२. प्रतिकूलता में समता: सच्ची क्षमा वही है जहाँ विपरीत परिस्थितियों, अपमान या कष्ट मिलने पर भी व्यक्ति अपने मन के संतुलन को न खोए और भीतर से शांत रहे। इसे 'सहिष्णुता का

प्रयोग' कहा गया है।

३. आत्म-शुद्धि का महापर्व : संवत्सरी के संदर्भ में युवाचार्य श्री ने समझाया कि यह दिन हमारे अंतःकरण को खंगालने का अवसर है। क्षमा मांगने और देने का अर्थ है अपने मन में वर्षों से जमी कड़वाहट की परतों को हटाना, ताकि अहंकार का विसर्जन हो सके और आत्मा का शुद्ध स्वरूप प्रकट हो सके।

४. व्यावहारिक शिक्षा : युवाचार्य श्री ने जोर दिया कि धर्म का वास्तविक लाभ तभी है जब वह हमारे व्यवहार में उतरे। दूसरों के प्रति द्वेष त्यागना ही वास्तव में स्वयं के प्रति की गई सबसे बड़ी कृपा है, जिससे जीवन का तनाव मुक्त होना संभव है।

छाछ या घी : जानिए श्रीमद राजचंद्र जी की जीवन बदलने वाली 'मूल कुंजी'!...

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने अत्यंत मार्मिक और शिक्षाप्रद प्रसंग के माध्यम से आध्यात्मिक विवेक और प्राथमिकता (Priority) का बोध कराया।

१. प्रसंग का विवरण: साध्वी प्रमुखा जी ने श्रीमद राजचंद्र जी के जीवन से जुड़ी एक घटना का उल्लेख किया। एक बार एक साधक ने श्रीमद राजचंद्र जी के कमजोर होते स्वास्थ्य और शरीर की उपेक्षा को लेकर चिंता व्यक्त की। साधक का मानना था कि उन्हें अपने शरीर का अधिक ध्यान रखना चाहिए।

श्रीमद राजचंद्र जी का दृष्टांत (छाछ और घी): इसके उत्तर में, श्रीमद राजचंद्र जी ने साधक से एक विवेकपूर्ण प्रश्न पूछा: 'कल्पना करो कि तुम्हारे एक हाथ में छाछ है और दूसरे हाथ में घी है। यदि संयोगवश दोनों पात्र एक साथ गिरने वाले हों, तो

तुम सबसे पहले किसकी सुरक्षा करोगे?'

प्रसंग का सार : इस सरल किंतु गहरे प्रश्न के माध्यम से उन्होंने यह समझाया कि जीवन में हमें साध्य और साधन का अंतर समझना चाहिए।

१. घी (आत्मा/साधना) : यह सारभूत है, मूल्यवान है और कल्याणकारी है।

२. छाछ (शरीर/भौतिक सुख) : यह साधन मात्र है।

जिस प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति छाछ को छोड़कर घी की रक्षा करेगा, उसी प्रकार एक साधक को अपने भौतिक शरीर की तुलना में अपनी आत्मा की शुद्धि और साधना को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। यह प्रसंग हमें सिखाता है कि आध्यात्मिक मार्ग पर चलते हुए शरीर का ध्यान रखना आवश्यक है, लेकिन उसे आत्मा की उन्नति से ऊपर नहीं रखना चाहिए।

कर मगसर कृष्णा दशमी के दिन, तीसरे प्रहर में पूर्वाभिमुख होकर पंचमुष्टि लोच किया और चारित्र ग्रहण किया। उन्होंने देव, मनुष्य या तिर्यचकृत उपसर्गों को सहने का संकल्प लिया।

३. भीषण उपसर्ग, १० स्वप्न व

केवलज्ञान : प्रथम दिन कर्माग्राम में ग्वाले द्वारा उपसर्ग हुआ। प्रथम चातुर्मास तापस आश्रम में बिताने के पश्चात ५ अभिग्रह स्वीकार किए। चंडकौशिक सर्प व शूलपाणि यक्ष के उपसर्गों में भी भगवान अडोल रहे। (शेष पेज 19 पर)



कोटि कोटि वंदन



युवाचार्यवर! चयन तुम्हारा, भाग्य खिला है आज हमारा।
महाश्रमण के अंतेवासी, बने संघ के शुभ्र सितारा॥

श्रद्धाप्रणत

स्व. श्री हीरालाल जी मांडोत की पुण्य स्मृति में
सुशीला देवी मांडोत
अरविंद-ममता, हिम्मत-कुसुम, पवन-चंदा
सुनिधि, हर्ष, रौनक, खुशी, रोहन एवं पर्व मांडोत
(चिताम्बा - बैंगलोर)



ध्यान दिवस' पर पूज्यप्रवर के मुखारविंद से हुआ बाल वर्धमान के जन्मोत्सव का ओजस्वी वाचन

देवानंदा से त्रिशला की कुक्षि में पधारे प्रभु वर्धमान : आचार्यश्री महाश्रमण

इंद्रियों को विषयों से हटाकर आत्मा में लगाना ही ब्रह्मचर्य : युवाचार्यश्री

लाडनू।

14 सितम्बर, 2026

जैन धर्म का महापर्व पर्युषण लाडनू की धरा पर स्थित जैन विश्व भारती के सुरम्य व विशाल परिसर में विराजमान जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में सानंद गतिमान हैं। पर्वधिराज पर्युषण का सातवाँ दिवस एवं भगवती संवत्सरी का पूर्ववर्ती दिवस 'ध्यान दिवस' के रूप में अगाध आध्यात्मिक गरिमा के साथ समायोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी मधुलता जी आदि साध्वियों द्वारा ध्यान दिवस पर गीत संगान तथा पूज्य प्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ।

प्रेक्षाध्यान से भीतर की गहराइयों में उतरें
—आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा : गर्भ परिवर्तन से बाल वर्धमान की पाठशाला तक :

१. हरिणै गमेसी देव द्वारा गर्भ-अपहारण : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' का वाचन करते हुए फरमाया कि जब प्रभु महावीर की आत्मा देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि में गर्भस्थ हुई, तो प्रथम देवलोक के इंद्र (शक्रेंद्र) के मन में विचार आया कि परंपरानुसार विशिष्ट पुरुष जैसे तीर्थंकर उच्च कुल में जन्म लेते हैं। उन्होंने हरिणै गमेसी देव को निर्देश दिया, जिन्होंने प्रभु के गर्भ को देवानंदा की कुक्षि से त्रिशला क्षत्रियाणी की कुक्षि में तथा त्रिशला के गर्भ को देवानंदा की कुक्षि में स्थापित कर दिया।

२. त्रिशला के १४ स्वप्न व माता-पिता के प्रति समर्पण : क्षत्रियाणी त्रिशला को १४ महास्वप्न दिखाई दिए। राजा सिद्धार्थ द्वारा स्वप्न शास्त्रज्ञों से फल पूछने पर उन्होंने बताया कि गर्भस्थ बालक विशिष्ट धर्म राज्याधिपति या धर्म चक्रवर्ती बनेगा। एक बार गर्भस्थ शिशु माता के कष्ट के भय से निश्चल हो गया, जिससे माता ने दुःखी होकर बालक की मृत्यु की आशंका व्यक्त की। माता को उदास देख गर्भस्थ प्रभु ने पुनः स्पंदन शुरू किया और उसी समय गर्भ में ही यह संकल्प लिया—'जब तक मेरे माता-पिता संसार में रहेंगे, मैं दीक्षा नहीं लूँगा।' यह माता-पिता के प्रति उनका



शेर और कबूतर की वो मिसाल... जिसने संयम का सारा गणित बदल दिया!

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने आचार्य हेमचंद्राचार्य के एक बहुत ही तर्कपूर्ण और ऐतिहासिक प्रसंग का वर्णन किया, जो ब्रह्मचर्य की साधना और इंद्रिय संयम की शक्ति को स्पष्ट करता है:

१. **तर्क और प्रतिरोध** : एक बार राजदरबार में जब आचार्य हेमचंद्राचार्य ने स्थूलिभद्र मुनि के अद्भुत ब्रह्मचर्य की प्रशंसा की, तो वहाँ उपस्थित कुछ लोगों ने इस बात पर संदेह व्यक्त किया। उनका तर्क था कि जो व्यक्ति छह रसों का भोजन (स्वाद युक्त भोजन) करता है, उसके लिए अपनी इंद्रियों को वश में रखना और वासनाओं पर नियंत्रण पाना असंभव है। उन्होंने विश्वामित्र और पाराशर जैसे ऋषियों का उदाहरण देते हुए कहा कि जो लोग केवल वायु या कंद-मूल खाकर रहते थे, वे भी विचलित हो गए, तो सामान्य भोजन करने वाले के लिए यह कैसे संभव है?

२. **हेमचंद्राचार्य का उत्तर** : आचार्य हेमचंद्राचार्य ने मौन रहने के बजाय एक

बहुत ही सटीक उदाहरण दिया। उन्होंने सिंह (शेर) का उदाहरण देते हुए कहा कि सिंह हाथी और सूअर जैसे प्राणियों का मांस खाता है, लेकिन फिर भी वह प्रकृति के नियम से बंधा हुआ है और वर्ष में केवल एक बार ही वासनाग्रस्त होता है। इसके विपरीत, एक कबूतर जो केवल सामान्य अनाज के दाने खाता है, वह निरंतर भोग-विलास में लगा रहता है।

३. **शिक्षा** : इस दृष्टांत के माध्यम से यह सिद्ध किया गया कि वासना और संयम का संबंध भोजन के प्रकार से नहीं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक विवेक, इंद्रिय निग्रह और मन की शक्ति से है। जिस व्यक्ति ने अपने मन को साध लिया है, वह श्रेष्ठ भोजन करने के बावजूद भी संयम के पथ पर अडिग रह सकता है।

युवाचार्य जी ने अंत में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी को ब्रह्मचर्य का उत्कृष्ट आदर्श बताया, जिनका संयम हर दृष्टि से अनुकरणीय है।

अगाध समर्पण भाव था।

३. **प्रभु का जन्म व पाठशाला में इंद्र का आगमन** : ईसापूर्व ५९९ और विक्रम पूर्व ५४२ में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में भगवान महावीर का जन्म हुआ। महाराज सिद्धार्थ ने विपुल दान दिया, कैदियों को मुक्त किया और बालक का नाम 'वर्धमान' रखा। जब वर्धमान को शिक्षा हेतु पाठशाला भेजा गया, तो कलाचार्य जी आसन पर और बाल वर्धमान नीचे विराजे। यह देखकर इंद्र ने ब्राह्मण रूप धारण कर कलाचार्य से कुछ गूढ़ प्रश्न पूछे, जिनका उत्तर वे न दे सके, परंतु बालक वर्धमान ने तत्क्षण सटीक उत्तर दे दिए। उसी दिन वर्धमान की पाठशाला से छुट्टी हो गई। बड़े होने पर माता-पिता के समक्ष उनके विवाह का चिंतन शुरू हुआ। ध्यान साधना की पावन प्रेरणा:

भीतर की गहराइयों में उतरने का माध्यम: ध्यान दिवस पर पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया कि ध्यान साधना बहुत अच्छी बात है और तेरापंथ में प्रेक्षाध्यान के माध्यम से ध्यान का प्रयोग होता है। ध्यान साधना का एक प्रमुख अंग है। मनुष्य अपने भीतर की गहराइयों में उतर सके, इसके लिए ध्यान का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

युवाचार्य श्री, साध्वीप्रमुखा जी, साध्वीवर्या जी का प्रेरक विचार-पाथेय:

१. **ब्रह्मचर्य धर्म का व्यापक रूप** : युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने दस धर्मों के अंतर्गत 'ब्रह्मचर्य धर्म' की व्याख्या करते हुए कहा कि ब्रह्मचर्य व्यापक अर्थ रखने वाला धर्म है। सामान्यतः इसे इंद्रिय व मन के निग्रह और मैथुन व्रत के रूप में देखा जाता है, परंतु अपनी इंद्रियों की दिशा को विषयों से हटाकर आत्मा की ओर ले जाना, भोग से योग तथा चंचलता से चित्त की स्थिरता की ओर ले जाना भी ब्रह्मचर्य है। साधक को इसके बाधक तत्वों से बचना चाहिए तथा गृहस्थों को भी इस महान व्रत की दिशा में यथासंभव प्रयास करना चाहिए।

२. **ध्यान योग व प्रेक्षाध्यान की महत्ता** : साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने कहा कि सबसे श्रेष्ठ प्रकाश आत्मा का होता है और उसे हम ध्यान के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्राचीन आचार्यों ने लिखा है कि ध्यान के समान दूसरा कोई तीर्थ नहीं है और न ही कोई तप। मन को एकाग्र करना और योगों का निरोध करना ही ध्यान है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने 'प्रेक्षाध्यान' पद्धति को विकसित किया,

सूर्य या चंद्रमा नहीं... जानिए ब्रह्मांड का सबसे चमकीला प्रकाश!..

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने एक प्रसंग साझा किया।

गुरु का प्रश्न : गुरु अपने शिष्यों को वाचना (शिक्षण) दे रहे थे। शिक्षण के दौरान उन्होंने शिष्यों से प्रश्न किया, 'सबसे अच्छा प्रकाश किसका होता है?'

शिष्यों के उत्तर : शिष्यों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार उत्तर दिए। किसी ने कहा सूर्य का प्रकाश सबसे अच्छा है, तो किसी ने चंद्रमा, तारे, दीपक, मोमबत्ती, लालटेन या बल्ब के प्रकाश को सर्वश्रेष्ठ बताया।

गुरु की प्रतिक्रिया : गुरु अपने किसी भी शिष्य के उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने शिष्यों को यह एहसास दिलाया कि ये सभी

बाहरी साधन हैं।

सत्य का बोध : जब शिष्यों ने गुरु से ही सही उत्तर जानने की प्रार्थना की, तो गुरु ने स्पष्ट किया कि आत्मा का प्रकाश ही सबसे श्रेष्ठ और वास्तविक प्रकाश है।

संदेश : इस प्रसंग के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि बाहरी दुनिया को देखने के लिए बाहरी प्रकाश की आवश्यकता होती है, लेकिन आत्म-साक्षात्कार और सत्य को जानने के लिए भीतरी प्रकाश (ध्यान) आवश्यक है। साध्वी जी ने इसी संदर्भ में यह समझाया कि ध्यान के माध्यम से ही हम अपनी आत्मा के उस सर्वश्रेष्ठ प्रकाश को उपलब्ध कर सकते हैं।

एक भी भूल नहीं... क्या सच में धरती पर उतरी 'सरस्वती'?...

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने 'भगवती जोड़' संदर्भ जयाचार्यजी के योगदान को रेखांकित किया।

१. **आचार्य श्री जयाचार्य जी का योगदान** : जयाचार्य प्रभु ने मूल भगवती सूत्र, उसकी वृत्ति और अन्य ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। वे उन्हें ध्यानपूर्वक देखते, आत्मसात करते और फिर एक-एक पद्य की रचना करते थे।

२. **साध्वी प्रमुखा श्री गुलाबा सती की भूमिका** : जयाचार्य द्वारा रचित पद्यों को साध्वी प्रमुखा श्री गुलाबा सती जी ने लिपिबद्ध (लिखा) किया। उनकी स्मरण शक्ति इतनी अद्भुत थी कि वे बिना किसी त्रुटि या दोबारा पूछे, जैसा जयाचार्य फरमाते, वैसा ही ज्यों का त्यों लिख लेती थीं। उन्हें 'सरस्वती की प्रतिमा' माना गया है।

३. **सरस्वती का स्वरूप** : जयाचार्यजी ने स्वयं उनके संदर्भ में कहा था कि वे सरस्वती का साक्षात् रूप थीं। आचार्यश्री तुलसी ने भी उनके सम्मान में लिखा है—

सरस्वती तो रूप अनुपम,

मिले न धरती आभा...

सुमरो सती गुलाबा'...

वे इस ग्रंथ की प्रथम लिपिकार बनीं और उन्होंने ही जयाचार्य के मुखारविंद से निकले इन ज्ञानपूर्ण पदों को सुरक्षित किया।

४. **ग्रंथ की विशेषता** : 'भगवती जोड़' की रचना विभिन्न राग और रागिनियों में की गई है, जिसमें 501 गीतिकाएं शामिल हैं। यह ग्रंथ मूल सूत्र और उसकी वृत्ति का एक अत्यंत सरल और सुबोध राजस्थानी भाषा में अनुवाद माना जाता है।

1.8 करोड़ मौतें... और स्वर्ग सिर्फ एक को...?

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने भगवती सूत्र (सातवें शतक, नौवें उद्देशक) में वर्णित दो अत्यंत विनाशकारी युद्धों का उल्लेख किया।

१. **युद्ध का संदर्भ** : ये युद्ध महाराजा चेतक और उनके दोहते (नाती) राजा कुणिक के बीच हुए थे। इन्हें महाशिला कंटक संग्राम और रथ मूसल संग्राम के नाम से जाना जाता है।

२. **जनहानि** : इन भीषण युद्धों में लगभग 1 करोड़ 80 लाख मनुष्य मारे गए थे।

३. **गौतम स्वामी का प्रश्न** : इन मृत आत्माओं की दुर्गति या सद्गति के विषय में गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से जिज्ञासा की थी।

४. **भगवान महावीर का उत्तर** : भगवान ने बताया कि इन 1 करोड़ 80 लाख लोगों में से—

—लगभग 10,000 मनुष्य मरकर एक मछली के गर्भ में उत्पन्न हुए।

—केवल एक मनुष्य देवलोक में गया (जो नाग नत्रिक वरुण था)।

—केवल एक मनुष्य पुनः मनुष्य योनि में आया (जो वरुण का बाल सखा था)।

—बाकी सभी शेष मनुष्य या तो नरक गए या तीर्थच (पशु) योनि में उत्पन्न हुए।

५. **निष्कर्ष** : यह प्रसंग यह सिखाता है कि युद्ध और हिंसा का परिणाम कितना भयानक होता है। वरुण के देवलोक जाने का कारण उसका युद्ध क्षेत्र से बाहर निकलकर समाधि मरण और अनशन करना था, जबकि उसका मित्र भी उसी के पीछे गया और उन्हीं शुभ भावों के कारण पुनः मनुष्य बन पाया। यह जीवन की क्षणभंगुरता और कर्मों की गंभीरता को रेखांकित करता है।

जिसका अर्थ है—गहराई में जाकर देखना, राग-द्वेष मुक्त होकर देखना। ध्यान द्वारा हम उस सत्य को प्राप्त करें जिससे वीतरागता तक पहुँचा जा सके।

३. **भगवती अंग व जयाचार्य कृत 'भगवती जोड़'** : साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने विशालतम आगम 'भगवती' और 'भगवती जोड़' पर वक्तव्य देते हुए कहा कि भगवती द्वादशांगी का

५वाँ अंग आगम है, जो प्रश्नोत्तर शैली में रचा गया तत्त्वज्ञान का विशालतम ग्रंथ है। इसमें अनेक ऐतिहासिक घटना प्रसंग प्राप्त होते हैं। जयाचार्य प्रवर ने इस सूत्र पर राजस्थानी भाषा में 'भगवती जोड़' की रचना की। इतने विशाल ग्रंथ की रचना जयाचार्य जी ने मात्र ५ वर्षों में पूरी कर दी, जो उनकी निर्मल मेधा और प्रतिभा संपन्नता का अनुपम प्रमाण है।



'जप दिवस' पर पूज्यश्री ने फरमाया राजर्षि नंदन की घोर तपस्या का अलौकिक प्रसंग

11 लाख 60 हजार मासखमण का महातपः राजर्षि नंदन ने बांधा तीर्थकर नाम-गोत्र : आचार्यश्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने 'तप-त्याग धर्म' पर दी कर्म निर्जरा की पावन प्रेरणा

लाडनूँ।

13 सितम्बर, 2026

जन-जन को आध्यात्मिक अमृत का अभिसिंचन प्रदान करने वाले जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, अखंड परित्राजक, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में पर्वधिराज पर्युषण का छठा दिवस 'जप दिवस' के रूप में अगाध आध्यात्मिक गरिमा के साथ आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी वृंद द्वारा 'प्रज्ञा गीत' संगान, मुनि धैर्यकुमार जी द्वारा २२वें तीर्थकर भगवान अरिष्टनेमि पर सुंदर प्रस्तुति, साध्वी स्तुतिप्रभा जी के सुमधुर गीत एवं पूज्य प्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ।

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा: नंदन राजर्षि के ११.६० लाख मासखमण और देवानंदा के १४ स्वप्न

१. राजर्षि नंदन की घोर तपस्या व तीर्थकर नाम-गोत्र बंध : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के २५वें भव का वाचन करते हुए फरमाया कि प्रभु की आत्मा ७वें देवलोक का आयुष्य पूर्ण कर छत्रा नगरी के राजा जितशत्रु व महारानी भद्रा के पुत्र 'नंदन' के रूप में उत्पन्न हुई। राजा जितशत्रु नंदन को राज्य सौंपकर स्वयं साधु बन गए। नंदन ने कुछ समय राज्य करने के बाद पेरिलाचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। अपने १ लाख वर्ष के दीर्घ संयम पर्याय में उन्होंने आगमों का अध्ययन किया और तपोयोग में लीन हो गए। उन्होंने मासखमण का घोर तप प्रारंभ किया और पूरे संयम काल में कुल ११ लाख ६० हजार मासखमण किए। इस अनुपम तपस्या और अर्हत् भक्ति के प्रभाव से उन्होंने 'तीर्थकर नाम-गोत्र' का उपार्जन किया।

२. २६वाँ भव, २७वाँ भव व १४ महास्वप्न : दो मास के अनशन के बाद आयुष्य पूर्ण कर आत्मा प्राणत (१०वें) देवलोक में उत्पन्न हुई। २६वें भव का २० सागरोपम आयुष्य पूर्ण कर २७वें भव में प्रभु की आत्मा ब्राह्मण कुंड नगर के ऋषभदत्त ब्राह्मण की पत्नी देवानंदा की कुक्षि में प्रविष्ट हुई। तीन ज्ञान (मति, श्रुत,



1 लाख नवकार जप... और मोक्ष का द्वार!

साध्वीप्रमुखा श्री ने प्राचीन आचार्यों द्वारा वर्णित नमस्कार महामंत्र के महत्व और उसके फल का क्रमबद्ध वर्णन किया।

- दुखों का हरण :** नमस्कार महामंत्र हमारे सभी दुखों का नाश करने वाला है।
- सुखों की प्राप्ति :** यह हमारे जीवन में सुखों को लाने वाला है।
- यश की वृद्धि :** इससे व्यक्ति के यश और कीर्ति की उत्पत्ति होती है।
- भवसागर से मुक्ति :** यह संसार रुपी सागर का शोषण कर जीव को मुक्ति के मार्ग पर ले जाता है।
- मूलमंत्र :** यह इस लोक और परलोक के समस्त सुखों को पाने का मूल मंत्र है।

एक लाख नवकार जप का महत्व:

साध्वीप्रमुखा श्री ने प्रवचन में उल्लेख किया है कि जो साधक विधिपूर्वक, श्रद्धा पूर्वक नमस्कार महामंत्र का एक लाख जप पूरा कर लेता है, उसके लिए प्राचीन आचार्य ने यह फल बताया है:

- वह व्यक्ति तीसरे भव में सिद्ध (मोक्ष) हो सकता है।
 - यदि तीसरे भव में सिद्धि न हो, तो सातवें-आठवें भव तक वह अवश्य ही मोक्ष प्राप्त कर लेता है।
- साध्वी श्री विश्रुतविभाजी ने स्पष्ट किया कि जैसे स्वाध्याय के समान कोई तप नहीं है, वैसे ही नमस्कार महामंत्र के समान कोई दूसरा मंत्र न अतीत में हुआ है, न है और न ही भविष्य में होगा।

भी श्वास के साथ जप कर सकते हैं। अनुकूलतानुसार श्वास के साथ जप करने से भावों और परिणामों की विशुद्धि बनी रहती है।

युवाचार्य श्री, साध्वी प्रमुखा श्री, साध्वी वर्या जी का विचार-पाथेय:

१. तप-त्याग धर्म और कर्म निर्जरा

: युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने दस धर्मों के अंतर्गत 'तप-त्याग धर्म' की व्याख्या करते हुए कहा कि तप से आत्मा को तपाकर कर्म ग्रंथियों को तोड़ा और शुद्ध किया जा सकता है। तप के १२ प्रकारों में ६ बाह्य और ६ आभ्यंतर हैं। उपवास के अलावा भी तप के ऐसे कई भेद हैं जिनकी साधना से कर्म ग्रंथियाँ समूल नष्ट हो जाती हैं। तप के साथ त्याग को अपनाकर ही जीवन नैया को पार लगाया जा सकता है।

२. मंत्र विद्या व जप योग :

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि भारतीय महर्षियों द्वारा निर्दिष्ट सिद्धि व शुद्धि के उपायों में मंत्र विद्या या जप योग प्रमुख है। जप चंचल मन को एकाग्र करने व भीतरी शक्तियों को जागृत करने का सशक्त व सुगम माध्यम है। भावना से भावित शब्द की आवृत्ति ही जप है। मंत्र जप में चार बातें—उच्चारण की शुद्धता, अर्थ बोध, लयबद्धता और जप करने की

'चांडाल कुल में जन्म, पर देव भी हुए नतमस्तक...

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने हरिकेश बल मुनि का अत्यंत प्रेरक और रोचक प्रसंग सुनाया।

- पृष्ठभूमि :** हरिकेश बल मुनि का जन्म एक अत्यंत निम्न कुल (चांडाल) में हुआ था, लेकिन अपने कठोर तप और साधना के बल पर वे महान मुनि बने।
- घटना :** एक बार कुछ ब्राह्मण कुमारों ने उनके कुल को लेकर उनका अपमान किया और अपशब्द कहे। इस पर मुनि ने कोई प्रतिशोध नहीं लिया, लेकिन उनके तप का प्रभाव इतना शक्तिशाली था कि उनकी सेवा में स्वयं यक्ष रहने लग गए।

- परिणाम :** जब यक्ष ने उन ब्राह्मण कुमारों को उनकी गलती का अहसास कराया और उन्हें प्रताड़ित किया, तब उन ब्राह्मणों को मुनि की महत्ता समझ में आई। वे सभी मुनि के चरणों में नतमस्तक हो गए।
- संदेश :** युवाचार्य श्री ने इस प्रसंग के माध्यम से यह संदेश दिया कि तप ही वह पारस पत्थर है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व को सोना बना देता है। तपस्या के सामने जाति, कुल या जन्म का कोई महत्व नहीं रह जाता। जो व्यक्ति कठोर तप करता है, उसका व्यक्तित्व स्वतः ही उज्ज्वल और प्रभावशाली हो जाता है, जिसका सम्मान देवता भी करते हैं।

कृष्ण की बाँसुरी पर सवाल... और मुसोलिनी का मौन!...

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने ध्वनि और लयबद्धता (Rhythm) की शक्ति को रेखांकित करते हुए एक रोचक ऐतिहासिक घटना का उल्लेख किया।

- संगीतकार ओंकारनाथ और मुसोलिनी की भेंट :** भारतीय शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ ओंकारनाथ जब इटली गए, तो तत्कालीन राष्ट्रपति मुसोलिनी ने उन्हें भोजन पर आमंत्रित किया। चर्चा के दौरान मुसोलिनी ने संगीत से जुड़ी कुछ प्रचलित बातों पर संदेह व्यक्त किया। उदाहरण के तौर पर, उन्होंने कहा कि भारत में ऐसा कहा जाता है कि भगवान कृष्ण की बाँसुरी की धुन सुनकर मयूर नाचने लगते हैं और हरणियों का झुंड एकत्रित हो जाता है, जो

- उन्हें अविश्वसनीय लगता था।
- साक्षात् प्रयोग :** ओंकारनाथ जी ने इस बात को सिद्ध करने के लिए मुसोलिनी से एक चम्मच और एक सिरेमिक का प्याला मांगा। उन्होंने चम्मच से प्याले पर इतनी लयबद्ध और संतुलित ध्वनि पैदा की कि मुसोलिनी उस संगीत में पूरी तरह खो गए। वे मंत्रमुग्ध हो गए और उन्हें समय का भान ही नहीं रहा।
 - प्रेरणा :** इस प्रसंग का सार यह है कि ध्वनि के कंपन में अद्भुत शक्ति होती है। यदि जप या मंत्र उच्चारण को 'लयबद्ध' तरीके से किया जाए, तो वह न केवल बाहरी वातावरण को प्रभावित करता है, बल्कि साधक के भीतर भी शांति और शक्ति का संचार करता है।

"पूरा नगर झुका, पर माँ ने क्यों कहा— 'ज्ञान अभी अधूरा है'?"

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने आचार्य आर्य रक्षित के जीवन का प्रसंग किया प्रस्तुत—

- विद्वत्पूर्ण सफर :** आर्य रक्षित का जन्म एक शिक्षित ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उच्च शिक्षा प्राप्त करने की तीव्र उत्कंठा के कारण उन्होंने अपने पिता की आज्ञा लेकर पाटलिपुत्र का रुख किया, जहाँ उन्होंने वेद और वेदगानों का गहन अध्ययन किया। जब वे अपना अध्ययन पूर्ण कर वापस दशपुर लौटे, तो नगरवासियों और राजा द्वारा उनका भव्य सम्मान किया गया।
- माँ की सीख :** अपनी सफलता और ज्ञान के गर्व से भरे आर्य रक्षित जब अपनी माँ के पास पहुँचे, तो उनकी माँ ने केवल लौकिक विद्याओं पर प्रसन्न होने के बजाय उन्हें सत्य का आईना दिखाया। माँ ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सांसारिक और लौकिक

विद्याएँ सीख लेने के बावजूद उनका ज्ञान अभी अधूरा है।

- आगम का वास्तविक महत्व :** माँ ने उन्हें मार्गदर्शित करते हुए समझाया कि जब तक वे आत्म-कल्याणकारी जिन-उपदेशों (आगमों) का अध्ययन नहीं कर लेते, तब तक उनका यह ज्ञान केवल एक भार मात्र है।
- आगम की परिभाषा :** आत्म-विद्या और आत्म-कल्याण का बोध कराने वाले ग्रंथ ही 'आगम' कहलाते हैं। यह भगवान महावीर के पावन उपदेशों का प्रामाणिक संकलन है।
- मुख्य संदेश (प्रेरणा) :** यह प्रसंग हमें सिखाता है कि सांसारिक और किताबी शिक्षा चाहे कितनी भी उच्च क्यों न हो, यदि उसमें आत्म-ज्ञान और आध्यात्मिक विवेक का समावेश नहीं है, तो वह अधूरी है। सच्चा ज्ञान वही है जो व्यक्ति को स्वयं का बोध कराए और आत्म-कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ाए।

सही विधि अत्यंत आवश्यक हैं। जप का मूल प्रयोजन आत्माराधना होना चाहिए।

३. आचारांग सूत्र व आचार निष्ठा : साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने जैनागमों में मान्य ३२ आगमों में प्रथम अंग 'आचारांग सूत्र' पर चर्चा करते हुए कहा कि आचारांग

आचार से संबंधित ग्रंथ है तथा भगवान महावीर की वाणी और विचारों का प्रतिनिधि ग्रंथ है। आचार समाज और संस्कृति का प्राण है। जिसके जीवन में बहुश्रुतता तो है लेकिन आचार नहीं है, उसका जीवन और ज्ञान केवल भार मात्र बन जाता है।

जब विज्ञान ने अध्यात्म की धरती पर कदम रखा

विज्ञान और अध्यात्म के ऐतिहासिक मिलन का साक्षी बना जैन विश्व भारती

लाडू

भारत की पहचान केवल उसकी वैज्ञानिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसकी समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा से भी है। एक ओर भारत अंतरिक्ष के क्षेत्र में नई ऊंचाइयाँ छू रहा है, तो दूसरी ओर उसकी आध्यात्मिक विरासत मानव जीवन को भीतर से बेहतर बनाने का मार्ग दिखाती है। जब विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं, तो विकास का एक नया रास्ता सामने आता है।

राजस्थान के छोटे से कस्बे लाडू में 22 और 23 अगस्त 2026 को कुछ ऐसा ही प्रेरणादायी दृश्य देखने को मिला। अध्यात्म से सराबोर जैन विश्व भारती प्रांगण में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के पूर्व अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. ए.एस. किरण कुमार का आगमन हुआ। दो दिनों का यह प्रवास केवल एक वैज्ञानिक का किसी आध्यात्मिक संस्थान में आना नहीं था, बल्कि विज्ञान और अध्यात्म के बीच संवाद का एक महत्वपूर्ण अवसर था।

डॉ. ए.एस. किरण कुमार देश के प्रमुख अंतरिक्ष वैज्ञानिकों में शामिल हैं। वे वर्ष 2015 से 2018 तक ISRO के अध्यक्ष रहे। इसके साथ ही वे स्पेस कमीशन के अध्यक्ष और डिपार्टमेंट ऑफ स्पेस के सचिव भी रह चुके हैं। चंद्रयान-1, मंगलयान, चंद्रयान-2 और चंद्रयान-3 जैसे भारत के महत्वपूर्ण अंतरिक्ष अभियानों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में वे जैन विश्व भारती के Spiritual Technology Research Centre (STRC) के एडवाइजरी बोर्ड के चेयरपर्सन भी हैं।

डॉ. ए.एस. किरण कुमार की विशेष पहचान केवल एक श्रेष्ठ वैज्ञानिक के रूप में ही नहीं है। वे अध्यात्म में भी गहरी रुचि रखने वाले व्यक्तित्व हैं। विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने अंतरिक्ष की अनंत संभावनाओं को समझने और भारत को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, वहीं आध्यात्मिक चिंतन और ध्यान के प्रति उनकी रुचि उनके व्यक्तित्व को एक अलग आयाम देती है। यही कारण है कि जैन विश्व भारती और STRC से उनका जुड़ाव विज्ञान और अध्यात्म के बीच सेतु का कार्य करता है।

गुरुदेव के दर्शन से हुई यात्रा की शुरुआत : 22 अगस्त की सुबह लाडू पहुंचने के बाद डॉ. किरण कुमार सर्वप्रथम शांतिदूत, अध्यात्म के सजग प्रहरी आचार्य महाश्रमण जी के श्रीचरणों में पहुंचे। उन्होंने गुरुदेव के दर्शन कर,



आशीर्वाद प्राप्त किया और मंगलपाठ का श्रवण कर अध्यात्म अनुसंधान की यात्रा प्रारम्भ की। एक वैज्ञानिक के रूप में अंतरिक्ष की अनंत ऊंचाइयों को समझने वाले डॉ. किरण कुमार का आध्यात्मिक ऊर्जा के केंद्र में पहुंचना अपने आप में एक विशेष दृश्य था।

इसके बाद उन्होंने महाप्रज्ञ प्रोग्रेसिव स्कूल में 'आगम से अंतरिक्ष तक' विषयक कार्यक्रम में भाग लिया। यह विषय अपने आप में विज्ञान और अध्यात्म के सुंदर संबंध को व्यक्त करता है। जैन विश्व भारती द्वारा संचालित जयपुर एवं टमकरि के विद्यालयों से भी विज्ञान के विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में युवाचार्य श्री महावीर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए जीवन में अध्यात्म के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने Head, Heart और Hands के समुचित उपयोग से जीवन को विकासोन्मुख बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

उन्होंने भारतीय जैन दर्शन की आधुनिक विज्ञान के संदर्भ में प्रासंगिकता पर भी चर्चा की। आचार्य महाप्रज्ञ जी और भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के बीच हुए संवाद और उससे मिली प्रेरणा का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि विज्ञान का उद्देश्य केवल शक्ति प्राप्त करना नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण की दिशा में आगे बढ़ना भी होना चाहिए।

बच्चों से संवाद और अंतरिक्ष की यात्रा : डॉ. किरण कुमार ने विद्यार्थियों को भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने समझाया कि भारत ने किस प्रकार अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत की और आज ISRO देश के लिए संचार, मौसम, शिक्षा, कृषि, आपदा प्रबंधन और अनेक क्षेत्रों में सेवाएं उपलब्ध करा रहा है। विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक उनसे प्रश्न पूछे। स्कूल के बच्चों ने विज्ञान से जुड़े मॉडल और प्रस्तुतियाँ तैयार की थीं। डॉ.

“
विज्ञान हमें बाहर की अनंत दुनिया से जोड़ता है, और अध्यात्म हमें भीतर की अनंत यात्रा पर ले जाता है।

किरण कुमार तथा युवाचार्य श्री ने इन मॉडलों का अवलोकन किया जिससे बच्चों का उत्साह शतगुणित हो गया।

अध्यात्म और आधुनिक शोध पर मंथन : इसके बाद डॉ. किरण कुमार ने सुधर्मा सभा में आचार्य महाश्रमण जी के प्रवचन का लाभ लिया। तत्पश्चात STRC की बैठक में उन्होंने भाग लिया। बैठक में इस बात पर चर्चा हुई कि आधुनिक शोध के क्षेत्र में अध्यात्म की क्या भूमिका हो सकती है और जैन दर्शन के आध्यात्मिक चिंतन को विश्व के सामने किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

मध्याह्न में आचार्य महाश्रमण जी की संनिधि में डॉ. किरण कुमार और STRC की टीम का विशेष संवाद भी हुआ। उन्होंने आचार्यप्रवर के समक्ष अपने प्रश्न भी रखे और आचार्यप्रवर उनके उत्तर प्रदान कर उन्हें कृतार्थ किया।

प्रेक्षाध्यान से लेकर नेशनल स्पेस डे तक : 23 अगस्त की सुबह डॉ. किरण कुमार ने मुनि धर्मेण कुमार जी स्वामी की सन्निधि में प्रेक्षाध्यान का अभ्यास किया। इसके बाद उन्होंने STRC की बैठक में भाग लिया और प्रवचन में उपस्थित रहे।

23 अगस्त का दिन उनके लिए इसलिए भी विशेष था क्योंकि इसी दिन चंद्रयान-3 की ऐतिहासिक लैंडिंग के तीन वर्ष पूरे हुए। भारत इस उपलब्धि की स्मृति में नेशनल स्पेस डे मनाता है। जिस वैज्ञानिक ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उनका यह विशेष दिन आचार्य महाश्रमण जी की सन्निधि में मनाया जाना अपने आप में यादगार प्रसंग बन गया।

इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण जी

ने उन्हें शुभाशीष प्रदान किया। डॉ. किरण कुमार ने भी अपने वक्तव्य में विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विज्ञान हमें बाहरी संसार को समझने की शक्ति देता है, जबकि अध्यात्म हमें अपने भीतर को समझने की दिशा दिखाता है। दोनों का संतुलित विकास मानवता के लिए अधिक उपयोगी हो सकता है।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के पश्चात् डॉ. किरण कुमार जी ने जैन विश्व भारती परिसर का अवलोकन किया तथा साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी, साध्वी वर्याश्री संबुद्धयशाजी आदि साध्वियों की सेवा की। उन्होंने उत्कट भावा से चारीत्रात्माओं का सुपात्र दान भी दिया।

संतों के बीच अंतरिक्ष विज्ञान की चर्चा : प्रवास के दौरान मुनिवृंद के लिए एक विशेष सत्र आयोजित किया गया, जिसका विषय था- 'Working of ISRO: From Idea to Execution'। इसमें डॉ. किरण कुमार ने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की कार्यप्रणाली, भविष्य की योजनाओं और भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में आगे के लक्ष्यों के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने मानव को अंतरिक्ष में भेजने की योजनाओं, चंद्रमा पर मानव मिशन और भारत के अपने स्पेस स्टेशन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों सहित अनेक विषयों पर जानकारी दी। संतों ने भी उत्सुकता से प्रश्न पूछे और विज्ञान के इन विषयों को समझने का प्रयास किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युयुक्त परिषद् की ओर से एक संवादात्मक Podcast भी आयोजित किया गया, जो युवा पीढ़ी का पथप्रदर्शन करने वाला सिद्ध हो सकता है। का संयोजन श्री श्रेयांश कोठारी ने किया।

गुरुदेव की सेवा से हुए प्रभावित : डॉ. किरण कुमार जी के दो दिवसीय लाडू प्रवास का एक अत्यंत भावपूर्ण पक्ष यह भी रहा कि उन्होंने आचार्य महाश्रमण जी की संनिधि में केवल वैज्ञानिक विषयों पर

संवाद ही नहीं किया, बल्कि आध्यात्मिक वातावरण को भी निकट से अनुभव किया। उन्होंने ध्यान के प्रयोग किए, संतों के दर्शन किए और अनेक संतों की सेवा का लाभ लिया।

गुरुदेव की सरलता, अनुशासन, करुणा और आध्यात्मिक व्यक्तित्व से डॉ. किरण कुमार जी विशेष रूप से प्रभावित हुए। विज्ञान के क्षेत्र में लंबे समय तक देश की सेवा करने वाले इस वरिष्ठ वैज्ञानिक का आध्यात्मिक साधना और संतों के प्रति विनयपूर्ण भाव से जुड़ना इस यात्रा की विशेष उपलब्धि रही।

यह अनुभव इस बात को भी दर्शाता है कि आध्यात्मिकता किसी एक वर्ग या क्षेत्र तक सीमित नहीं है। विज्ञान के क्षेत्र में विश्वस्तरीय उपलब्धियाँ हासिल करने वाला व्यक्ति भी अध्यात्म से प्रेरणा और आंतरिक ऊर्जा प्राप्त कर सकता है।

एक यात्रा, अनेक संदेश : डॉ. किरण कुमार का दो दिवसीय लाडू प्रवास केवल कार्यक्रमों की श्रृंखला नहीं था। इसमें दर्शन था, संवाद था, ध्यान था, शोध था और सीखने-सिखाने की भावना थी। उन्होंने मुनि दिनेशकुमार जी, मुनि धर्मेण कुमार जी, मुनि कुमारश्रमण जी, मुनि योगेशकुमार जी, मुनि कीर्तिकुमार जी, मुनि मननकुमार जी, मुनि अक्षयप्रकाश जी, मुनि नयकुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी, मुनि अहम कुमार जी, मुनि आर्षकुमार जी, मुनि गौरवकुमार जी आदि। अनेक संतों के दर्शन और सेवा का लाभ लिया तथा साध्वीवृंद से भी आध्यात्मिक संवाद किया।

इस पूरे प्रसंग का सबसे बड़ा संदेश यही है कि विज्ञान और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि मानव कल्याण के दो महत्वपूर्ण मार्ग हैं। विज्ञान हमें बाहरी संसार को समझने की शक्ति देता है और अध्यात्म हमें अपने भीतर की दुनिया को समझने की दिशा दिखाता है।

लाडू में हुआ यह मिलन आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा बन सकता है। आज के युवाओं को विज्ञान में आगे बढ़ना है, नई खोज करनी है, अंतरिक्ष के रहस्यों को समझना है; लेकिन साथ ही उन्हें संवेदनशील, अनुशासित और मानवीय भी बनना है। आगम से अंतरिक्ष तक की यह यात्रा वास्तव में बाहर की अनंत दुनिया से भीतर की अनंत यात्रा को जोड़ने वाली यात्रा है। लाडू में विज्ञान और अध्यात्म के इस संगम ने यही संदेश दिया कि जब ज्ञान के साथ विवेक, तकनीक के साथ नैतिकता और प्रगति के साथ मानवीयता जुड़ती है, तभी विकास वास्तव में सार्थक बनता है।

'आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर' शाखा का भव्य शुभारंभ

बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सेवा आयामों को नई गति देते हुए तेरापंथ युवक परिषद (तेयुप) राजराजेश्वरी नगर द्वारा 'आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर' (ATDC) की तीसरी शाखा का शुभारंभ उत्तरहल्ली में भव्य एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ।

विदित रहे कि तेयुप राजराजेश्वरी नगर के कुशल निर्देशन में पहले से ही राजराजेश्वरी नगर और केंगरी में दो शाखाएं सफलतापूर्वक संचालित हो रही हैं, और अब उत्तरहल्ली शाखा के जुड़ने से जनसेवा का यह दायरा और अधिक व्यापक हो गया है। उद्घाटन समारोह का विधिवत आयोजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक दिनेश मरोठी, आलोक छाजेड़ एवं कमलेश चोपड़ा के मंत्रोच्चार और विधि-विधान के साथ संपन्न हुआ। समारोह के प्रारंभ में तेयुप अध्यक्ष सरल



पटावरी ने पधारे हुए सभी अतिथियों, प्रायोजकों और अभातेयूप पदाधिकारियों का स्वागत किया। उद्घाटनकर्ता सुनील बाबोसा सुराणा ने परिषद की इस पहल को सराहते हुए वर्तमान समय में स्वास्थ्य सेवाओं की उपयोगिता को देखते हुए 'ATMS मेडिकल' की दिशा में कदम बढ़ाने का उपयोगी सुझाव दिया। इसके अतिरिक्त, पूर्व में केंद्र की नींव रखने

वाले संस्थापक अध्यक्ष राजेश भंसाली एवं बिकास छाजेड़ का विशेष सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में अभातेयूप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अनन्त बागरेचा एवं अभिनंदन नाहटा, संगठन मंत्री रोहित कोठारी, ATDC राष्ट्रीय प्रभारी पीयूष लुनिया, आरआर नगर शाखा प्रभारी विनोद मुथा विशेष



रूप से उपस्थित रहे। अभातेमम से सहमंत्री मधु कटारिया, ATDC सह प्रभारी अमित दक, आलोक छाजेड़, कमलेश चोपड़ा, विकास बांठिया एवं प्रसन्न धोका ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोट ने तेयुप अध्यक्ष सरल पटावरी के विनम्र नेतृत्व की सराहना करते हुए निरंतर नए आयाम स्थापित करने की प्रेरणा

दी। वहीं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने कहा कि तेयुप राजराजेश्वरी नगर अपनी सक्रियता और सेवा भावना के बल पर संगठन की सर्वश्रेष्ठ परिषदों में अपना स्थान बना रही है। कार्यक्रम का संचालन शाखा मंत्री संदीप बैद ने कुशलतापूर्वक किया तथा ATDC संयोजक पंकज बैद ने ATDC टीम व आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आभातेयूप राष्ट्रीय अध्यक्ष का ATDC निरीक्षण



विजयनगर।

तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा संचालित 7 आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में से एक सेंटर RPC LAYOUT का निरीक्षण आभातेयूप अध्यक्ष पवन मांडोट संगठनमंत्री, रोहित कोठारी ATDC प्रभारी पीयूष लूणिया एवं सह प्रभारी अमित दक द्वारा किया गया। अभातेयूप टीम से और पूर्व अध्यक्ष दिनेश मरोठी, राकेश पोखरणा की उपस्थिति रही। इस दौरान सेंटर

की व्यवस्थाओं, स्वच्छता, मशीनों की कार्यप्रणाली एवं मरीजों को उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का जायजा लिया गया। निरीक्षण का उद्देश्य सेवाओं की गुणवत्ता को और बेहतर बनाना तथा मरीजों को सुरक्षित, सटीक एवं संतोषजनक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। ATDC डॉक्टर और सेवा दे रहे टीम सदस्यों का जैन पट्ट द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर परिषद् अध्यक्ष पवन बैद, मंत्री कमलेश दक आदिकी उपस्थिति रही।

जीवन का वरदान है तपस्या

दक्षिण मुंबई।

महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउण्डेशन एवं तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई के निर्देशन, शासन श्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासन श्री साध्वी मंजूरेखा जी आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में तपस्वी बहिन मनोहर देवी डागलिया के कंठीतप की अनुमोदना में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए शासन श्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा—भगवान् महावीर की वाणी है कि

प्रज्ञा सम्पन्न मेधावी व्यक्ति ही तपस्या कर सकता है। तपस्या जीवन का वरदान है। तपस्वी तपस्या से इन्द्रिय तथा मन पर विजय प्राप्त करता हुआ परमानन्द की अनुभूति करता है। अभी चातुर्मास का समय चल रहा है जिसमें सहज ही तपस्या के प्रति अनुराग उत्पन्न हो जाता है।

शासन श्री साध्वी मंजूरेखा जी ने कहा—दौड़ती जिन्दगी में उपभोक्तावादी संस्कृति में असंयम प्रधान जीवन शैली में हर व्यक्ति के लिए भटकाव है। इन्सान स्वयं के अस्तित्व से अनभिज्ञ सा है। ऐसे माहौल में भी श्रीमती मनोहरी देवी ने

कंठीतप करके कीर्तिमान स्थापित किया है। डागलिया परिवार और धाकड़ परिवार का मान बढ़ा रही हैं।

तेरापंथ युवक परिषद् दक्षिण मुंबई के निवर्तमान अध्यक्ष गिरिश सिसोदिया ने विचार रखे। उनके अभिनन्दन में दक्षिण मुंबई सभा के अध्यक्ष देवेन्द्र डागलिया, महिला मण्डल की अध्यक्षा लतिका डागलिया, कार्याध्यक्ष गणपतलाल डागलिया, ट्रस्ट के मंत्री लक्ष्मीलाल डागलिया, मीडिया प्रभारी नीतेश धाकड़ उपस्थित थे। सभा के उपाध्यक्ष दिनेश धाकड़ ने सुन्दर संयोजन किया।

जागरूकता का असर : नेत्रदान का संकल्प

सूरत।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मदनकुमारजी स्वामी आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित एवं तेरापंथ युवक परिषद, सूरत द्वारा आयोजित नेत्रदान पखवाड़े के अंतर्गत जागरूकता अभियान हेतु Dr. Isha Patel, Assistant Professor, New civil Hospital-Surat द्वारा पूरे सदन को आई डोनेशन के प्रति जागरूकता हेतु सम्बोधित किया, इस जागरूकता संवाद

का सबसे प्रेरणादायी परिणाम उस समय सामने आया, जब उपस्थित एक वरिष्ठ श्रावकजी ने स्वयं आगे बढ़कर कहा 'मुझे

नेत्रदान जागरूकता पखवाड़ा

अपनी आई डोनेट करनी है। मुझे फॉर्म दीजिए, मैं स्वयं भरकर अपने परिवार को दे दूंगा।' यह केवल एक फॉर्म की मांग नहीं थी, बल्कि जागरूकता के संकल्प में परिवर्तित होने का जीवंत उदाहरण था। कार्यक्रम केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि लोगों के भीतर सेवा और नेत्रदान की भावना को जागृत कर

वास्तविक संकल्प तक ले जाते हैं। 'जब जागरूकता सही मंच और सही संवाद के माध्यम से पहुंचती है, तो एक विचार : एक संकल्प बन जाता है।' इस कार्यक्रम में मैनेजिंग ट्रस्टी, तेरापंथ सभा परिवार, महिला मंडल परिवार, अणुव्रत समिति, तेरापंथ प्रोफेशनल परिवार संपूर्ण श्रावक समाज तथा तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अमित सुराणा, उपाध्यक्ष अमित चोपड़ा एवं पदाधिकारीगण, आई डोनेशन मुख्य प्रभारी पीयूष दूगड़ एवं कार्यकर्ता परिषद परिवार की उपस्थिति रही। संचालन मंत्री गणेश बम्ब द्वारा किया गया।



संक्षिप्त खबर

नेत्रदान जागरूकता रैली का सफल आयोजन

हुबली। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, हुबली द्वारा राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़े के अंतर्गत तक नेत्रदान जागरूकता हेतु एक भव्य एवं सफल रैली का आयोजन किया गया। स्थानकवासी संप्रदाय से साध्वी इंद्रप्रभा जी ने समस्त समाज को संबोधित किया और नेत्रदान के लिया प्रेरणा रैली के लिए मंगल पाठ सुनाया। तेयुप हुबली के अध्यक्ष धर्मेन्द्र बागरेचा ने सभी का स्वागत किया और अपने विचार व्यक्त किए। अभा तेयुप के सदस्य विशाल बोहरा ने इस आयाम के बारे में जानकारी दी और बताया पूरे देश में यह कार्य जोरो से चल रहा है और अभी तक 300 नेत्रदान कराए गए हैं। गत वर्ष 2025 कुल 613 नेत्रदान कराए गए।

ACC District Level Competition का आयोजन

दलखोला। अणुव्रत समिति तेरापंथ भवन में ACC District Level Competition का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में पाँच विद्यालयों के कुल 9 प्रतिभाशाली बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा एवं आत्मविश्वास का सुंदर प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उनमें रचनात्मकता एवं अणुव्रत के संस्कारों का विकास करना था। कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

'राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा संपर्क अभियान'

उधना। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा प्रस्तुत देशव्यापी महाअभियान 'विजन फॉर विजनलेस 2.0' (Vision for Visionless 2.0) के अंतर्गत, 'राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा संपर्क अभियान' के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, उधना की टीम ने लिम्बायत विधानसभा की माननीय विधायिका संगीताबेन पाटिल से भेंट कर एक सार्थक एवं प्रेरणादायी संवाद किया। समाज में दृष्टिहीनता को दूर करने के इस पुनीत कार्य में हम सभी की भागीदारी आवश्यक है। तेयुप उधना अध्यक्ष मनीष कावड़िया एवं सभी ऊर्जावान साथी गण इस राष्ट्रव्यापी आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने और नेत्रदान के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए पूरी निष्ठा से संकल्पित हैं। नेत्रदान मृत्यु के 6 से 8 घंटे के भीतर किया जा सकता है।

'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट'

काठमांडू। अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा आयोजित 'अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट' में पहली बार नेपाल के दो प्रतिष्ठित क्रिश्चियन स्कूलों— सेंट मैरी वार्ड स्कूल और सेंट मैरी वार्ड सेकेंडरी स्कूल ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह ऐतिहासिक भागीदारी इस बात का जीवंत प्रमाण है कि अणुव्रत का संदेश किसी जाति या संप्रदाय तक सीमित नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के लिए है। प्रतियोगिता के दौरान बच्चों ने 'आवर स्ट्रेंथ आवर फैमिली' जैसे सुंदर विषय पर अपनी उत्कृष्ट रचनात्मकता दिखाते हुए शानदार ड्राइंग बनाई और निबंध लिखे। इस अवसर पर बच्चों को नैतिक मूल्यों से जोड़ने के लिए 'विद्यार्थी अणुव्रत के पाँच नियमों' की सामूहिक शपथ भी दिलाई गई।

'ॐ भिक्षु' जाप पुस्तिका का विमोचन

गुवाहाटी। आचार्यश्री भिक्षु की पावन स्मृति एवं आध्यात्मिक साधना की भावना को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से 'ॐ भिक्षु' सवा लाख जाप पुस्तिका के पांचवां संस्करण का आज विमोचन हुआ। यह कार्यक्रम मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं मुनि विकास कुमार जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। मुनि आनंद कुमार जी ने जाप की महत्ता बताते हुए श्रावक-श्राविकाओं को नियमित जाप, साधना एवं आध्यात्मिक जागरण के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 'वंदना स्वीकारो म्हारा सिरियारी रा सावरा' भावपूर्ण गीतिका का संगान कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

Happy रहिए : React नहीं Respond कीजिए

विलेपार्ले, मुंबई।

तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल, विलेपार्ले द्वारा 'हैप्पी कपल - खुशियाँ डबल' कपल शिविर का आयोजन सरदार बाग हॉल, विलेपार्ले में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सुशिक्षा साध्वी राकेश कुमारी जी आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में किया गया। तेयुप अध्यक्ष महेंद्र वडाला एवं महिला मंडल अध्यक्षा कुसुम कोठारी ने स्वागत वक्तव्य दिया।

साध्वी विपुलयशा जी एवं साध्वी चेतस्वीप्रभा जी ने परिवार एवं रिश्तों की मधुरता को दर्शाती सुंदर गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मलयविभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि ऐसे शिविर व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाकर उसे उन्नति की ओर ले जाते हैं तथा कपल शब्द का सुंदर विश्लेषण प्रेषित किया। साध्वी

राकेश कुमारी जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि स्वस्थ एवं खुशहाल दंपती ही सुखी परिवार और सशक्त समाज की नींव है। उन्होंने वर्तमान विवाह व्यवस्था में आ रहे परिवर्तनों को चिंतन का विषय बताते हुए कविता एवं रोचक उदाहरणों के माध्यम से दंपत्य जीवन में प्रेम, सामंजस्य और सहयोग का महत्व समझाया।

पति-पत्नी के रिश्ते को समझाते हुए कहा कि दोनों का संबंध हाथ और आँख जैसा होना चाहिए—एक-दूसरे की जरूरत को समझने वाला, सहयोगी एवं संवेदनशील। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ क्वालिफाइड CA, फाइनेंशियल खाते कंसल्टेंट, लाइफ कोच एवं जीवन विज्ञान के इंटरनेशनल ट्रेनर हैं। उन्होंने अपने रोचक प्रयोगों, हास्यपूर्ण प्रसंगों एवं व्यक्तिगत अनुभवों से पूरे सभागार को अंत

तक पूरी तरह तल्लीन एवं एंगेज्ड रखा। उन्होंने खुशहाल दंपत्य के पाँच सरल सूत्र दिए—Happy रहिए, React नहीं Respond कीजिए, Compliment तुरंत करें और Complaint के लिए 24 घंटे दें, Feelings Express करें तथा एक-दूसरे को समझते हुए साथ चलें। उनके वक्तव्य ने दंपतियों को अपने रिश्तों को नए दृष्टिकोण से देखने एवं छोटे-छोटे व्यवहारिक बदलावों के माध्यम से जीवन में खुशियाँ बढ़ाने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में मुंबई सभा अध्यक्ष सुरेंद्र कोठारी, भारत जैन महामंडल युवा अध्यक्ष भूपेंद्र कोठारी, TPF राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनीष कोठारी, सहित अनेक गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन अनिल बापना ने किया। अंधेरी, विलेपार्ले, सांताक्रूज़, खार एवं बांद्रा सहित विभिन्न क्षेत्रों से दंपतियों की सराहनीय उपस्थिति रही।

भक्तामर का एक-एक श्लोक मंत्र से ओत-प्रोत व चमत्कारी

गाँधीनगर दिल्ली।

डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी के पावन सान्निध्य में आयोजित भक्तामर अनुष्ठान अत्यंत ही आध्यात्मिक व दिव्य वातावरण में संपन्न हुआ। तेयुप गाँधीनगर दिल्ली के कर्मठ अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने पधरें हुए सभी पदाधिकारियों का व अनुष्ठान में उपस्थित श्रावक श्राविका समाज का अपने व्यक्तव्य से स्वागत व अभिनंदन किया। डॉ. मुनि अभिजीत कुमार जी ने श्रावक श्राविका समाज को भक्तामर का महत्व बताते हुए कहा की आचार्यमानतुंग द्वारा रचित यह स्त्रोत सभी स्त्रोतों में

सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्वेतांबर और दिगंबर दोनों परंपराओं में इसका बहुत महत्व है इसका एक एक श्लोक मंत्र से ओत:प्रोत व बहुत ही चमत्कारी है।

भक्तामर अनुष्ठान

भक्तामर स्त्रोत की रचनाकाल सातवीं शताब्दी के लगभग है श्वेतांबर परंपरा में 44 व दिगंबर परंपरा में 48 श्लोकों की मान्यता है। हजारों हजारों श्रावक श्राविका समाज इस स्त्रोत का श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं मुनिश्री ने कहा की स्त्रोत के साथ अर्थज्ञान भी होना जरूरी है। तभी हम इस स्त्रोत से कष्टों का निवारण कर सकते हैं। मुनि जागृत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में

भक्तामर के गूढ़ रहस्यों का चित्र सहित अर्थ व मार्मिक विवेचन करते हुए सभी श्रावक श्राविका समाज को आत्मजागृति का संदेश दिया। डॉ.मुनि अभिजीत कुमार जी व मुनि जागृत कुमार जी के मुखारबिंद से अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। श्रद्धा और भक्ति से ओतप्रोत इस अनुष्ठान में प्रयाप्त जानकारी के अनुसार 225 से अधिक श्रावक श्राविका समाज सहभागी बने यह अपने आप में एक अनुपम अध्याय है। इस अवसर पर तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष क्रांति बरडिया, मंत्री राजेश सेठिया उपस्थित रहे। भक्तामर अनुष्ठान का कुशल मंच संचालन व आभार ज्ञापन संयोजक विक्रम पारख ने किया।

आगम प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह

सिकंदराबाद।

मुनि दीप कुमार जी एवं सहवर्ती मुनि काव्य कुमार जी के सान्निध्य में आगम प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार वितरण समारोह का भव्य आयोजन किया गया। मुनि श्री ने बताया भगवान महावीर की वाणी को आचार्य भिक्षु ने दृष्टांतों के माध्यम से तत्व एवं दर्शन के रूप में जन जन को समझाया है। सभी को भिक्षु दृष्टांत का अध्ययन करना चाहिए। मुनि श्री ने आगम के प्रति श्रद्धा, अध्ययन एवं जागरूकता को और अधिक सुदृढ़ करने का संदेश दिया। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन डिम्पल बैद एवं सुमति धोखा ने किया।

तत्पश्चात ऑल इंडिया आगम सह-संयोजक रेखा संकलेचा ने आगम कार्य की वर्षभर की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि गत वर्ष अंतगडदसाओ सूत्र की पुस्तकें वितरित की गई थीं, जिसके अंतर्गत लगभग 236 आगम एवं 305 ऑनलाइन ऑफलाइन प्रश्न पुस्तिकाएँ हमारे आगम सहयोगियों के अथक प्रयास से जन जन तक पहुँचाई गईं। प्रथम चरण में 500/500, 498/500 लाने वालों को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सहयोगी संस्था सिकंदराबाद सभा के द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्रथम चरण में भी 38 प्रतिभागियों ने उच्च स्थान प्राप्त कर भाग्यनगर का गौरव बढ़ाया। भाग्यनगर

के लिए यह विशेष गौरव का विषय रहा कि द्वितीय चरण की परीक्षा में रंजू बैद एवं पूजा बोरड ने राष्ट्रीय स्तर पर 7वाँ स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष भिक्षु साहित्य प्रतियोगिता के अंतर्गत 'भिक्षु दृष्टांत' अब तक 224 पुस्तकें एवं 261 ऑनलाइन ऑफलाइन प्रश्न पुस्तिकाएँ। आगम संयोगियों द्वारा पाठक प्रेमियों तक पहुँचाई जा चुकी हैं। पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान करने हेतु सभा अध्यक्ष सुशील संचेती आदि उपस्थित रहे। सभी आगम सहयोगियों द्वारा अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराते हुए प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।



दिल से उतरने से दिल में उतरने तक : अंतरात्मा को झकझोरते 'Exclusive Secrets'

क्षमा याचना से तन, मन, चिंतन स्वस्थ रहता है

● मुनि कमल कुमार ●

जैन धर्म एक आध्यात्मिक और वैज्ञानिक धर्म है। इस धर्म में जितना स्थान उपवास आदि तपस्या को दिया जाता है, उतना ही ध्यान क्षमा, सत्य, संतोष, विनय आदि को दिया जाता है। तपस्या से आत्मा और शरीर दोनों का शोधन होता है, तो क्षमा आदि से शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। भगवान महावीर ने कम से कम दो दिन और अधिक से अधिक छह महीनों की तपस्या की। परंतु क्षमा उनका परम धर्म था। उन्होंने तपस्या आदि का तो समय-समय पर पारणा किया, परंतु क्षमा का निरंतर पालन किया। क्षमा, विनय आदि ऐसे तत्व हैं जिससे अमरत्व को प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान में भी तपस्या आदि का क्रम तो बढ़ा है, परंतु क्षमा, विनय, संतोष, सत्य, प्रामाणिकता में क्रमशः ह्रास नज़र आ रहा है। पर्युषण पर्व पर आठ दिन तक भिन्न-

भिन्न प्रकार से दिवस मनाये जाते हैं; जैसे खाद्य संयम, वाणी संयम, सामायिक, जप, ध्यान आदि के प्रयोग करवाये जाते हैं, परंतु अंतिम दिन उपवास, पौषध, प्रतिक्रमण का विशेष रूप चलता है। नवमें दिन को मैत्री दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिससे बारह महीने में हुए अप्रिय व्यवहार के लिए क्षमा का आदान-प्रदान किया जाता है; जिसे 'खमतखामणा' दिवस भी कहा जाता है। हर सम्प्रदाय में इस प्रकार का पर्व अवश्य मनाना चाहिये जिससे विश्व-मैत्री की कल्पना साकार हो सकती है। मनुष्य भूलों का पुतला होता है, भूल होना स्वाभाविक है, परंतु भूल को भूल मानकर क्षमा याचना करना घाव पर मरहम-पट्टी का काम करता है। हमें ऐसे पर्वों को सदा मनाने का प्रयास करना चाहिये जिससे तन, मन, चिंतन स्वस्थ बन सके।

”
खमतखामणा
केवल एक परंपरा
नहीं, बल्कि मन
के मैल को धोकर
विश्व-मैत्री की ओर
बढ़ाया गया एक
पावन कदम है।

- ❖ जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।
- ❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

— आचार्य श्री महाश्रमण

क्षमा के एयरपोर्ट से उड़ान भरे मोक्षनगर की

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

आप अहम् बनना चाहते हैं या अहम्? अहम् और अहम् 'पहले बादल गरजते हैं फिर बरसते हैं'— इस वाक्य ने माहौल दोनों एक साथ नहीं रह सकते। जहाँ दोनों एक साथ हों वहाँ तर्क और तकरार रहती है। अहम् को हटाएँ, अहम् को जगाएँ। सत्य, शिव और सौन्दर्य हमारे सामने नजर आयेगा। हमारे जीवन का उद्देश्य है - नर से नारायण बनना, आत्मा से परमात्मा, जन से जिन, बिन्दु से सिंधू एवं लघु से विराट होना। मानवीय परिवेश में कभी तनाव, अवसाद हो सकता है। पर गाँठ बाँधकर न रखें। मनोमालिन्य को भुलाना सीखें। 'सहन करो - सफल बनो'।

महान व्यक्तित्वों के प्रेरक प्रसंग :

१. समर्थ रामदास: समर्थ रामदास भिक्षा के लिए एक घर में गये और 'भिक्षां देहि' आवाज लगायी। गृहस्वामिनी तनाव में थी। उसने आवेश में आकर रसोई साफ करने का मसौता भिक्षु के मुँह पर फेंक दिया। समर्थ गुरु नाराज नहीं हुए। बिना किसी प्रतिक्रिया के उस मसौते को नदी तट पर रगड़-रगड़ कर साफ किया, बाती बनाई और शाम को दीपक में जलाकर आरती करने लगे। उन्होंने कामना की — प्रभु! जिस प्रकार ये बत्ती अंधकार का विनाश कर रही है, उसी प्रकार गृहस्वामिनी के भीतर ज्ञान और क्षमा का प्रकाश पैदा हो। यह है सहिष्णुता और क्षमाशीलता की पराकाष्ठा।

२. वैज्ञानिक दृष्टिकोण (एडिसन व न्यूटन): 67 वर्ष की उम्र में एडिसन की करोड़ों रुपयों की फैक्ट्री में आग लग गई, पर वे हताश नहीं हुए और तीन सप्ताह बाद फोनोग्राफ का आविष्कार किया। न्यूटन के पालतू कुत्ते ने मोमबत्ती गिरा दी जिससे शोध पत्र स्वाहा हो गए, फिर भी न्यूटन ने संकल्प किया कि फिर से नए सिरे से काम शुरू करेंगे। कूल-कूल रहने की आदत से इंसान ऊर्जावान बन सकता है।

३. सूकरात एवं संत तुकाराम : सूकरात देर से घर आए तो पत्नी ने गालियां दीं। सूकरात ने मुस्कराकर स्थिति संभाली।

शान्त कर दिया। संत तुकाराम घर लौटते वक्त गन्ने बांट रहे थे। एक गन्ना बचा तो पत्नी ने गुस्से में सिर पर दे मारा और गन्ने के दो टुकड़े हो गए। संत ने कहा — हम दो जने खाने वाले थे, तुमने दो टुकड़े कर दिए।

”
अहम् को हटाएँ,
अहम् को जगाएँ।
हमारे जीवन का
उद्देश्य है — नर से
नारायण बनना,
आत्मा से परमात्मा
और लघु से विराट
होना। 'सहन करो -
सफल बनो'।

”
दांत की तरह कठोर
न बनें, जीभ की
तरह नरम बनें।
जिसके हाथ में
क्षमा रूपी शस्त्र है,
दुर्जन उसका क्या
अनिष्ट कर सकता
है? जीवन बोझ नहीं
महोत्सव है...

क्षमा की महिमा और सम्यक्त्व का मार्ग: आचार्य भिक्षु ने कहा है कि मित्र से मित्रता और शत्रु से शत्रुता का अनुबंध चलता रहता है, जिसे मिटाने का उपाय क्षमा याचना है।

—अंग्रेजी का शब्द 'Sorry' आपसी तनाव और अवसाद को समाप्त करता है।

—'खमत खामणा' जैन परंपरा का सर्वोच्च शब्द है, जो तन-मन के मैल को साफ करता है। संवत्सरी को क्षमा याचना न करें तो समकित संदिग्ध हो जाता है।

—जैन धर्म की शुरुआत ही 'नमामि' और 'खमामि' से होती है। तनाव में गाँठ बांधना सहज है पर उसे खोलना जीवन की महान कला है।

पूज्य गुरुदेव तुलसी मेवाड यात्रा कर रहे थे। एक विवाद को मिटाने के लिए उन्होंने एक भाई को समझाया तो क्षमा भाव जागते ही विवाद की गाँठें खुल गईं।

एक कवि ने लिखा है—

'क्षमा शस्त्रं करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यति।
अतृपे पतितो लङ्घिः, स्वयमेवोपशम्यति॥'

क्षमा रूपी शस्त्र जिसके हाथ में है, दुर्जन उसका क्या अनिष्ट कर सकता है? दाँत कठोर होते हैं इसलिए पहले चले जाते हैं, जीभ नरम होती है इसलिए जीवन भर साथ निभाती है। मीरां ने समभाव से जहर पिया, मधवागाणि ने निंदा को न सुनकर क्षमा का परिचय दिया। प्रसन्नता का Tonic सदा साथ रखें। सकारात्मक सोच ने उनको हमेशा Be Positive बनाए रखा। जीवन बोझ नहीं महोत्सव है।

आभामंडल के पवित्रीकरण का उपाय है क्षमापना

● प्रोफेसर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा ●

जैन परंपरा का एक महान आध्यात्मिक महोत्सव है — पर्युषण महापर्व। भगवती संवत्सरी इस महापर्व की पराकाष्ठा का दिन है। जिस दिन लाखों-लाखों लोग प्रतिक्रमण की साधना से अपने आपको भावित करके 'खमत-खामणा' का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। संपूर्ण जीव-जगत् के प्रति अपने चित्त को मैत्री की भावना से ओतप्रोत करते हैं।

भगवान महावीर एक कुशल, महान अध्यात्म-चिकित्सक थे, जिन्होंने क्षमापना का सिद्धान्त प्रदान कर एक नई चिकित्सा पद्धति का आविष्कार किया है। एक ऐसी चिकित्सा जिसमें—

—बाह्य संसाधनों की किंचित् मात्र भी अपेक्षा नहीं है,
—मात्र व्यक्ति अपने भावों के पवित्रीकरण से मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को प्राप्त कर सकता है।

—अपने आभामंडल को निर्मल एवं उज्ज्वल बना सकता है।

—आभामंडल का प्रभाव व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व पर परिलक्षित होता है।

आजकल ऑकल्ट साइंस (Occult Science) के विशेषज्ञ और आभामंडल के सिद्धान्त पर काम करने वाले डॉक्टर भी मानने लग गए हैं कि—

—कोई भी बीमारी शरीर में उत्पन्न होती है, उससे पूर्व वह आभामंडल में कई महीनों पहले शुरू हो जाती है।

—सबसे पहले बीमारी भाव और मन के स्तर पर प्रारंभ होती है।

—कुंठा, निराशा, अस्थमा, डिप्रेशन आदि इस बीमारी के जनक हैं।

जो भी स्वस्थ रहना चाहता है, उसे सबसे पहले अपने मन एवं भावों की निर्मलता पर ध्यान देना होगा। मैत्री, करुणा, प्रेम ये आभामंडल को निर्मल बनाने के अमोघ उपाय हैं। स्वस्थ रहने के लिए सबसे पहले आभामंडल के पवित्रीकरण की साधना आवश्यक है।

क्षमा आभामंडल को पवित्र एवं निर्मल बनाती है। भगवान महावीर ने रोग की जड़ को मिटाने का उपाय मैत्री एवं क्षमापना के रूप प्रदान कर संपूर्ण मानवजाति का महान उपकार किया है।

—व्यक्ति के भीतर जितना अहिंसा का भाव होगा, उतनी ही उसकी सकारात्मक चेतना का विकास होगा। उससे मन की प्रसन्नता, आनंद एवं शांति की प्राप्ति होगी।

—जितना हिंसा का भाव, नकारात्मक चेतना रहेगी, उससे अप्रसन्नता, अशांति, कलह, उन्माद बढ़ेगा। उस व्यक्ति के व्यवहार से, वाणी से उसका परिवेश भी अशांत, खिन्न एवं विषादग्रस्त बना रहेगा।

”
परंपरा से प्राप्त इस मैत्री
पर्व को एक रूटीन की
तरह ही नहीं देखें किंतु
अपने व्यवहार का एक
घटक तत्त्व बनाएं।

यदि व्यक्ति भगवान महावीर द्वारा प्रदत्त क्षमा के सिद्धान्त को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बना लेता है तो वह व्यक्ति भी सबके लिए अनुकरणीय बन जाता है। परंपरा से प्राप्त इस मैत्री पर्व को एक रूटीन की तरह ही नहीं देखें किंतु अपने व्यवहार का एक घटक तत्त्व बनाएं, जिससे हमारे घर-आंगन में शांति का, आनंद का स्रोत प्रवाहित हो सके।



दिल से उतरने से दिल में उतरने तक : अंतरात्मा को झकझोरते 'Exclusive Secrets'

आत्मनिरीक्षण कर मैत्री की धारा बहाने का सर्वोत्तम पर्व : भगवती संवत्सरी महापर्व एवं क्षमापना

● साध्वी राकेश कुमारी (बायतु) ●

भगवती संवत्सरी महापर्व समस्त मानव जाति का महान पर्व एवं संस्कृति का आदि दिन है। जैन धर्मावलंबियों ने भगवती संवत्सरी महापर्व को सर्वोपरि महत्व दिया है।

आध्यात्मिक संदेश : यह आध्यात्मिक पर्व समस्त प्राणी जगत के प्रति मैत्री, अहिंसा और करुणा का संदेश लेकर मानव द्वार पर दस्तक देता है।

जन-जागरण व आत्मनिरीक्षण : यह पर्व निर्मल-पवित्र आध्यात्मिक अनुष्ठान के साथ-साथ जन-जागरण व आत्मनिरीक्षण की दिशा में मैत्री की धारा बहाने का सर्वोत्तम अलौकिक पर्व है।

१. चौरासी लाख जीवों से क्षमायाचना का अवसर : आठ दिनों की विशेष आराधना के साथ-साथ सायं प्रतिक्रमण करके सरलता से, विशुद्ध अंतःकरण से चौरासी लाख जीवों से भी क्षमायाचना कर जीवन निर्मल-पवित्र बनाने का यह पावन वक्त है।

मन का आल्हाद : क्षमायाचना से मन आल्हादित होता है। क्षमा जीवन का आभूषण है।

वीरों का आभूषण : 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' — क्षमा महान वीरों का आभूषण होता है।

२. टूटे मन को जोड़ने का सफलतम प्रावधान — खमत खामणा : मन बड़ा नाजुक होता है।

कभी-कभी कटु वचन मन से टकराते हैं तो मन खड़ा-खड़ा बिखर जाता है।

अद्वितीय समाधान : उस बिखरे मन को अखंड बना सके, ऐसा सॉल्यूशन किसी भी साइंटिस्ट ने नहीं ढूँढा है और न ही किसी फैक्ट्री ने निर्माण किया है।

भगवान महावीर की देन : अहिंसा के महान पुजारी भगवान महावीर ने उस टूटे मन को जोड़ने और अखंडित रखने का सफलतम प्रावधान दिया है—खमत खामणा।

३. मन की भीतरी गांठों को खोलने का प्रयोग : शरीर और मन की गांठें खतरनाक होती हैं। शरीर के किसी भी कोने में गांठ होती है तो कभी-कभी वह भयंकर खतरे का रूप ले सकती है, लेकिन डॉक्टर शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) द्वारा गांठ को बाहर निकाल देता है।

भावों की शुद्धि : ठीक ऐसे ही मन की भीतरी गांठों को मिटाने का सुंदरतम प्रयोग है—भावों की शुद्धि के साथ मन की गांठें खोल, निश्चल बन, खमत खामणा करना, जिससे जीवन हल्का हो जाता है।

४. अतीत का सिंहावलोकन और भविष्य की प्रेरणा : क्षमायाचना का दिन प्रतिवर्ष आता है और व्यक्ति अपने आप को हल्का करना चाहता है।

प्रायश्चित का पावन दिन : यह पर्व अतीत का सिंहावलोकन कर गतकाल में हुई भूलों का प्रायश्चित करने तथा भविष्य में गलती न दोहराने की प्रेरणा देता है।

पापों का प्रक्षालन : जीवन को निश्चल बना, व्यवहार

के धरातल पर स्वयं का इंट्रोडक्शन (आत्म-परीक्षण) कर, पापों को धो डालने का यह पावन दिन है।

५. आगमिक कथा : सम्राट उदायन और चंद्रप्रद्योत की क्षमापना : खमत खामणा औपचारिकता से न करें, बल्कि निश्चल बन शुद्ध अंतःकरण से किया जाए। इसे एक आगमिक कथा से स्पष्ट किया जा सकता है।

ऐतिहासिक संदर्भ : सिंधु सौवीर देश का सम्राट उदायन था और भीतभय नगरी उसकी राजधानी थी। उसकी महारानी प्रभावती परम श्रमणोपासिका श्राविका थी, जबकि राजा तापस धर्म का अनुयायी था। प्रभावती मृत्यु प्राप्त कर देवी बनीं और राजा को प्रतिबोध देकर जैन धर्म का श्रावक बनाया।

युद्ध और बंदी : उज्जयिनी नगरी के राजा चंद्रप्रद्योत और उदायन राजा के बीच युद्ध में चंद्रप्रद्योत परास्त हुआ, जिसे उदायन ने जेल में डाल दिया।

संवत्सरी का पोषध : राजा उदायन ने पर्युषण की आराधना के पश्चात संवत्सरी को पोषधोपवास कर सायं प्रतिक्रमण किया और चौरासी लाख जीवों से क्षमायाचना की।

सच्ची क्षमायाचना : प्रातः जब उदायन जेल में चंद्रप्रद्योत से क्षमायाचना करने गया, तो चंद्रप्रद्योत ने कहा— 'यह कैसी खमत-खामणा? मैं तो सांकलों में

बन्धा हूँ और ऊपर से क्षमापना? मुझसे गले मिलोगे तभी क्षमायाचना होगी। जब मुझे ससम्मान मुक्त करके अपने समान आसन दोगे, तभी क्षमायाचना होगी।'

बंधनमुक्ति : राजा उदायन ने कुछ देर आत्मचिंतन किया और सर्वप्रथम अपराधी चंद्रप्रद्योत राजा को सभी बंधनों से मुक्त कर सच्चे मन से क्षमायाचना की।

६. महामंत्र को आत्मसात करें
क्षमायाचना केवल औपचारिकता न हो :
'खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमतु मे।
मिन्ती मे सव्वभूएसु, वैरं मज्झं न केणइ।'
भारमुक्त मन : इस सूत्र को आत्मसात करने पर ही मन हल्का और भारमुक्त होता है।

सद्भाव की भावना : किसी प्राणी के साथ वैर भाव न रहे, सभी जीवों के प्रति मेरा मैत्री भाव बना रहे।

७. ग्रंथि विमोचन और सम्यक्त्व की सुरक्षा : इंसान पारिवारिक, सामाजिक और सामुदायिक जीवन जीता है। जीवन के लंबे सफर में किसी के भी प्रति उच्चावच भाव आया हो, अनुचित व्यवहार हुआ हो या वचन की चोट लगी हो।

कर्म ग्रंथि का विमोचन : भीतर की गांठें खोलकर क्षमायाचना करने से ही कर्मों की ग्रंथि का विमोचन होता है।

सम्यक्त्व की सुरक्षा : आगमों में बताया गया है कि यदि श्रावक किसी के साथ वैर-विरोध रखकर इस दिन क्षमायाचना नहीं करता, तो उसका सम्यक्त्व सुरक्षित रहना भी असंभव हो जाता है।

जिसे तुमने माफ़ नहीं किया शायद उसकी सज़ा तुम खुद काट रहे हो

● श्रेयांस कोठारी ●

एक युवक अपने पिता से दस साल से नाराज़ था। पिता ने उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण निर्णय उसके विरुद्ध लिया था। युवक को लगा "मेरी जिंदगी बर्बाद कर दी।" दस साल बीत गए। पिता अपना फैसला नहीं बदल सके और बेटा अपना गुस्सा नहीं। एक दिन किसी ने उससे पूछा, "तुम्हारे पिता ने तुम्हें कितने साल दुख दिया?" "दस साल।" फिर सवाल आया "और तुमने अपने पिता को कितने साल अपने मन में सज़ा दी?" वह चुप हो गया। पिता ने शायद उसके जीवन का एक फैसला गलत लिया था। लेकिन उस एक गलती की सज़ा बेटा दस साल से खुद को दे रहा था।

यहीं से क्षमा की असली कहानी शुरू होती है।

हम अक्सर कहते हैं, "मैं उसे कभी माफ़ नहीं करूँगा।" लेकिन जरा ठहरकर सोचिए, जिस व्यक्ति को आपने माफ़ नहीं किया, क्या वह हर रात आपकी नाराज़गी लेकर सोता है? क्या वह हर सुबह आपकी शिकायत लेकर उठता है? शायद नहीं। वह अपनी जिंदगी जी रहा है। और हम? उसकी कही हुई बात को बार-बार Replay कर रहे हैं। घटना दस साल पुरानी है, लेकिन दर्द आज भी Live है।

तो असली सवाल यह नहीं कि "उसने मेरे साथ क्या किया?"

असली सवाल है, "मैं कब तक उसके किए की सज़ा खुद को देता रहूँगा?"

यही क्षमा का सबसे गहरा अर्थ है।

हर Business का Audit होता है। Account देखा जाता है, क्या आया, क्या गया, कहाँ लाभ हुआ, कहाँ नुकसान। लेकिन संवत्सरी शायद हमें अपने मन का Audit करना सिखाती है। एक बार मन की Balance Sheet खोलकर देखिए। एक तरफ प्रेम, मैत्री, विश्वास और करुणा। दूसरी तरफ शिकायतें, अहंकार, पुराने हिसाब और बदले की भावना। कितने Accounts आज भी Open हैं? किसी ने वर्षों पहले अपमान किया। किसी ने विश्वास तोड़ा। किसी ने Business में धोखा दिया। किसी ने आपका Credit ले लिया। घटना खत्म हो गई, लेकिन Account अभी तक Carry Forward हो रहा है। संवत्सरी शायद उस पुराने Account को Close करने का अवसर है। लेकिन क्षमा का अर्थ यह नहीं कि गलत को सही मान लिया जाए।

Forgiveness is not approval. आप दूरी रख सकते हैं, अपनी Boundaries तय कर सकते हैं, रिश्ता भी समाप्त कर सकते हैं, लेकिन उस व्यक्ति की गलती को अपने भीतर जहर बनाकर रखने की जरूरत नहीं। आज की Generation के पास Block, Mute, Unfollow और Delete सब है। लेकिन

एक चीज़ मुश्किल होती जा रही है, मन से शिकायत Delete करना। फोन की Contact List से किसी का नाम हटाना आसान है; दिल की Contact List से उसका हिसाब हटाना मुश्किल। इसीलिए "खमत खामणा" केवल एक संदेश नहीं, Ego के विरुद्ध एक अभ्यास है। यह स्वीकार करने का साहस है कि हर बार मेरा सही होना जरूरी नहीं। कभी-कभी अपने Ego से बड़ा रिश्ता होता है, और अपने हिसाब से बड़ी शांति।

महावीर का सूत्र, "क्षमा वीरस्य भूषणम्", इसीलिए इतना शक्तिशाली है। वीर वह नहीं जो बदला ले सके। वीर वह है जिसके पास बदला लेने की शक्ति हो, फिर भी वह क्षमा चुन ले। क्रोध कहता है, "मैं तुम्हें दिखा दूँगा।" क्षमा कहती है, "मुझे तुम्हें कुछ साबित नहीं करना।" और शायद इसी कारण संवत्सरी केवल जैन समाज का पर्व होकर भी केवल जैनो तक सीमित संदेश नहीं है। आज दुनिया में Information बहुत है, Communication बहुत है, Technology बहुत है, लेकिन Understanding, Tolerance और Peace की कमी दिखाई देती है। ऐसे समय में क्षमा किसी एक धर्म की आवश्यकता नहीं, पूरी मानवता की आवश्यकता है। और सबसे जरूरी बात, कभी-कभी हमें किसी दूसरे को नहीं, खुद को भी क्षमा करना होता है। अपनी पुरानी गलती, गलत निर्णय या असफलता के लिए खुद को वर्षों तक दंडित करते रहना भी एक तरह का अन्याय है।

इसलिए इस संवत्सरी सिर्फ "खमत खामणा" Forward मत कीजिए। एक पुराने रिश्ते को याद कीजिए। जरूरी नहीं कि फोन करें। जरूरी नहीं कि रिश्ता वापस लाएँ। बस मन में इतना कह सके, "जो हुआ, वह गलत था। मैं उसे सही नहीं मानता। लेकिन अब मैं उसकी कीमत अपनी शांति से नहीं चुकाऊँगा।"

क्योंकि क्षमा हमेशा रिश्ता वापस पाने के लिए नहीं होती। कभी-कभी सिर्फ अपना मन वापस पाने के लिए होती है। और शायद संवत्सरी से मैत्री दिवस तक की यात्रा का यही सबसे सुंदर अर्थ है, पहले आत्ममंथन। फिर क्षमा। फिर मैत्री। क्योंकि जिस मन में पुराने Accounts खुले हों, वहाँ नई मैत्री के लिए जगह कहाँ बचेगी? इस संवत्सरी कुछ जमा मत कीजिए। एक शिकायत छोड़िए। एक पुराना हिसाब छोड़िए। एक "पहले वो आए" छोड़िए। एक "मैं उसे कभी माफ़ नहीं करूँगा" छोड़िए। क्योंकि अंततः, क्षमा सामने वाले पर किया गया उपकार नहीं है। यह अपने ऊपर किया गया सबसे बड़ा उपकार है। और शायद सबसे बड़ा सवाल यही है, जिसे तुमने माफ़ नहीं किया क्या सचमुच वह तुम्हारी सज़ा काट रहा है? या उसकी गलती की सज़ा तुम खुद काट रहे हो?

खमत खामणा।



दिल से उतरने से दिल में उतरने तक : अंतरात्मा को झकझोरते 'Exclusive Secrets'

क्षमा और मैत्री का दीप: शांति और सद्भाव का मार्ग

● मुनि जिनेश कुमार ●

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।

मिन्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ॥

जैन आगम गाथा में मैत्री के उत्कृष्ट रूप को दर्शाते हुए कहा गया है कि—मैं सब जीवों को क्षमादान देता हूँ और सभी जीव मुझे क्षमादान दें। सभी जीवों से मेरी मैत्री है और किसी से भी बैर नहीं है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को साकार रूप मिलता है जैन धर्म के इस मैत्री संदेश से।

1. विश्व शांति का आधार : व्यक्तिगत स्तर पर मैत्री विश्व परिदृश्य में युद्ध और अशांति का मुख्य कारण अपना हित साधना, ईर्ष्याभाव, अभिमान, इच्छाओं का विस्तार और परस्पर शत्रुभाव है। विश्व में शांति स्थापित करने के लिए मैत्रीभाव का होना आवश्यक है।

मैत्री के आवश्यक गुण: समानता, सद्भावना, समता व निस्वार्थभाव।

सुधार का प्रारंभ : मैत्री की शुरुआत छोटे-छोटे स्तर से प्रारंभ करनी चाहिए। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत गीत में कहा है—

'सुधरे व्यक्ति, समाज, व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।'

अतः मैत्री का प्रारम्भ व्यक्ति के स्तर पर करना चाहिए। संवत्सरी मैत्री का महान पर्व है। यह पर्व आत्मसुधार का पर्व है। इस पर्व को मनाने वाले सभी लोगों को राग, द्वेष, कटुता, कलह को दूर कर एक-दूसरे से क्षमा याचना करनी चाहिए। क्षमायाचना शाब्दिक नहीं, अन्तःकरण से होनी चाहिए। मैत्री पर्व पर दिल की कटुता को दूर कर प्रेमभाव का दीपक जलाना चाहिए।

2. भगवान महावीर का उत्कृष्ट क्षमाभाव: 'खन्तिसूराअरिहंता' अर्थात् अरिहंत भगवान क्षमासूर होते हैं। उनकी क्षमा उत्कृष्ट होती है। वे मैत्री के पर्याय होते हैं।

संगम देव का प्रसंग : संगम देव ने भगवान महावीर को छः महीने तक कष्ट दिये, किंतु भगवान के मन में उनके प्रति कोई द्वेष नहीं था।

उपकारी भाव : एक बार संगम देव ने भगवान महावीर से पूछा— 'मुझे आप कैसा समझते हैं?' तब भगवान महावीर ने कहा— 'अच्छे मुनाफे से माल बिकवाने वाले दलाल के समान महान उपकारी।' यह भगवान महावीर का उत्कृष्ट क्षमाभाव था। यही क्षमाभाव मानव मात्र के लिए कल्याणकारी है।

बैर का समाधान: खून से सना कपड़ा कभी खून से साफ नहीं होता, उसके लिए तो पानी और साबुन की आवश्यकता रहती है। उसी प्रकार बैर को कभी बैर से मिटाया नहीं जा सकता, उसके लिए क्षमा रूपी पानी और साबुन की आवश्यकता रहती है।

3. भूल स्वीकारना और सुधार का मार्ग : घर, परिवार, समाज में जीते हुए कभी न कभी मनमुटाव हो जाता है। गलतियाँ भी हो सकती हैं क्योंकि इंसान गलतियों का पुतला है।

सच्ची समझ : गलती होना कोई बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात है—

अपनी गलती को स्वीकार कर लेना।
अपनी गलती पर क्षमायाचना कर लेना।
दूसरों की गलती पर क्षमादान दे देना।

अपनी गलतियों को दूसरी बार नहीं दोहराने के लिए प्रतिबद्ध हो जाना।

प्रायश्चित्त का लाभ: सरल भाव से किया गया पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त व्यक्ति को भारमुक्त और शुद्ध बना देता है। यह सुधार का रास्ता है, यह सफलता की सीढ़ियाँ हैं और उन्नति का आकाश।

4. तनाव से मुक्ति की कुंजी: क्षमादान: तनाव और अशांति वर्तमान युग की बहुत बड़ी समस्या है। अहंकार और लोभ तनाव और अशांति के मुख्य कारण हैं। आज की आपाधापी एवं भागदौड़ की जिन्दगी में हर कोई तनाव और अशांति को झेल रहा है और इसी कारण उसके चेहरे से

असली मुस्कान और खुशी गायब होती जा रही है। कृत्रिमता से जीवन में जटिलताएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसे माहौल में क्षमाभाव और मैत्रीभाव व्यक्ति के तनाव और अशांति को दूर कर सुख-शांति के द्वार खोल देता है।

१. स्वयं की भलाई : क्षमा हमें दूसरों की भलाई के लिए नहीं, अपनी भलाई के लिए करनी चाहिए। यह एक प्रकार का तप है, एक प्रकार की साधना है।

२. मानसिक भार से मुक्ति: जब तक हम क्षमा नहीं करते, सामने वाले को कष्ट हो या नहीं भी हो, परंतु उसका भार हम अपने मन पर ढोते

हैं। क्षमादान करते ही हम एकदम हल्के हो जाते हैं। संवत्सरी महापर्व और मैत्री दिवस पर हम सभी खमतखामणा के महत्व को समझते हुए 84 लाख जीवयोनि एवं सभी परिचितों से खमत खामणा करके निर्मल बनने का प्रयत्न करें। आओ आज हम क्षमा मैत्री के दीप जलाएँ।

क्षमायाचना पावनता का प्रतीक है,
और गुस्सा दानवता का प्रतीक है,
सहजता सरलता हो तो होती है सोने में सुगन्ध,
क्षमायाचना मानवता का प्रतीक है।

5. मतभेद हो सकता है, मनभेद नहीं : संवत्सरी महापर्व पर क्षमा के आदान-प्रदान का विशिष्ट महत्व रहा है। इंसान गलतियों का पुतला है, उससे जाने या अनजाने गलतियाँ होती रहती हैं। भूल होना बड़ी बात नहीं है, भूल को भूल स्वीकार कर लेना बड़ी बात होती है—ऐसा कहा गया है।

लघु हो या बृहद्, भूल भूल है,
प्रमाद हमारी भूलों का मूल है,
किसी ने भी की होगी भूल मगर,
कबूल नहीं करना महाभूल है।

यह पर्व इंसान को अपनी भूलें कबूल करने के लिए प्रेरित करता है। दुनिया में भिन्न-भिन्न मान्यताओं,

विचारों वाले व्यक्ति रहते हैं। किसी के साथ मतभेद हो सकता है, परन्तु मनभेद नहीं होना चाहिए। क्योंकि जहाँ मनभेद होता है, वहाँ घृणा, नफरत व द्वेष का जहर फैल जाता है, जो मानवता के लिए बेहद घातक है। यह पर्व मनभेदों को दूर कर मैत्री भावों की धारा प्रवाहित करता है।

6. ऐतिहासिक प्रसंग : राजा उदायन और चंडप्रद्योत का खमतखामणा : जैन इतिहास में राजा उदायन और राजा चंडप्रद्योत के खमत खामणा का उदाहरण इस पर्व के महत्त्व को रेखांकित करता है:

१. पराजय और बंदी : उदायनने चंडप्रद्योत के राज्य पर चढ़ाई कर उसे परास्त किया और उसे बंदी बनाकर अपने देश की ओर प्रस्थान किया। उदायन व्रती श्रावक था, किन्तु चंडप्रद्योत व्रती श्रावक नहीं था। रिश्ते में दोनों एक दूसरे के संबंधी भी थे।

२. संवत्सरी का पर्व : रास्ते में संवत्सरी का पर्व आया। उदायन ने बंदी चंडप्रद्योत से खमतखामणा किया

३. सम्राट और बंदी का भेद : चंडप्रद्योत हँस पड़ा और बोला— 'उदायन! तुम भी मजाक करते हो। तुम विजयी राजा और मैं हथकड़ी-बेड़ी में बंधा हुआ तुम्हारा कैदी। खमत खामणा तो बराबर वालों में होता है, सम्राट और बंदी के बीच में नहीं।'

४. तत्काल मुक्ति और सम्मान : चंडप्रद्योत की बात सुन राजा उदायन ने एक क्षण सोचा और तत्काल चंडप्रद्योत को बंधन से मुक्त कर दिया। उसने बारंबार खमत खामणा किया और सम्मान के साथ उसे उसके राज्य में पहुँचा दिया।

निष्कर्ष : जैन धर्म का यह मैत्री पर्व संपूर्ण विश्व के लिए महत्वपूर्ण एवं कल्याणकारी है। अगर इस पर्व और मैत्री संदेश को सभी स्वीकार कर लें, तो विश्व की अनेक समस्याएँ समाप्त हो सकती हैं और सर्वत्र शांति स्थापित हो सकती है।

एक दूसरे के अपराधों को भुलाएँ,
मन में उभरे आक्रोशों को सुलाएँ,
आपस में क्षमा का आदान-प्रदान कर,
सर्वत्र मैत्री का मधुर स्रोत बहाएँ॥

जैन विद्या से सम्यक्त्व पुष्ट होता है

राजराजेश्वरी नगर।

मुनि आकाश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा राजराजेश्वरी नगर के तत्वावधान में जैन विद्या परीक्षा-2025 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों का सम्मान एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। मुनि श्री ने जैन विद्या का महत्व बताते हुए कहा कि जैन धर्म में ज्ञान का बहुत महत्व है आचार्य तुलसी ने इस महत्व को समझते हुए तेरापंथ श्रावक समाज को जैन विद्या प्रकल्प का अवदान दिया। श्रावक संबोध में आचार्य

तुलसी ने कहा भी है 'फल उपासना का श्रवण, मिले श्रवण से ज्ञान। फिर विज्ञान विवेचना, उसे प्रत्याख्यान' अर्थात् श्रमणों की उपासना करने से जो आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है उससे

विद्यार्थियों का सम्मान समारोह आयोजित

श्रावक का विवेक जागृत होता है और तब वह प्रत्याख्यान का महत्व समझकर पापकारी प्रवृत्तियों का परित्याग करता है जो मोक्ष के मार्ग का प्रथम सोपान है। मुनि हितेन्द्र कुमार जी ने जैन विद्या के

महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विद्यार्जन का असर आपके आचार-विचार पर पड़ता है। हमारा सम्यक्त्व पुष्ट होता है। सम्यक्त्व के पाँचों लक्षण को विश्लेषित करते हुए कहा कि जैन कुल में जन्म लेने से ही हम जैनी नहीं बन जाते बल्कि हमारी श्रद्धा का केन्द्र बिन्दु देव-गुरु-धर्म होना चाहिए। जैन विद्या राजराजेश्वरी नगर की सह केंद्र व्यवस्थापिका संगीता डागा ने स्थानीय केंद्र के परीक्षार्थियों की जानकारी दी। सभाध्यक्ष कमलसिंह दुगड़ ने अपने विचार प्रस्तुत किए। जैन विद्या प्रभारी सीमा छाजेड़ ने विचार व्यक्त किए।

जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन

बालोतरा। अणुव्रत समिति बालोतरा के तत्वाधान में जिला स्तरीय अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट प्रतियोगिता का आयोजन प्रोफेसर डॉ मंगल प्रज्ञा जी के सान्निध्य में न्यू तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें गायन, भाषण, कविता, निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का समावेश किया गया। कार्यक्रम में सभा के उपाध्यक्ष ललित जीरावला, समिति अध्यक्ष जवेरीलाल सालेचा ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। साध्वी सुदर्शन प्रभा जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में अणुव्रतों का होना जरूरी है। छोटे छोटे व्रतों से हम अपने जीवन को अच्छा बना सकते हैं।



दिल से उतरने से दिल में उतरने तक : अंतरात्मा को झकझोरते 'Exclusive Secrets'

थांस्यूं म्हारा खमत-खामणा

● मुनि मोहजीत कुमार ●

मिनख जमारो एक समुन्दर है। जकै में इमरत भी है और जेर भी है। समुन्दर नै घोटणी स्यूं घटे तो घणी ही चिज्यां निकल ज्यावै, जकै में एक चीज है 'इमरत'। बीयां ही मिनख री बोली में करडो पणो भी है अर नरम पणो भी है। खारो पणो भी है अर मीठो पणो भी है। मीठो पणो सगळा नै ही चोखो लागै। इयां ही चोखो मिनख रो बेवार भी सगळा नै गमतो लागै। चोखे बेवार रे खातर मिनख नै सरल बणणो पड़ै, नमणो पड़ै। मिनख आपरै चोखे बेवार स्यूं अणखावणो भी लागै अर सुहावणो भी लागै। इण खातर बेवार ने कदेई नीचो मत होवण छो।

देश री आजादी रे खातर घणा ही बलिदानी देश भगत आपरो समरपण अरु बलिदान करण सारू आगूच आया। जकै में सुभाषचन्द्र जी रो नाम भी आवै। वै एक बार मंच उपर भाषण दे रह्या हा। इते में बीं परखदा में स्यूं एक मिनख सुभाष जी रै ऊपर जूतो फेंक्यो। वै चाहता तो बीं टेम गुस्सो कर सकता, पण बां रै मन में खम्या रा भाव हा। वै बीं टेम ही जको जूतो फेंक्यो बीनै केवता हुआ बोल्यो— भाई! एक जूतो कोई काम कोनी आवै। दूसरो जूतो और फेंक देवो तो म्हारे परेण काम आ ज्यासी। खम्या राखण वाळो बडो हुवै। वो मिनख परेणाराम पूरो हुयां पछै आर खमत-खामणा करया। अब बीं रै हिये में भायलो बण रा भाव जाग्या वो सदां खातर बांके सागे ही जुडग्यो। बीं नै पूछ्यो तू तो म्हारो विरोधी हो। वो बोल्यो— आप लोगां रो चोखो बेवार देख र अर खम्या रा भाव देखर म्हारो मन आप लोगां स्यूं जुडग्यो।

खमणो मिनखपणै री बडी मोलत है। खमणै स्यूं मिनख री मांयली गांठा खुल ज्यावै। पण अबकै रो मिनख आपरै मानखै नै एंकार स्यूं अकडाई स्यूं उंचो उठावण री सगती लगावै। एंकार, अकडाई मैं पणो दिखावण नै तयार रहै। बीं बीरौं रूतबो नीचो ही पड़ै। इण खातर इण नै उंचो उठावण खातर खुद री भावना में खमणै रा झुकणै रा भाव जगाणा पड़सी। अबै रे मिनख री खमणै री चेतना खोखली अर खाली हूँती जा रही है। अब खाली उपरलो दिखावो बच्यो है। वो किताक दिन चालसी आ सोचण री बात है। आपणो ओ मिनख जमारो मिनखपणे स्यूं ज्यूडयोडो है। बीं नै आपा कियों, खिम्याधार चोखो बणावां। इण खातर पजुषण रो त्योंहार आपां नै आ ही बात कैवै है कि थे सरल बणो, जाण-अणजाण में गलती होणी कोई बडी बात

कोनी, पण बीं गलती नै स्वीकारो। अकडावण री जग्यां नरमावण करो। सगला नै मन अर भाव स्यूं कहो- 'थांस्यूं म्हारा खमतखामणा।' जदी मिनख नै आपरी परतिष्ठा बढ़ाणी है, चोखो लागणो है तो लोगां रै सामणे, आप मिलणे वालां रै सामणे सहज रूप स्यूं आ कहो, 'थांस्यूं म्हारा खमत-खामणा'।

एक बार साधु मराज बखाण दे रह्या छ। गाँव रा घणां ही मिनख-लूगायां अर बांरा भगत बखान सुण रह्या छ। बखाण पूरो हूयो। बीं टेम एक गांवड़ियो मिनख मराज खनै आर मराज पर थूक्यो अर जल्दी सी भाग्यो। मराज थूक देख्यो अर आपरै खनै पड़ी चादर उठार बीं स्यूं पूछ लियो। ई बात अर करतब ने देख र कई भगत नराज हूर बीं नै पकड़ण अर मारण वास्ते भाग्या। साधु जी बोल्यो रे भायां! छोटी सी बात ही वो थूक्यो। मैं बीनै चादर स्यूं पूछ लियो। बात खतम। लोग बोल्यो- वो अजोग हो, बेवकूफ हो। इयां थूक ज्यावै मजाल पड़ी है। साधु जी बोल्यो- जकी बात नै आपां सहन कर सकां करणी चाहिये। इण स्यूं मिनख रो मान बढ़ै ही है, घटे कोनी। आज वो थूक्यो है, काल वो आर नम ज्यासी, बा ही हुई। वो आर साधु जी रै चरणां में लुटग्यो, दास बणग्यो। ओ है सैन करणे रो प्रभाव। इनै सिरै चाढो खिम्या राखण वालो कदेई बुरो को नी बाजै।

खमत-खामणा रो ओ दिन सगलां नै आ ही बात कैवै है कि सरल हिरदो बणा र खमणो-खामणो सीखो। गुरुदेव तुलसी भी इण बारे में कह्यो—

खमता-खामणा छह अक्षर है, अरथ अनोखो झांको।

खमो-खमाओ मन-भावां स्यूं, मोल अभिन्तर आंको॥

खमावण रो मोल आंकेणे री जरूरत है। इरै इमरत नै पीस्यो तो अमर बण जास्यो। भगवान महावीर ने देखांतो वै आपरै जमारै काल में किती-किती खम्या राखी अर अमर बण गया। इयां ही खम्या रो दान महादान कह्यो है। खमत-खामणा करणै रो मतलब है। आपणे हिये में निरमलता आवै, खुशी मिलै, दुराव कम हुवै, शुभ भाव जागै, स्वभाव बदलै। सगलां रै सागै परेम जागै। इण स्यूं मिनख जमारो सकारथ बण ज्यावै। इण मौके कोई नै करणै, पढ़णै, बोलणै, लिखणै, बात में, बेवार में कोई करडो काठो लाग्यो हुवै तो सगलां स्यूं—

**जै भूल हुई जै जणां-कणां।
है खमत-खामणा घणा-घणां॥**

पंद्रह साल का बैर, एक 'क्षमा' से ढेर

(क्षमा : जीवन का अमृत और महा-औषधि)

● साध्वी अणिमाश्री ●

क्षमा : जीवन का अनमोल आभूषण—

- क्षमा एक रोशनी है जो वर्तमान के साथ-साथ सुदूर भविष्य को भी रोशन कर देती है, उज्ज्वल रोशनी से भर देती है।
- कोई कहता है इंसान धन से बड़ा होता है, कोई कहता है पद-प्रतिष्ठा से बड़ा कहलाता है, लेकिन हकीकत में महान वही है जो क्षमा करना जानता है।
- क्षमा जीवन का श्रृंगार है, क्षमा जीवन का आभूषण है। इस आभूषण को ज्वेलरी की तरह बहुत संभालकर रखने की जरूरत है। इस आभूषण की चमक हमेशा बढ़ती ही रहती है।
- क्षमा वह रक्षाकवच है जो आज और कल दोनों को सुरक्षित कर देती है।
- क्षमा एक ऐसा अमृत है जो जहर घुली सांसों में भी पुनः प्राणों का संचार कर देता है।

एक घटना प्रसंग क्षमा के वर्चस्व, शक्ति, ऊर्जा व प्रेरणा को जीवंत करने वाला है : भाइयों में कलह और मनमुटाव— एक बड़े भाई ने अपने छोटे भाई को व्यापार के लिए तीन लाख रुपये दिए। उसका व्यापार अच्छा जम जाने पर बड़े भाई ने रुपये लौटाने के लिए कहा; परन्तु छोटे भाई ने रुपये नहीं लौटाये। आखिर दोनों में झगड़ा हो गया

द्वेष का संबंध : झगड़ा इस कदर बढ़ा कि दोनों का बोलना एवं आना-जाना बंद हो गया। घृणा और द्वेष का आंतरिक सम्बन्ध अत्यन्त गहरा हो गया। निंदा और अशान्ति: बड़ा भाई जहाँ कहीं जाता, खड़े होकर अपने छोटे भाई की निंदा/आलोचना करने लग जाता

साधना में बाधा : वह धर्म-साधना भी अच्छी करता था, लेकिन इस मानसिक कलह के कारण उपजी धर्माधना में भी मन नहीं लग रहा था। इस मानसिक व्यथा का प्रभाव शरीर पर भी पड़ने लगा।

संत का मार्गदर्शन : एक दिन उसने एक संत के पास जाकर अपनी कथा सुनाई। संत ने कहा — 'वत्स! तू चिंता मत कर, सब कुछ अच्छा होगा। तू अपने छोटे भाई के लिए एक डिब्बा मिठाई लेकर उसके घर जाकर उससे कहना — अनुज! मुझसे भूल हुई है, मुझे क्षमा कर दो।'

उसने कहा — 'संत प्रवर! मैंने ही उसकी मदद की और मैं ही क्षमा माँगूँ?'

संत ने कहा — 'गलती दोनों तरफ से होती है।'

उसने कहा — 'गुरुदेव! मुझे अहसास तो होना चाहिए कि मैंने इस संदर्भ में क्या गलती की?'

संत ने कहा — 'आयुष्मान्! तुमने उसकी निंदा की, आलोचना की, भला-बुरा कहा। तुम्हारे दिल में भाई के प्रति घृणा, द्वेष और क्रोध के भाव थे, क्या यह भूल नहीं है?'

क्षमा और प्रेम का पुनर्मिलन : बड़े भाई की आँखें

खुल गईं। संत को नमन कर वह सीधा छोटे भाई के घर पहुँचा और दरवाजा खटखटाया।

—उसके बेटे ने दरवाजा खोलकर अपने ताऊजी को देखा — एक क्षण के लिए अचानक ठिठक गया, फिर चिल्लाकर खुशी से घर पर बोला — भाऊजी आये हैं।

—छोटा भाई भी दौड़कर सामने आया और पुलकित होकर कहा — आज पंद्रह वर्ष के बाद भैया मेरे आँगन में आये हैं। प्रेम से गला रूँध गया, आगे कुछ बोल नहीं सका।

—बड़े भाई ने फल व मिठाइयाँ टेबल पर रखीं और अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा — 'अनुज! सारी भूल मुझसे हुई है, तुम मुझे क्षमा कर दो।' 'क्षमा' शब्द निकलते ही हृदय का प्रेम आँसू बनकर बहने लगा। छोटा भाई चरणों में गिर पड़ा, अपनी भूल के लिए रो-रोकर क्षमा माँगने लगा। क्षमा व प्रेम का सागर प्रवाहित हो गया। सब शांत, चुप, सबकी आँखें भी भीग गईं।

सच्ची साधना और समाधान—

कुछ ही देर बाद छोटा भाई अंदर से रुपये लाकर बड़े भ्राता के सामने रख दिये। उसने कहा — आज मैं इन कौड़ियों को लेने नहीं आया हूँ। मैं अपनी भूल मिटाने एवं साधना को सजीव बनाने आया हूँ। आज मेरा आना सफल हो गया, मेरा दुःख मिट गया। मुझे अब महसूस हो रहा है कि —

**करूँ मैं दुश्मनी किससे, अगर दुश्मन भी हो कोई।
मुहब्बत ने दिल में जगह छोड़ी नहीं अदावत की॥**

छोटे भाई ने कहा — भैया! जब तक आप ये रुपये नहीं लेंगे तब तक मेरी आंतरिक तपन नहीं मिटेगी, अतः कृपा करके ये रुपये स्वीकार करें।

(अनुज की इच्छा रखने हेतु वे रुपये अनुज के लिये और अनुज को साथ लेकर अनाथालय में विसर्जन कर दिए।)

क्षमा देने व लेने के बाद दोनों का मन प्रसन्न हो गया, मानसिक रोग जड़ से मिट गया। सच, क्षमा के महासागर में अभिस्नान होकर चेतना को चिन्मय के साँचे में ढाला जा सकता है।

पावन संदेश —

खमत-खामणा का यह परम पुनीत अवसर

सबको यह प्रेरणा दे रहा है —

जहर भर गया जिन साँसों में,

वहाँ अमृत की धार बहाएँ।

भूल-विगत को, इस आगत का,

एक नया इतिहास बनाएँ॥

क्षमा जीवन का वह अमृत है जो अविनाश्वर चेतना के द्वार को उद्घाटित कर देता है एवं अमरता के पथ पर प्रस्थित कर देता है।

**जब रिश्तों में
अहंकार हारता है
और क्षमा जीतती
है, तब सदियों
पुरानी कड़वाहट
भी अश्रुओं में बह
जाती है।**

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी के वर्धापन पर विशेष

भिक्षु की उर्जा मणियों की माला है

● साध्वी सौरभप्रभा ● ● साध्वी सुयशप्रभा ●

ये गण रखवाला है, इमरत प्याला है
भिक्षु की उर्जा, मणियों की माला है
हो गूँजे जयकार गुरुवर तुम्हारा
स्वीकारो वंदन, तारणहारा,
करे वर्धापन, युवराज तुम्हारा
स्वीकारों वंदन, आज हमारा।।

कुशल जौहरी रो कमाल है, 'युवराज पद' बेमिसाल है
नयो-नजारो देख-देख म्हे हुआ निहाल
कोचर कुल रो लाल है, मात-तात खुशहाल है।
गुरु उर्जा को नमन, करां हां बारंबार
जय मधवा ज्यूं जोड़ी, देख मन हरषाये
चंदेरी गुरुगाथा, अंबर-धरती गुंजाये हो हो गूँजे...

सुंदर-सुंदर व्यवहार है, संगीत कला सुखकार है
सहज-सरलता, लाई सतरंगी बहार
पुण्यवानी, अपरंपार है,
विनम्रता स्यूं, जुड़ग्या तार है।
हर मन में बाजे, खुशियां री सितार
फलसूंड सौभागी, बण्यो महावीर वैरागी
आई आज दिवाली, महाश्रमण गणमाली।।
हो गूँजे

लय – ये कर्म खुद आया है।

छगनी मां के दुलारे नंदन वन के सितारे

● साध्वी भावितयशा ●

ज्योतिचरण के चरणों में नतमस्तक यह संसार हे
नित नव उन्मेष, अवदान विशेष
जय महाश्रमण महाश्रमण
युवाचार्य मनोनयन का भव्य नजारा
छगनी मां के दुलारे, नंदन वन के सितारे
गण उजियारे उजियारे

मन मोहक स्मित मुस्कानों का प्रतिपल झरना है, बहता
निरहंकारी निस्पृहता और मधुरी वाणी विनम्रता
प्रभुवर के नयनों और प्रवचन दिल से बसे महावीरा
विभुवर के सक्षम आलंबन
अनुपम उज्ज्वल है व्यक्तित्व तेरा
करें अभिवंदना, अभिवंदना

ज्ञान के सागर में गोते खाकर श्रुत आराधक कहलाये
श्रद्धा के आकाश में उड़कर गुरु दिलवासी बन पाये
चारित्र के उत्तुंग शिखर चढ़ युवराज पद पाये
महातपसी की सान्निधि तप सहचर
तुझमें सम शम श्रम क्षीर नीर ज्यों समाया
करें वर्धापन वर्धापन।।

लय – कौन दिशा में...

गुरु की महिमा देखी नवेली

● साध्वी प्रबल्यशा ●

भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी अलबेली।
गुरु की महिमा देखी नवेली।।
अनूठो दृश्य प्रभुवर ने दिखलायो।
'युवराज पद' खुशियों की बांटे गुड़ की भेली।।

वर्धापन की शुभबेला है, मनहारी।
मंगल-भावों की सभी फूलवारी।।

श्वेत कोयलिया पंचम स्वर में, गीत सुनाये।
नयी उमंगे बनी आज परदाई।।

गुरु उर्जा की बजी शहनाई।
संयम-अनुशासन बना फलदाई।।

मनोनयन मनभावना अनुपम।
तंदरूस्त रहे तनुरत्न सुखदाई।।

गण गौरव गाएं हो फूल न समाएं

● साध्वी संवेगप्रभा ●

युवराज: को आज बघाने
जन-जन मन हरसाए रे
गण गौरव गाएं हो, फूल न समाएं
आ.... हम तुम्हें बधाए।।

मां छगनी के लाल लाडले
सवाई कुल उजियार
महाश्रमण के सक्षम पट्टघर, श्रेष्ठ बने अणगार।
तुम्हें हम आज बधाएं

महामनस्वी महायशस्वी तुम हो पुण्य निधान
प्रगति शिखर पर बढ़ो चढ़ो तुम
पा गुरु का वरदान
तुम्हें हम आज बधाए

छक्कम छक्का राज्य करो तुम, तेरापंथ युवराज
महाश्रमण ने पहनाया तुमको, शासन का ताज
तुम्हें हम आज बधाए

दीर्घायू बन करें शासना, जोड़ी ये अभिराम
कुशल युगल नेतृत्व आपका हमें मिले अविराम
तुम्हें हम आज बधाएं
हो...गण गौरव गाएं, आ.... फूले न समाएं

तर्ज – इक झोली में

❖ इन्दिरयां अपने आप में
अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब
उनके साथ मोह का योग हो
जाता है तो ये कर्मबंधन का
कारण बन जाती हैं।

-आचार्य श्री महाश्रमण

वर्धापन की शुभ बेला में देते आज बधाई

● साध्वी चैतन्ययशा ●

मंगलमय घड़िया आई।
खुशियां मन में है छाई।।
अभिनंदन की शुभ बेला में।
गूंज रही है शहनाई।।
वर्धापन की शुभ बेला में, देते आज बधाई।।

भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी पर।
प्रभु ने नव उपहार दिया।।
युवराज पर हुआ प्रतिष्ठित।
धर्मसंघ को निहाल किया।।
वर्धापन की शुभ बेला में, देते आज बधाई।।

विनय विवेक विद्या इकतारी।
पंचाचार की खिल रही क्यारी।।
स्थित योगी स्थितप्रज्ञ श्रुतधारी।
छोटी वय में प्रभुताधारी।।
वर्धापन की शुभबेला में, देते आज बधाई।।

दीक्षित महाप्रज्ञ गुरुवर से।
हुये प्रशिक्षित महाश्रमण से।।
प्रभु महाश्रमण की कलाकृति
जन-जन के मन को भाई।।
वर्धापन की शुभ बेला में, देते आज बधाई।।

धरती अम्बर दशो दिशाएं हर्षित प्रभुदित खुशी मनाएं

● साध्वी निर्मलयशा ●

धरती अम्बर दशो दिशाएं,
हर्षित प्रभुदित खुशी मनाएं।
युवराज के अभिनंदन में
श्रद्धा शक्ति थाल सजाएं।।

रहो निरामय चढ़ो हिमालय,
जिनशासन महिमा महकाओ।
भैक्षव शासन नंदनवन में,
महाश्रमण सुखसाया पाओ।।

अनुपमेय व्यक्तित्व तुम्हारा,
शब्दों में कैसे बतलाये।
तुलसी महाप्रज्ञ सी जोड़ी
युग-युग तक अनुशासन पाएं।।

दिव्यलोक से शासन माता,
देख रही है भव्य नजारा।
तेरापंथ का युवराज,
चमकेगा बनकर ध्रुवतारा।।

योगक्षेम वर्ष मन भावन,
गण में बरसे रिमझिम सावन।
महाश्रमण के चरण-शरण में
मन बन जाता मंदिर पावन।।

म्हारा भाग्य सरावां हां

● साध्वी हिमश्री ●

म्है तो महाश्रमण गुरु राज री, गुण गरिमा गावां हां।
पाया महावीर युवराज, म्हारा भाग्य सरावां हां।।
गुरु महाश्रमण रो चिंतन गण में, देखो जोश जगावै है।
हो माना गुरुवर रो आभार,
शुभ भावा रो तिलक लगावां हां।।

विनय समर्पण समता स्यूं, महके जीवन फुलवारी ओ।
सद्गुण रत्ना रा भण्डार, महिमा महकावां हां।।

हो युगल पूज्य चरणां री सेवा, कर आशीर्वर पायो ओ।
ओ बिंदु लियो सिंधु आकार, मंगल गीत गावां हां।।

महाश्रमण महावीर जोड़ी, जुग-जुग दीपै गण म्है हो।
हो पावा मंगलमय पथ दर्शन, थाने आज बधावां हां।।

तर्ज – हो मनवा...

अनुपम गण सौरभ से शासन गुलशन महकाएं

● साध्वी कीर्तिप्रभा ●

भावों के फूलों से हम अर्चना सजाएं
अभिनंदन की बेला पुलकित दशो दिशाएं
पापभीरुता सहनशीलता, जागरूकता न्यारी
समता क्षमता विनयशीलता से महकी फुलवारी
अनुपम गण सौरभ से शासन गुलशन महकाएं

दर्शन आगम न्याय, लाकरण वर वैदुष्य तुम्हारा
संस्कृत प्राकृत अंग्रेजी में भी, है कमांड तुम्हारा
शास्त्रा सिंधु में अवगाहन कर रहन अपार पाएं

गुरु महाश्रमण का शासन, सौभाग्य हम सराएं
योगक्षेम वर्ष में युवराज को पा, हृदय कमल विकसाएं
जम मधवा की यह जोड़ी सबके दिल को भाएं
गुरु महाश्रमण के शासन में नव दृश्य देख पाएं।

युवाचार्य वरदाई वर पा पुलकित जगती का कण-कण

● साध्वी पंकज श्रीजी ●

आज धरा पर सुरवर सारे, करते प्रभुवर को वंदन।
युवाचार्य वरदाई वर पा, पुलकित जगती का कण-कण।।

विनय समर्पण के सुमनों से, सज्जित है जिनका जीवन।
विकास के सौपानों पर चढ़ते रहते ले गुरु शरण।
सहज सौम्यता का जीवन में खिले गुलशन।।

देवदूत बन आये धरा पर, तुम मां छगनी के आंगन।
धीर थीर गंभीर जीवन, कोचर कुल के हो नंदन।
दशो दिशाएं मंगल गाए, विनयभाव का चढ़ स्यन्दन।।

श्रेष्ठ श्रुताराधक को पाकर, गण का गौरव खूब बढ़ा।
ज्योतिचरण गुरु महाश्रमण की सान्निधि में जीवन गढ़ा।
विकास की तुम फसले उगाओ, गुरुवर का था अभिसिंचन।।

जब तक इस धरती पर, सूरज चंदा का पाये प्रकाश।
तब तक वीर गोयम की जोड़ी, करती रहे जग में उजास।
चंदेरी निज भाग्य सराए, पा गुरुवर की चरण शरण।।

तर्ज – खड़ी नीम के



संक्षिप्त खबर

स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और खुशहाल जीवन

कोकराझार। तेरापंथ युवक परिषद द्वारा तेरापंथ महिला मंडल, कोकराझार शाखा के सहयोग से पाँच दिवसीय नेचुरोपैथी, एक्यूप्रेसर एवं कायरोप्रेक्टर उपचार शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में TH. Dr. Mahendra Singh (MD in Acu) एवं TH. Dr. Prakash Rankawat (MD in Acu) द्वारा विभिन्न प्राकृतिक एवं वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से लोगों को उपचार एवं स्वास्थ्य संबंधी परामर्श प्रदान किया गया। शिविर के दौरान एक्यूप्रेसर, कायरोप्रेक्टर थेरेपी, कपिंग, वाइब्रेशन थेरेपी तथा मैग्नेट थेरेपी जैसी उपचार पद्धतियों की सेवाएँ उपलब्ध कराई गईं। शिविर के संयोजक विजय भूरा, सह-संयोजक ममता सेठिया तथा सह-संयोजक सचिन छाजेर सहित पूरी टीम ने व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से संचालित किया। आयोजन के माध्यम से 'स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन और खुशहाल जीवन' का संदेश दिया गया तथा प्राकृतिक एवं स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए समाज को प्रेरित किया गया।

Fit Yuva Hit Yuva कार्यक्रम आयोजित

गाँधीनगर दिल्ली। अभातेयुप के आयामों में एक प्रमुख आयाम F.Y.H.Y इसी क्रम में तेयुप गाँधीनगर-दिल्ली ने अपने युवाओं को Fit रहने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, विकास मंच, कृष्णानगर, दिल्ली के प्रांगण में योग ट्रेनर दीपक सरीन व योगा ट्रेनर आँचल की उपस्थिति में हुआ। अध्यक्ष प्रकाश सुराणा ने योग ट्रेनर का व पधारे हुए सभी सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों व युवा कार्यकर्ताओं का स्वागत व अभिनंदन किया। योग ट्रेनर ने योग की जानकारी करवाते हुए योग कब, कैसे और क्यों जरूरी है योग हमारे जीवन में इसके बारे में बताते हुए योग व प्राणायाम करवाना प्रारम्भ किया। कुशल मंच संचालन व आभार ज्ञापन प्रभारी अनुराग बोथरा ने किया।

नमोस्थुणं विद्या कल्प अनुष्ठान का आयोजन

सैंथिया, पश्चिम बंगाल। मुनि डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार जी, मुनि रमेश कुमार जी, मुनि पद्म कुमार जी के पावन सान्निध्य में आज पहली बार नमोस्थुणं विद्या कल्प का अद्भुत अद्वितीय अनुष्ठान सैंथिया स्थित ऋषभ भवन में आयोजित हुआ। मुनि ज्ञानेन्द्र कुमार जी एवं मुनि रमेश कुमार जी ने शक्र स्तुति यानी नमोस्थुणं का महत्व और विधि बताई। अरिहन्त भगवान और सिद्ध भगवान की श्रद्धामय स्तुति की यह प्राचीन विधि है। नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ अनुष्ठान का शुभारंभ हुआ। श्री वज्रपंजर स्तोत्र से रक्षा कवच का निर्माण किया। सामूहिक आध्यात्मिक संकल्पबद्ध होकर उच्चस्वर में एक साथ सस्वर में अनुष्ठान लगभग 2 घंटे 30 मिनट तक चला। अनुष्ठान में भाग लेने के लिए आस पास के क्षेत्रों से भी लोग अच्छी संख्या में आये। मलारपुर, डाकबंगला, बेलडांगा, दखलमाटी (रामपुरहाट), बोलपुर, श्री डूंगरगढ़ (राजस्थान), कलकत्ता, आदि विभिन्न क्षेत्रों से आए थे। तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ युवक परिषद के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का सराहनीय परिश्रम भी रहा।

मुमुक्षु मंगल भावना समारोह आयोजित

इरोड। महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी सुशिष्या साध्वी सोमयशजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापन्थ भवन में चैन्नई से समागत मुमुक्षु कोमल का मंगल भावना समारोह मनाया गया। साध्वी श्रीजी ने प्रेरक उद्बोधन के दौरान कहा की भवसागर को पार करने के लिए हमें संयम की नौका का सहारा लेना होगा। इस नौका को पार पहुंचाने वाले हमें कुशल नाविका गुरु मिले हैं। इस युग में विलक्षण धर्मसंघ और महाश्रमणजी जैसे महातपस्वी गुरु की अनुशासना मिलना हमारा परम सौभाग्य है। मुमुक्षु कोमल गुरुचरणों में जाकर, समर्पित होकर अपनी संयम साधना में सदा आगे बढ़ती रहे। डॉ. साध्वी सरलयशजी और साध्वी ऋषिप्रभा जी ने अपने विचार रखे। अभातेयुप के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनन्त बागरेचा, तेरापन्थ सभा, महिला मण्डल एवं युवक परिषद द्वारा अपनी मंगल कामनाएं प्रेषित की। सुरेंद्र भंडारी ने समारोह का संचालन किया।

आध्यात्मिक उल्लास का महा-उत्सव : पर्युषण पर्व की देशव्यापी तरंगें

स्वाध्याय ज्ञान का झरना, एक रसायन और पारसमणि है

रोहिणी, दिल्ली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या शासनश्री साध्वी सुमन जी के सान्निध्य में पर्युषण पर्व की आराधना का दूसरा दिवस स्वाध्याय दिवस के रूप में मनाया गया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं के मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी ने महावीर आभिवन्दना के साथ भगवान महावीर के सतावीस भव परम्परा में नयसार भव का वर्णन करते हुए कहा कि प्रत्येक जीव अनन्तकाल से संसार में परिभ्रमण कर रहा है। ऐसी कोई गति योनी और जाति नहीं जहाँ अनन्त बार जन्म मरण नहीं किया हो।

भगवान महावीर ने भी इन सतावीस भवों से पहले इतना ही भवभ्रमण किया है। कोई भी जीव केवल एक जन्म की तपस्या साधना से महावीर नहीं बनता। सतावीस भव तो इसलिए महत्वपूर्ण है कि प्रथम भव नयसार भव में सम्यक्त्व का उजाला मिला और मोक्ष की सीट रिजर्व हुई।

अध्यात्म के क्षेत्र में सम्यक्त्व का प्रकाश मिलना बहुत बड़ी आत्म विजय है। भगवान महावीर के जीव ने नयसार भव में मुनि को सुपात्र दान भी दिया और मूलपूजी से सम्यक्त्व का आलोक मिला यह सबसे बड़ी उपलब्धि हासिल की। पूर्वी भवों की यह यात्रा बड़ी रोमाञ्चक और प्रेरणाप्रद है जिसे सीरियल वाई सुनकर सभी अपनी भव यात्रा को विराम दें। साध्वी सुरेखाजी ने

'स्वाध्याय है ज्ञान का झरना' विषय पर बोलते हुए कहा कि स्वाध्याय ज्ञानियों की समाधि है। गीता में इसे यज्ञ बताया गया है। स्वाध्याय करते-करते आदमी ज्ञानी पंडित विद्वान बन जाता है। तुलसी महाप्रज्ञ साहित्य का अवहान करते-करते कई व्यक्तियों की दिशा और दशा बदल गई।

एक वाक्य ही ऐसी चोट करता है कि आदतों और जीवन में एक रुपान्तरण घटित हो जाता है अतः स्वाध्याय एक रसायन और पारसमणि है। साध्वी मधुर लता जी ने प्रेरक मधुर गीत 'करो स्वाध्याय स्वाध्याय बड़ा आनन्द आयेगा' गीत से धर्मसभा को प्रेरणा दी। दिल्ली तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बिमल बैंगणी आदि ने सेवा उपासना का पूरा लाभ लिया।

पर्युषण अध्यात्म की ऊंचाइयों को छूने का पर्व

चेम्बूर।

स्वाध्याय दिवस पर विशेष आराधना के अवसर पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए विदुषी साध्वी निर्वाणश्रीजी ने कहा - भगवान महावीर ने पराक्रम व पुरुषार्थ को सर्वाधिक महत्त्व दिया।

उन्होंने कहा - 'पुरिसा! परक्कमेज्जा' हे पुरुष तुम पराक्रम करो। भगवान ने जैसे काल, स्वभाव, नियति, कर्म और

पुरुषार्थ - इन पाँच तत्त्वों के आधार पर हर घटना की व्याख्या की है। ये पाँच समवाय हर संसारी प्राणी के साथ जुड़े हुए हैं। तत्त्व की ये बातें हमें शास्त्र-अध्ययन या प्रवचन श्रवण से जानने मिलती है।

साध्वीश्री योगक्षेमप्रज्ञाजी ने अपने वक्तव्य में कहा - पर्युषण महापर्व अध्यात्म की ऊँचाइयों को छूने का पर्व है। तीर्थकरों का चरित्र वह प्रेरणा प्रदीप है जो सघन अंधकार में भी नया प्रकाश

- नया उल्लास पैदा करता है। भगवान ऋषभ की तरह भवों की यात्रा आत्म विकास की विलक्षण यात्रा है। इसका श्रवण करने से हम भी ऊर्ध्वारोहण कर सकते हैं।

साध्वी कुंदनयशजी ने स्वाध्याय की महत्ता प्रतिपादित करते हुए स्वाध्याय की प्रेरणा दी। साध्वी मुदितप्रज्ञाजी ने 'श्रुत सागर लहराए' गीत की मधुर संगीतमय प्रस्तुति दी। मंच संचालन रीना धाकड़ ने किया।

पर्युषण महापर्व आराधना

नोखा।

प्रवक्ता उपासक विनोद बोरडिया ने कहा कि धर्म से आत्मा की शुद्धि होती है। व्यक्ति को बुढ़ापा आने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए, बल्कि बचपन और जवानी से ही धर्म एवं संयम के संस्कार जीवन में उतारने चाहिए।

उन्होंने कहा कि धर्म के लिए अलग

से समय निकालना आवश्यक नहीं है। जहाँ भी समय मिले, वहाँ पाँच-दस मिनट जप, ध्यान और स्वाध्याय किया जा सकता है। उपासक रतनलाल मेहता ने कहा कि पर्युषण महापर्व में ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की साधना-आराधना करनी चाहिए। धर्म ही जीवन में साथ चलने वाला है, धन साथ नहीं जाएगा। उन्होंने भोजन के प्रति विवेक

रखने की प्रेरणा देते हुए कहा कि भोजन शरीर की आवश्यकता है, इसलिए दूंस-दूंसकर तामसिक भोजन करने से बचना चाहिए। विवेकपूर्ण एवं सीमित भोजन स्वास्थ्यवर्धक होता है।

छोटे-छोटे त्याग भी जीवन के कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। उन्होंने भगवान महावीर की वाणी एवं उनके उपदेशों का भी वर्णन किया।

तपोमय तेरापंथ - जहाँ हर कण में है साधना की गूँज

स्वाद नहीं, संयम है लक्ष्य

विजयनगर, बैंगलोर।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि विनीत कुमार जी एवं मुनि पुनीत कुमार जी के पावन सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान का आयोजन किया गया। अध्यक्षा महिमा पटावरी ने सभी का स्वागत किया। जैन धर्म में आयंबिल को विशिष्ट तप के रूप में माना गया है। इसमें साधक दिन में एक बार केवल सदा उबला हुआ और नीरस भोजन

करता है, इसमें सभी प्रकार के रस युक्त और गरिष्ठ पदार्थों का त्याग किया जाता है। इस तप का उद्देश्य शरीर को कष्ट देना नहीं बल्कि भोजन और स्वाद के प्रति आसक्ति को समाप्त कर आत्मिक शुद्धि प्राप्त करना है। महिला मंडल द्वारा आयोजित इस अनुष्ठान में 72 भाई-बहनों ने सामूहिक रूप से आयंबिल तप लिया। तप अनुष्ठान के सफल आयोजन में संयोजिका निवर्तमान अध्यक्ष मंजू गदिया एवं अनीता पटावरी का श्रम विशेष रूप से योग्य बना।

आयंबिल तप - भाव शुद्धि और आत्मिक उन्नति का माध्यम

तिरुपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित, साध्वी सिद्धप्रभा जी के सान्निध्य में तिरुपुर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में सामूहिक आयंबिल तप का आयोजन श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साहपूर्वक किया गया। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के पावन अवसर पर साध्वी श्री जी ने श्रीकृष्ण के जीवन एवं आध्यात्मिक जुड़ाव के माध्यम से आयंबिल तप की महत्ता समझाते हुए इसके आध्यात्मिक लाभ, आत्मशुद्धि एवं कर्मनिर्जरा पर प्रकाश डाला। उन्होंने तप को केवल शरीर

की साधना न मानकर भावों की शुद्धि एवं आत्मिक उन्नति का माध्यम बनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर 28 भाई-बहनों ने आयंबिल तप में सहभागिता की। विशेष आकर्षण रहे ज्ञानशाला के नन्हे बच्चों, जिन्होंने भी आयंबिल तप कर सुंदर आध्यात्मिक संस्कारों का परिचय दिया। साध्वी श्री जी ने बच्चों की सहभागिता की सराहना करते हुए कहा कि बचपन से मिले धर्म एवं तप के संस्कार जीवनभर साथ रहते हैं। कार्यक्रम की सफलता में तिरुपुर तेरापंथ महिला मंडल की कमेटी की सभी बहनों का समय, श्रम, समर्पण एवं सहयोग सराहनीय रहा।

आत्मा का स्नान है तपस्या

ट्रिप्लीकेन, चेन्नई।

तेरापंथ भवन, ट्रिप्लीकेन में आचार्यश्री महाश्रमण के सुशिष्य मुनि डॉ. पुलकितकुमार ठाणा- 2 के सान्निध्य में अणुव्रत समिति अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत के कंठी तप का अभिनन्दन समारोह समायोजित हुआ। डॉ. मुनि पुलकितकुमारजी ने कहा कि जैन आगमों में आभ्यंतर और बाह्य तपस्या का विशेष उल्लेख है। तप करने से आत्मा सरल और निष्पाप बनती है, तपस्या आत्मा का स्नान है। जिस प्रकार तेज हवा से सघन बादल छिन्न-भिन्न हो जाते हैं, उसी प्रकार तपस्या के द्वारा पापमय बादल विलीन हो जाते हैं। मुनिश्री ने आगे कहा कि तप मोक्ष मार्ग का सबल साधन है। तपस्या कर्म निर्जरा का प्रबल हेतु है, इससे मनोबल बढ़ता है और आध्यात्मिक उन्नति

होती है। मुनिश्री ने कहा सुभद्राजी तपस्या करते हुए भी अणुव्रत समिति के कार्यक्रमों में सक्रियता से सहभागी रहती थी। चातुर्मासिक तपोत्सव के अंतर्गत उन्होंने 43 दिवसीय कंठी तप जैसी विशिष्ट तपस्या की भेंट दी है, आपके आध्यात्मिक मंगलमय जीवन की शुभकामना। नचिकेता मुनि आदित्यकुमार ने तपस्या की अनुमोदना में गीत प्रस्तुत किया। ट्रिप्लीकेन ट्रस्ट बोर्ड की ओर से गौतमचंद सेठिया ने अभिनन्दन स्वर प्रस्तुत करते हुए प्रबंध न्यासी संतोष धारीवाल के साथ तपस्वी का अभिनन्दन किया। संचालन अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष स्वरूपचन्द दाँती ने किया। ट्रिप्लीकेन तेरापंथ महिला मण्डल, अणुव्रत समिति, तेरापंथ प्रोफेशनल फॉर्म राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिनेश धोका, तेरापंथ सभा चेन्नई द्वारा साहित्य, मोमेंटो से सम्मान किया गया।

तप सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम

मदुरै।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के कुशल निर्देशन में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'आयंबिल तप अनुष्ठान' श्रद्धा एवं आध्यात्मिक भावनाओं के साथ आयोजित किया गया। इस पावन अनुष्ठान में तेरापंथ महिला

मंडल की 22 बहनों ने उत्साह, भक्ति एवं निष्ठा के साथ सहभागिता करते हुए आयंबिल तप ग्रहण किया।

इस अवसर पर तप एवं साधना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया गया कि तपस्या आत्मशुद्धि, मानसिक शांति तथा जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। अनुष्ठान के माध्यम

से बहनों ने संयम, त्याग, विवेक एवं आत्म-साधना के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। तप और साधना के प्रति महिला मंडल की बहनों का यह समर्पण, त्याग भावना एवं आध्यात्मिक ऊर्जा समाज के लिए प्रेरणादायी रही। उक्त जानकारी तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा दीपिका फुलफगर ने दी।

आयंबिल सिखाता है सुख स्वाद में नहीं संयम में है

गुवाहाटी।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी के पावन सान्निध्य एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तेरापंथ धर्मस्थल में सामूहिक आयंबिल तप अनुष्ठान का आयोजन संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम महिला मंडल की

अध्यक्ष सुशीला मालू की अध्यक्षता एवं मंत्री सुचित्रा छाजेड़ की देखरेख में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुनि श्री ने उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए कहा कि आयंबिल हमें सिखाता है कि जीवन में सुख केवल स्वाद और सुविधाओं में नहीं, बल्कि संयम, त्याग और आत्मानुशासन में है। इसलिए आयंबिल तप केवल भोजन की पद्धति नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, कर्मनिर्जरा और

आत्मबल को जागृत करने की साधना है। जैन धर्म में तपस्या का अत्यंत महत्व है और आयंबिल तप को तपस्या की एक विशिष्ट एवं प्रभावशाली तप माना गया है। लगभग 91 बहनों ने इस तप में भाग लेकर अपनी कर्म निर्जरा की साधना की। कार्यक्रम में अभातेमम की कार्यकारिणी सदस्य सुनीता गुजरानी एवं विशेष आमंत्रित सदस्य शिखा बोथरा की गरिमामय उपस्थिति रही।

आयंबिल तप के प्रभाव से सुरक्षित रही द्वारिका

चेम्बूर।

आचार्यश्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या साध्वी निर्वाण श्रीजी ठाणा-6 के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल, चेम्बूर द्वारा सामूहिक आयंबिल अनुष्ठान का आयोजन किया गया। साध्वी निर्वाण श्रीजी ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को आयंबिल तप की प्रेरणा देते हुए कहा कि

आयंबिल अनासक्ति का प्रयोग है। उन्होंने कहा कि जहाँ अनेक भाई-बहन लंबी-लंबी तपस्याएँ करते हैं, वहीं एक दिन अस्वाद का स्वाद लेना भी आवश्यक है। साध्वी योगक्षेम प्रभाजी ने श्रीकृष्ण एवं द्वारिका की घटना का विस्तार से वर्णन करते हुए बताया कि किस प्रकार आयंबिल तप के प्रभाव से द्वारिका नगरी सुरक्षित रही। साध्वी निर्वाण श्रीजी ने इस अवसर पर

उपस्थित सभी को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी करवाया। साध्वीश्रीजी का प्रेरणापाथेय प्राप्त कर सभी भाई-बहनों ने उत्साह एवं श्रद्धा के साथ आयंबिल अनुष्ठान में सहभागिता निभाई। इस अवसर पर बहनों के साथ-साथ तेरापंथ सभा चेम्बूर के अध्यक्ष लक्ष्मण कोठारी, मंत्री दिलीप मेहता सहित अन्य भाइयों ने भी आयंबिल तप कर आध्यात्मिक निर्जरा की।

अध्यात्म की यात्रा इन्द्रिय विजय से प्राप्त होती है

उत्तर हावड़ा।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में सामूहिक आयंबिल कार्यक्रम का आयोजन योगक्षेम विहार के योगक्षेम सभागार में तेरापंथ महिला मंडल उत्तर हावड़ा द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें वृहत्तर कोलकाता की तेरापंथ महिला मंडल, दक्षिण कोलकाता, दक्षिण हावड़ा, पूर्वांचल, टॉलीगंज, बेहाला, साल्टलेक, मध्य कोलकाता, लिलुआ, बाली-बेलूर, उत्तरपाड़ा, हिन्दमोटर, रिषड़ा की विशेष सहभागिता

रही। सामूहिक आयंबिल में सभी क्षेत्रों के कुल 230 भाई-बहनों ने आयंबिल तप कर अपनी सहभागिता दर्ज की। इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा — अध्यात्म जगत की यात्रा इन्द्रिय विजय से प्राप्त होती है। इन्द्रिय विजय की साधना रसनेन्द्रिय के संयम से होती है। रसनेन्द्रिय संयम का महत्वपूर्ण माध्यम है तप साधना। तपों में एक विशिष्ट तप है आयंबिल। आयंबिल स्वाद विजय की साधना व ऊनोदरी तप है। इसमें एक धान का भोजन ग्रहण किया जाता है। एकासन की तरह शेष विधि है। इसमें सभी रसों का त्याग किया जाता है इसलिए इसे रस परित्याग

तप में भी शामिल किया जा सकता है। आयंबिल से अनेक रोगों का शमन हो सकता है। आयंबिल तप के कारण द्वारिका नगरी द्वीपायन ऋषि के कोप से 12 वर्ष तक बची रही। सभी आयंबिल तपस्वियों के प्रति मंगलकामना। इस अवसर पर मुनि परमानंद ने जप अनुष्ठान कराते हुए अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की कार्यसमिति सदस्या रमण पटवारी, पुखराज सेठिया, तेरापंथ महिला मंडल उत्तर हावड़ा की अध्यक्षा सुजाता दुगड़ व सरिता राखेचा ने सभी तपस्वियों के प्रति अपनी मंगलभावनाएं संप्रेषित की व आभार व्यक्त किया।

ज्ञानशाला : विनय और संस्कार के बीज से भविष्य का वटवृक्ष

प्रशिक्षिकाओं का निष्काम सेवा भाव निर्जरा का महान कार्य

तिरुपुर।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी सिद्ध प्रभा जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रणजीत सिंह बरडिया ने सभी आदरणीय अतिथियों का भावभीना स्वागत एवं अभिनंदन किया। समारोह को संबोधित करते हुए साध्वी सिद्धप्रभा जी ने कहा कि ज्ञानशालाएँ पूज्य गुरुदेव की असीम अनुकंपा से निरन्तर विस्तार पा रही हैं। उन्होंने प्रशिक्षिकाओं के निष्काम सेवा भाव की सराहना करते हुए कहा कि बिना किसी स्वार्थ के बच्चों को धर्म और संस्कारों से जोड़ना निर्जरा का महान कार्य है। उन्होंने अभिभावकों से अपने बच्चों को नियमित ज्ञानशाला भेजने का आह्वान किया। अपने प्रेरणादायी संदेश में साध्वी दीक्षाप्रभा जी ने कहा कि आज के

डिजिटल युग में जहाँ बच्चे मोबाइल और अन्य भटकावों से घिरे हैं, वहीं ज्ञानशाला ही उन्हें अपनी जड़ों, नैतिक मूल्यों और सात्विक वातावरण से जोड़कर रखने का सबसे सशक्त माध्यम है।

यहाँ ज्ञान के साथ-साथ बच्चों की कलात्मक और बहुमुखी प्रतिभा को निखारा जाता है। मीडिया प्रभारी चेतन बरडिया ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुत कंठस्थीकरण एवं ज्ञान आराधना कार्यक्रम रही, जिसमें बच्चों ने अपनी अद्भुत स्मरण शक्ति और आध्यात्मिक लग्न से सभी को अचंभित कर दिया।

साध्वी आस्थाप्रभा जी एवं साध्वी दीक्षाप्रभा जी के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का प्रभावशाली मंच संचालन ज्ञानार्थी सृष्टि खटेड़ एवं उत्कर्ष कोठारी द्वारा किया गया।

भविष्य के श्रावक गढ़ रही है ज्ञानशाला

जसोल।

ज्ञानशाला प्रकोष्ठ महासभा द्वारा निर्देशित ज्ञानशाला दिवस का भव्य आयोजन स्थानीय पुराणा ओसवाल भवन में साध्वी कुन्दनप्रभा जी आदि ठाणा सान्निध्य में किया गया। छोटे-छोटे बच्चों ने A.B.C.D की सुन्दर प्रस्तुति दी। देवलोका की अदालत पर परिसंवाद किया गया। साथ ही नन्हे-मुन्हे बच्चों द्वारा नमस्कार महामंत्र पर नृत्य की प्रस्तुति पर सभी का मन मोह लिया। चमेली मार्केट, योग-प्राणायाम एवं वृद्धआश्रम पर सुन्दर प्रस्तुति दी गयी। साध्वी विधुतप्रभा जी

ने कहानी के माध्यम से बच्चों को प्रेरित किया ज्ञानार्थियों को नये-नये आयामों की जानकारी दी। जसोल ज्ञानशाला प्रभारी दुंगरचन्द सालेचा, सम्पतराज चोपड़ा, पुष्पा देवी बुरड ने अपने विचार प्रस्तुत किये। ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका अभयमति डोसी ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला में श्रेष्ठ ज्ञानार्थी के रूप में शान्या सालेचा को सम्मानित किया गया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं को तेरापंथ सभा की ओर से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन जयश्री सालेचा व श्यामल गोलेच्छा ने किया।

बच्चों में आध्यात्मिक ज्ञान के बीज बोती है ज्ञानशाला

सेलम।

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। साध्वी संयमलताजी ने ज्ञानशाला को बच्चों में आध्यात्मिक ज्ञान एवं संस्कारों के बीजारोपण का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। साध्वी मार्दवश्रीजी ने बच्चों को चैतन्य केंद्र प्रेक्षा ध्यान करवाते हुए ध्यान के माध्यम से सकारात्मक ऊर्जा, शांति एवं एकाग्रता से जीवन में आगे बढ़ने

का संदेश दिया। सभा अध्यक्ष प्रवीण बोहरा ने ज्ञानशाला के महत्व पर अपने विचार रखे और बच्चों को धर्म से जुड़े रहने की प्रेरणा दी। प्रशिक्षिकाओं द्वारा मधुर गीतिका तथा बच्चों द्वारा अनावश्यक उपभोग से बचने एवं आवश्यकता अनुसार खरीदारी का संदेश देती सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई। अपनी ज्ञानशाला में याद किए हुए सूत्र अष्टकम, बोल, भक्तांबर ईर्यापथिक सूत्र आदि की मनभावन प्रस्तुति दी। संचालन साध्वी मार्दवश्रीजी ने किया तथा साधना सिंघवी ने आभार ज्ञापन किया।

संस्कार संवर्धन की शाला : ज्ञानशाला

चेन्नई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में ट्रिप्लीकेन एवं किलपाँक दोनों क्षेत्रों में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन, ट्रिप्लीकेन में मुनि डॉ. पुलकित कुमार जी ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन हुआ। मंगल उद्बोधन में मुनिश्री ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा— बच्चों में सद्गुणों के विकास एवं सद्गति के लिए धार्मिक ज्ञान और संस्कारों की अत्यंत आवश्यकता है। सच्चे एवं अच्छे संस्कार हमें न केवल एक-दूसरे से जोड़ते हैं, बल्कि जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देते हैं। धार्मिक ज्ञान एवं संस्कार जीवन में दुर्गुणों से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः अभिभावक अपने बच्चों को ज्ञानशाला से जोड़ने एवं

नियमित रूप से ज्ञानशाला भेजने का प्रयास करें। मुनिश्री ने उपस्थित ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं द्वारा ज्ञानशाला में सेवाएँ देने के कार्य की अनुमोदना भी की। चेन्नई सभा अध्यक्ष महेंद्र मांडोट और राजेश सांड ने सभी प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि दोनों ही क्षेत्रों में कार्यक्रम सफल, मंगलमय एवं शानदार रूप से संपन्न हों तथा सभी के अथक प्रयास सार्थक हों— यही मंगलकामना है। ट्रिप्लीकेन ट्रस्ट के अध्यक्ष संतोष धारीवाल ने ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं को बधाई दी। ज्ञानशाला आंचलिक सह-संयोजिका चेतना बोहरा ने ज्ञानशाला प्रकोष्ठ की ओर से प्रशिक्षिकाओं को आवश्यक एवं महत्वपूर्ण जानकारीयों प्रदान कीं। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार जी ने ज्ञानशाला प्रेरणा गीत प्रस्तुत किया। तांबरम ज्ञानशाला ने जैन संस्कार विधि से

जन्मदिन कैसे मनाएँ, रायपुरम् ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने दान का महत्व, ट्रिप्लीकेन ज्ञानशाला के बच्चों ने आचार्य भिक्षु के दृष्टांत, पट्टालम ज्ञानशाला ने स्पाइडर-मैन एवं बैटमैन के माध्यम से अहिंसा का संदेश, साहूकारपेट ज्ञानशाला ने ज्ञानशाला जाने का प्रभाव, पुरानी धोबीपेट ज्ञानशाला ने पाँच महाव्रतों का विश्लेषण, वड़पलनी ज्ञानशाला के बच्चों ने जीवन में संस्कारों का महत्व, तथा ईएमआर ज्ञानशाला ने पर्युषण महापर्व की आराधना विषय पर प्रभावशाली अभिनय प्रस्तुत कर उपस्थित सभी का मन मोह लिया। संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएं मधु चोरडिया एवं कुसुमलता चोरडिया ने किया। चेन्नई क्षेत्र की 25 ज्ञानशालाओं में से 13 ज्ञानशालाओं के लगभग 150 ज्ञानार्थियों एवं 60 प्रशिक्षिकाओं की उत्साहपूर्वक सहभागिता रही।

संस्कार वह दीप है जो जीवन की राह को रोशन करता है

पर्वत पाटीया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा द्वारा आयोजित ज्ञानशाला दिवस तेरापंथ भवन पर्वत पाटीया में शासनश्री साध्वी मधुबाला जी आदि ठाणा-5 के सान्निध्य में व तेरापंथी सभा पर्वत पाटीया के निर्देशन में ज्ञानशाला दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्वागत वक्तव्य सभा अध्यक्ष संजय बोहरा द्वारा किया गया। साध्वी मेधावी प्रभा जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए

एक रोचक घटना बताई और साध्वी मंजुलयाशा जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि संस्कार वह दीप है जो जीवन की राह को रोशन करता है। बच्चों को संस्कारित करना आज की पीढ़ी में बहुत जरूरी हो गया है। सभी अभिभावकों को बच्चों को ज्ञानशाला में भेजने के लिए प्रेरित किया। ज्ञानार्थियों द्वारा प्रस्तुति के क्रम में सर्वप्रथम बच्चों द्वारा संस्कारों की रेल चली कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुति हुई। मुख्य प्रशिक्षिका खुशबू पींचा द्वारा ज्ञानशाला की गति प्रगति से अवगत

करते हुए ज्ञानशाला प्रारम्भ से लेकर वर्तमान में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ महासभा द्वारा जो तीन मुख्य आयाम चलाये गए हैं ज्ञानोत्कर्ष, ज्ञानोदय और ज्ञान प्रकर्ष को समझाते हुए सभी गतिविधियों से अवगत कराया। ज्ञानशाला राष्ट्रीय संयोजक सोहन राज चोपड़ा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ समिति के सदस्य प्रवीण जी मेड़तवाल आदि की गरिमामय उपस्थिति रही कार्यक्रम का कुशल संचालन सह प्रशिक्षिका सीमा बाबेल एवं रचना नौलखा द्वारा किया गया।

ज्ञानशाला में जीवंत हुआ आचार्य तुलसी का जीवन वृत्तांत

दक्षिण मुंबई।

ज्ञानशाला दिवस पर ज्ञानशाला परिवार द्वारा पूरे उत्साह और उमंग के साथ सहभागिता निभाई, वहीं प्रशिक्षिकाओं एवं पदाधिकारियों की सहभागिता ने रैली की शोभा और बढ़ा दी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'तीर्थंकर अर्चना' से कार्यक्रम की मंगल शुरुवात की नन्हे-मुन्हे ज्ञानार्थियों की सुंदर प्रस्तुति ने वातावरण को भक्तिमय बना दिया ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी सुंदर प्रस्तुतियों से आचार्यश्री तुलसी के जीवन परिचय को जीवंत कर दिया उनके जीवन की प्रेरणादायी छोटी-छोटी घटनाओं पर आधारित नाट्य प्रस्तुतियों

ने सभी को ईमानदारी, सत्य एवं संस्कार का सुंदर संदेश दिया प्रशिक्षिकाओं ने भिक्षु स्वामी के जीवन एवं संदेश पर आधारित गीतिका प्रस्तुत की सुमधुर स्वर, भावपूर्ण अभिव्यक्ति और सुंदर प्रस्तुति ने पूरे वातावरण को भक्तिरस से भर दिया टीचर्स डे के अवसर पर ज्ञानशाला के बच्चों ने अपनी प्रशिक्षिकाओं को कंठस्थ ज्ञान का अनोखा उपहार दिया। बच्चों ने लोगस्स, इर्यापथिक सूत्र, वंदना सूत्र आदि का सुंदर एवं आत्मविश्वासपूर्ण वाचन कर अपनी गुरुजन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की पूर्व ज्ञानार्थी शालीन बरमेचा ने टीचर्स डे पर सभी प्रशिक्षिकाओं को बधाई दी एवं अपना ज्ञानशाला का सुहाना सफ़र सभी के साथ

साझा किया ज्ञानशाला परिवार के लिए गौरव का क्षण रहा दीपलता निमजा द्वारा विशारद परीक्षा उत्तीर्ण करने पर उनका सम्मान किया गया। विजयश्री डागलिया ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी उपलब्धि ज्ञानशाला परिवार के लिए प्रेरणा एवं प्रसन्नता का विषय बनी। कार्यक्रम में महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़, सभा अध्यक्ष देवेंद्र डागलिया, मंत्री पवन बोलिया, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष सुमित सुराना, महिला मंडल अध्यक्षा लतिका डागलिया की गरिमामय उपस्थिति रही। संचालन दक्षिण मुंबई सह ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका रेणु बोलिया ने किया।



ज्ञानशाला : विनय और संस्कार के बीज से भविष्य का वटवृक्ष

सब कुछ होते हुए भी इंसान खुश क्यों नहीं?

मदुरै।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद एवं तेरापंथ धर्मसंघ की प्रेरणा से मदुरै तेरापंथ भवन में ज्ञानशाला दिवस का भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन श्रद्धा, उत्साह एवं उल्लास के साथ किया गया। ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता कोठारी ने सभी का स्वागत किया। ज्ञानशाला प्रभारी उपासक धनराज लोढ़ा ने कहा कि ज्ञानशाला में बच्चों को केवल धार्मिक एवं बुनियादी शिक्षा ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्य, अनुशासन, संस्कार एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का भी ज्ञान प्रदान किया जाता है। वहीं बालकों ने श्रेणिक महाराज पर आधारित लघु प्रेरणादायी नाटिका प्रस्तुत की। नाटिका के माध्यम से बताया गया कि संतोष ही सच्चा धन है, जो जैन धर्म

की महत्वपूर्ण सीख है। नाटिका में यह भी दर्शाया गया कि किस प्रकार एक साधारण कुम्हार ने राजा श्रेणिक के अभिमान को दूर किया। बड़े बच्चों ने 'सब कुछ होते हुए भी इंसान खुश क्यों नहीं है?' विषय पर प्रभावशाली प्रस्तुति देकर उपस्थितजनों को आत्मचिंतन एवं जीवन के वास्तविक सुख पर विचार करने का संदेश दिया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष गौतमचंद गोलछा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष संदीप बोकड़िया, महिला मंडल अध्यक्ष दीपिका फूलफगर, उपासक श्री नैनमल कोठारी ने अपने भाव व्यक्त किए कुशल संचालन ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा किया गया। अंत में मधु पारख ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता कोठारी ने दी।

बच्चे देश और समाज का फ्यूचर इन्वेस्टमेंट हैं

राजराजेश्वरीनगर, बेंगलुरु।

तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि आकाश कुमार जी एवं मुनि हितेन्द्र कुमार जी के पावन सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। मुनि आकाश कुमार जी ने अपने मंगल उद्बोधन में बच्चों को प्रेरक कहानी के माध्यम से सत्य की राह पर चलने की प्रेरणा दी एवं अभिभावकों से कहा कि बच्चों को सर्वप्रथम संस्कार माता-पिता से ही मिलते हैं, फिर पाठशाला और ज्ञानशाला से बच्चे संस्कारित होते हैं। मुनि श्री ने बच्चों को future investment बताया जो कि परिवार समाज व देश के

लिए हितकारी है। मुनि हितेन्द्र कुमार जी ने बच्चों को बताया कि कैसे अच्छे संस्कारों को आत्मसात कर व कैसे अच्छा जीवन जियें। सभाध्यक्ष कमलसिंह दूगड़ ने ज्ञानशाला को समग्र समाज का सर्वश्रेष्ठ उपक्रम बताया एवं इसके लिए आचार्य श्री तुलसी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। महासभा के कार्यसमिति सदस्य राकेश छाजेड़ ने कहा कि आचार्य श्री महाश्रमण जी का ज्ञानशाला के प्रति सर्वाधिक रुझान रहता है। ज्ञानशाला प्रभारी प्रकाश बैद ने अपने विचार व्यक्त किये। ज्ञानशाला संयोजिका नीतू बाफना ने सभी का स्वागत किया एवं अभिभावकों को अपने बच्चों को ज्ञानशाला भेजने के लिए प्रेरित किया।

ज्ञानशाला ज्ञान का मंदिर व संस्कार शाला है

भुवनेश्वर, उड़ीसा।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा-ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन भुवनेश्वर ज्ञानशाला में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। सभाध्यक्ष रणजीत सिंघ बैद, सभा मंत्री वीरेंद्र बेताला, झारखंड-ओडिशा ज्ञानशाला सह-प्रभारी

एवं तेरापंथ युवक परिषद, भुवनेश्वर के अध्यक्ष जितेंद्र बैद तथा तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा सुशीला सेठिया की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला संयोजिका संतोष सेठिया ने भाव प्रस्तुत किए।

ज्ञानशाला सहयोगी राहुल दुगड़ का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन पूर्व ज्ञानशाला संयोजिका नयनतारा सुखाणी ने किया।

ज्ञानशाला की उन्नति ही देश की उन्नति है

गंगाशहर।

साध्वी त्रिशलाकुमारी जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन किया गया। ज्ञानार्थियों द्वारा ज्ञानशाला गीत द्वारा मंगल शुरूआत हुई। गया। साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने बताया कि इन्हीं मे से कई बच्चे साधु साध्वी बनेंगे। राजनीति में जाएंगे इस फैक्ट्री में अच्छे बच्चों का निर्माण होता है। आप अपने बच्चों को कार दे या न दे लेकिन अच्छे संस्कार जरूर दे। साध्वी कल्पयशा ने कहा कि हमारे बच्चे कोरे कागज के समान है आप

बच्चों को जैसा चाहो वैसा बना सकते हैं। यहाँ सम्यक ज्ञान मिलता है। पुस्तकीय ज्ञान से जीविका मिल सकती है लेकिन जीवन नहीं मिल सकती है लेकिन जीवन नहीं मिल सकता। माता पिता जागरूक बने ज्ञानशाला अवश्य भेजें। महिला मण्डल अध्यक्ष प्रेम बोथरा ने बताया कि मिट्टी में ऐसे बीजों का बीजारोपण करें कि वह वट वृक्ष बनकर फूलों व फलों से महके। हमारे समाज का प्रत्येक बच्चा ज्ञानशाला से अवश्य जुड़े। ते.यु.प. के अध्यक्ष देवेन्द्र डागा ने कहा कि उत्कृष्ट ज्ञानशाला कैसे बने ? उस और समाज

के व्यक्ति प्रशिक्षका सभी ध्यान दें तब समाज को नई दशा और दिशा मिलेगी। ज्ञानशाला प्रभारी चैतन्य रांका ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। सभा मंत्री जतन संचेती ने कहा कि हमारा लक्ष्य है 500 बच्चों की गंगाशहर की ज्ञानशाला हो कम से कम 50 प्रशिक्षिका व ते.यु.प ते.म.मं. के कार्यकर्ता जुड़े। धर्मसंघ के विकास की जड़ है ज्ञानशाला के बच्चे। ज्ञानशाला दिवस का सफल संचालन सुनीता पुगलिया ने किया ज्ञानशाला की उन्नति देश की उन्नति है। आभार ज्ञापन श्रीया गुलगुलिया ने किया।

ज्ञानशाला के बच्चे धर्मसंघ के भावी कर्णधार हैं

गुवाहाटी।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी ठाणा - 2 के पावन सान्निध्य में ज्ञानशाला दिवस का आयोजन उत्साह एवं आध्यात्मिक वातावरण में किया गया। मुख्य प्रशिक्षिका ललिता मालू द्वारा स्वागत वक्तव्य तथा सभा अध्यक्ष रितेश खटेड़ द्वारा अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर मुनि विकास कुमार जी ने ज्ञानशाला पर अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में 'गुरु दर्शन यात्रा—लाडनू के सुनहरे

पल' विषयक वीडियो क्लिप के माध्यम से ज्ञानशाला परिवार की भावनाओं को प्रस्तुत किया गया। आभार ज्ञापन पिकी पटावरी ने किया। मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने प्रेरणादायी उद्बोधन में कहा कि 'ज्ञानशाला केवल पढ़ने-पढ़ाने का केंद्र नहीं, बल्कि संस्कारों के जागरण की शाला है। यहां बच्चों को ज्ञान के साथ जीवन जीने की कला, अनुशासन, विनय, सदाचार और आध्यात्मिक चेतना के संस्कार दिए जाते हैं।' उन्होंने कहा कि बाल्यावस्था में मिले संस्कार जीवनभर साथ चलते हैं। इसलिए ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण का जो कार्य हो रहा है, वह समाज

और धर्मसंघ के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला है। मुनिश्री ने कहा कि ज्ञानशाला के बच्चे आज के विद्यार्थी ही नहीं, कल के संस्कारी नागरिक एवं धर्मसंघ के भावी कर्णधार हैं। अभिभावकों और प्रशिक्षिकाओं का दायित्व है कि वे बच्चों में केवल धार्मिक जानकारी ही नहीं, बल्कि आचार्य परंपरा के प्रति श्रद्धा, गुरु के प्रति विनय और जीवन में अहिंसा, संयम एवं सद्भावना को उतारने की प्रेरणा दें। उन्होंने ज्ञानशाला के इस रचनात्मक एवं संस्कारपरक उपक्रम से अधिकाधिक बच्चों को जोड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम की संयोजिका संगीता बैद एवं स्वाति सुराणा रहीं।

हेलीकॉप्टर पेरेंटिंग न करें, बच्चों को क्वालिटी टाइम दें

बालोतरा।

ज्ञानशाला दिवस' के दिन POWER of Parenting विषय पर कार्यशाला में उपस्थित विशाल परिषद को सम्बोधित करते हुए प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- ज्ञानशाला तेरापंथ धर्मसंघ की एक विशिष्ट इकाई है। किशोर कन्या, युवक, सभा आदि के सदस्यों की निर्माण शाखा है। पदाधिकारीगण, प्रशिक्षण इस भावी बाल पीढ़ी के लिए अपने श्रम और समय का नियोजन करते हैं, प्रशिक्षक परिवार की निःशुल्क सेवा अनुमोदनीय है। बच्चों को जिंदगी को सजाने और संवारने का दायित्व अभिभावक माता-पिता पर निर्भर है। मदांलसा, जीजाबाई जैसी माताओं के बच्चे इतिहास पुरुष बन गए। जरूरत है आज हर अभिभावक अपनी संतानों को संस्कारित

करने हेतु जागरूक बनें। पश्चिम संस्कृति की हवा से बच्चों को बचाएं। ज्ञानशाला एक महत्वपूर्ण उपक्रम है, जहां बच्चों के जीवन विकास के लिए खुला अवकाश है। आज अभिभावकों की अजागरूकता और समयाभाव के कारण संस्कारों की होली जल रही। बोया हुआ अच्छा या खराब बीज असर करता है। साध्वीश्री ने कहा- माता पिता हेलीकॉप्टर पेरेंटिंग न करें। अपने बच्चों को आत्मविश्वास एवं समझदार बनाइए। उनको क्वालिटी टाइम दीजिए। टी.वी. के गलत विज्ञापन भी बच्चों को बिगाड़ते हैं। इस अवसर पर ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने 'ज्ञानशाला हमारी' गीत का सुन्दर संगान किया। हनुमान लुंकड ने जैन विद्या अध्ययन की प्रेरणा दी। तेरापंथ सभा मंत्री एवं ज्ञानशाला के पूर्व संयोजक मोहनलाल बाफना, ज्ञानशाला संयोजक

पवन बालड़ मुख्य प्रशिक्षक पिकी सालेचा ने अपने अपने विचारों को व्यक्त की। तेरापंथी महासभा द्वारा 2026 का श्रेष्ठ ज्ञानार्थी मोक्ष बालड़ एवं पूर्व ज्ञानार्थी प्रियांशी सालेचा ने ज्ञानशाला को अपने जीवन का अति सुन्दर वरदान बताते हुए ज्ञानशाला परिवार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के संसार पक्षीय भाई सुरेन्द्र सेठिया ने आयोजन की सराहना की साथ ही अपने भाग्य की सराहना करते हुए कहा साध्वी मंगलप्रज्ञा जी को लाडनू में गुरुदेव ने हाजरी प्रवचन के अवसर पर जो कृपा प्रसाद मिला उससे हमारा पूरा परिवार अभिभूत है, हम सभी गुरु इंगित की आराधना कर जीवन सार्थक करें। कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रशिक्षिका पिकी सालेचा एवं नीतू कांकरिया ने कुशलता से किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद
के प्रकाशनों के सदस्य बनें



₹ 1,200/-
(2 Years By Courier)

तेरापंथ टाइम्स
<https://terapanthtimes.com/>

युवादृष्टि
InGenious
Yuva

₹ 2,000/-
(2 Years By Courier)

₹ 2,000/-
(2 Years By Courier)

<https://abtyp.org/prakashan>



A/C : AKHIL BHARTIYA TERAPANTH YUVAK PARISHAD, PUBLICATION
ACCOUNT NO : 492001000092 BANK NAME : ICICI BANK
BRANCH : LADNUN MICR CODE : 341022075 IFSC CODE : ICIC0004920

सम्पर्क सूत्र

सदस्यता, पत्रिका प्राप्ति संबंधित शिकायत एवं पते आदि में परिवर्तन हेतु

महेश परमार-प्रभारी, प्रकाशन
+91 98921 21205

गौतम बरड़िया-सहप्रभारी, प्रकाशन
+91 99291 25932

कुलदीप मारू-सहप्रभारी, प्रकाशन
+91 94136 29024



अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
+91 89059 95001

सम्पर्क करें

अभातेयुप केन्द्रीय कार्यालय



अभातेयुप केन्द्रीय कार्यालय
Ladnunoffice@abtyp.org

॥नूतन चिंतन नया विकास, युवकों में जागे विश्वास॥

पृष्ठ 3 का शेष

आयो जैन-जगत रो...

तंद्रा की स्थिति में १० स्वप्न देखे, जिनका फल प्रभु ने स्वयं बताते हुए अण्णगर और अण्णर धर्म के निरूपण की बात कही। साधना में बेले से कम की तपस्या नहीं की।

चंदनबाला के कल्याण के पश्चात, जृम्भिकग्राम के बाहर ऋजुबालिका नदी के तट पर श्यामक गृहपति के खेत में शाल वृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ला दशमी को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में बेले के तप व गोदोहिका आसन में प्रभु ने केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त किया। ७२वें वर्ष में कार्तिक कृष्णा अमावस्या को भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए।

पूज्यश्री ने 'मिच्छामि दुक्कडं' लेते हुए वाचन संपन्न किया।

अपराह्न सत्र: तेरापंथ की गौरवशाली

आचार्य परंपरा का प्रामाणिक विवरण : १. स्वामी भिक्षु स्वामी व बगड़ी अभिनिष्क्रमण : अपराह्न ३ बजे पूज्य प्रवर पुनः पांडाल में पधारे और तेरापंथ की आचार्य परंपरा का वर्णन करते हुए फरमाया कि हमारे प्रथम आचार्य परम पूज्य भिक्षु स्वामी हुए। स्थानकवासी परंपरा में आचार-संवादिता न दिखने तथा राजनगर प्रसंग में रात्रि को तेज बुखार आने पर विशेष संवेग जाग्रत हुआ। भिक्षु स्वामी ने वि.सं. १८१७ में बगड़ी में अभिनिष्क्रमण किया। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को तेरापंथ स्थापना दिवस बना और केलवा में प्रथम

चातुर्मास हुआ। तत्पश्चात् आचार्यश्री ने प्रत्येक आचार्यश्री के संक्षिप्त विवरण व उनके कार्यकाल में हुए धर्मसंघ के विकास की व्याख्या प्रस्तुत की।

२. युवाचार्य श्री व साध्वी प्रमुखा जी का वक्तव्य : युवाचार्य महावीर कुमार जी ने क्षमाधर्म का विवेचन किया। अपराह्न सत्र में आचार्य श्री महाश्रमण जी के जीवन प्रसंगों का वर्णन करते हुए फरमाया कि पूज्य आचार्यश्री में पूर्ववर्ती सभी आचार्यों के गुणों के दर्शन होते हैं। युवाचार्यश्री ने पूज्यश्री को धर्मसंघ को नूतन दिशा देने वाला 'आर्किटेक्ट' बताया। साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभा जी ने भी संवत्सरी के महत्त्व पर विचार व्यक्त किए।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

21 सितम्बर - 27 सितम्बर 2026



19

अभातेयुप
60वां

संवर्धनम्

राष्ट्रीय अधिवेशन
दिनांक : 26-27-28 सितम्बर 2026



लाडनूं की पावन धरा
से 'संवर्धनम्' का शंखनाद

जड़ों से जुड़कर गढ़ेंगे नया इतिहास

प्रिय युवा साथियों....

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के इस गौरवशाली सफर में 60वां राष्ट्रीय अधिवेशन 'संवर्धनम्' केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि हमारी युवा ऊर्जा, समर्पण और निष्ठा का एक ऐतिहासिक महाकुंभ है।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि और अध्यात्म व शांति की तपोभूमि लाडनूं में होने जा रहा यह अधिवेशन हम सभी को हमारी जड़ों से पुनः जोड़ने का एक अनुपम अवसर प्रदान कर रहा है। लाडनूं की यह पावन धरा, जहाँ मन को शांति और जीवन को सही दिशा मिलती है, 26-27-28 सितम्बर को पूरे देश से जुटने वाली ऊर्जावान युवा शक्ति की साक्षी बनने जा रही है।

'संवर्धनम्' का सन्देश: संगठन का योगक्षेम—

'संवर्धनम्' का अर्थ है— निरंतर वृद्धि, पोषण और नए विचारों का विकास। अभातेयुप के मूल त्रिसूत्र—सेवा, संस्कार और संगठन—को नए आयाम देना ही इस अधिवेशन का ध्येय है। इस 'योगक्षेम वर्ष' में हमारा लक्ष्य केवल कार्य करना नहीं, बल्कि संघ, समाज और राष्ट्र के लिए अपनी निष्ठाओं को और अधिक सुदृढ़ करना है।

युवा शक्ति से आह्वान—

आज समाज और देश को एक ऐसी अनुशासित और समर्पित युवा पीढ़ी की आवश्यकता है जो अध्यात्म की नींव पर प्रगति की इमारत खड़ी कर सके। जब देश के कोने-कोने से हज़ारों युवा एक ध्येय और एक दिशा के साथ लाडनूं की धरा पर एकत्र होंगे, तब उस दिव्य ऊर्जा से समाज और धर्मसंघ में एक अभूतपूर्व क्रांति का सूत्रपात होगा।

आइए! हम सब मिलकर इस 60वें राष्ट्रीय अधिवेशन को एक यादगार अध्याय बनाएँ। अपनी जड़ों से जुड़ें, पूज्य गुरुदेव के चरण रज से ऊर्जा संचित करें और 'संवर्धनम्' के संकल्पों को आत्मसात कर नए उत्साह के साथ आगे बढ़ें।

पवन मांडीत

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद



52 बार खमत-खामणा!

शब्द शुद्ध न रहे हों, प्रूफ फुलप्रूफ न रहा हो, शब्द-चयन सम्यक न रहा हो, संपादन में प्रमाद हुआ हो...

समाचार समय पर न छपे हों, अखबार देर से पहुँचा हो, या बिल्कुल ही न पहुँचा हो, विज्ञापन मनोनुकूल न रहा हो...

वर्ष के 52 अंकों की हर भूल के लिए— 52 बार खमत-खामणा!

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार



सुधर्मा सभा में गूँजी वाणी संयम की पावन प्रेरणा

कम बोलें, मृदु बोलें; वाणी के संयम से संभव है कर्मों से मुक्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री ने सत्य धर्म पर दी भाव विशुद्धि की प्रेरणा

लाडनूँ।

11 सितम्बर, 2026

तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी लाडनूँ स्थित जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में पर्वधिराज पर्युषण का चतुर्थ दिवस 'वाणी संयम दिवस' के रूप में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, ज्योति पुंज आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में अगाध आध्यात्मिक गरिमा के साथ आयोजित हुआ।

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा : त्रिपृष्ठ का पराक्रम और अश्वग्रीव की चिंता:

१. अश्वग्रीव का हंता और चंडवेग का अपमान : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के अंतर्गत १८वें भव (पोतनपुर के राजकुमार त्रिपृष्ठ) का वर्णन आगे बढ़ाते हुए फरमाया कि ज्योतिषी ने प्रतिवासुदेव अश्वग्रीव को उसकी मृत्यु के दो लक्षण बताए थे— दूत चंडवेग का अपमान और हिंसक शेर का वध। पोतनपुर पहुँचे राजदूत चंडवेग का त्रिपृष्ठ ने मनोरंजन में बाधा पड़ने पर अपमान कर दिया। अश्वग्रीव को जब यह पता चला, तो वह सावधान व चिंतित हो गया।

२. शांति क्षेत्र में शेर का आतंक और निहत्थे राजकुमार : अश्वग्रीव के शांति क्षेत्र में शेर के आतंक से रक्षा हेतु पोतनपुर नरेश प्रजापति की बारी आने पर राजकुमार अचल और त्रिपृष्ठ स्वयं रक्षा हेतु निकल पड़े। त्रिपृष्ठ ने समस्या के मूल को देखते हुए शेर की गुफा के सामने गर्जना की। क्रुद्ध शेर बाहर निकला। शेर को पैदल व निहत्था देखकर दोनों राजकुमारों ने भी रथ त्याग दिया और अपने शस्त्र छोड़ दिए। आगे का प्रसंग यथासमय प्रस्तुत होगा।

३. वाणी संयम की पावन प्रेरणा : मितभाषी व मृदु वाणी का विवेक: पूज्य आचार्यश्री ने वाणी संयम दिवस पर पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि वाणी लब्धि प्राप्त अंग है, जिसके



मेरी मुरली के तीनों गुण.....

आचार्य श्री ने 'वाणी संयम' को समझाने के लिए मुरली (बांसुरी) के तीन गुणों का एक सुंदर गीत के माध्यम से वर्णन किया है। ये तीन गुण मनुष्य के जीवन में वाणी के अनुशासन के लिए प्रेरणादायक हैं:

सुनो सबको सुनाता हूँ, मेरी मुरली के तीनों गुण।

प्रथम गुण:
प्रथम गुण बंसरी का,
यह बिना बुलाए नहीं बोले।
हिलाए चाहे सारे जन,
मेरी मुरली के तीनों गुण॥

द्वितीय गुण:
दूसरा गुण है मुरली का,
अगर बोलेंगी तो मीठा।

मुग्ध हो सारे ही जन मन,
मेरी मुरली के तीनों गुण॥

तृतीय गुण:
तीसरा गुण है मुरली का,
सदा रहती है खाली खम।
राग और रोष की नहीं धुन,
मेरी मुरली के तीनों गुण॥

यह गीत हमें सिखाता है कि जिस प्रकार मुरली अपने आप नहीं बजती, उसी तरह हमें बिना आवश्यकता के नहीं बोलना चाहिए (प्रथम गुण), बोलने पर हमेशा मीठा बोलना चाहिए (द्वितीय गुण), और अपने मन को राग-द्वेष जैसे नकारात्मक भावों से खाली रखना चाहिए (तृतीय गुण)।

एक गलत कसम... और छिन गई आँखों की रोशनी!...

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने अपने प्रवचन में सोजत के अणदोजी पटवा का शिक्षाप्रद प्रसंग साझा किया।

१. क्रोधवश संकल्प : जब स्वामी जी (आचार्यश्री भिक्षु) के सोजत पधारने की बात हुई, तो अणदोजी पटवा ने अपने मित्र के उकसाने पर अत्यधिक क्रोधित होकर यह कसम खा ली कि वे कभी स्वामी जी का मुख नहीं देखेंगे।

२. दुःखद परिणाम : इस अज्ञानता

और क्रोध के कारण कुछ ही समय बाद अणदोजी की आँखों में भयानक पीड़ा शुरू हो गई। देखते ही देखते उनकी दृष्टि चली गई और वे जीवन भर स्वामी जी के दर्शन करने से वंचित रह गए।

३. मुख्य संदेश : बिना सोचे-समझे बोलना और क्रोध में आकर निर्णय लेना व्यक्ति का स्वयं भारी अनर्थ (अहित) कर सकता है।

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने भगवान महावीर के 'लोकवाद' सिद्धांत की दार्शनिक व्याख्या करते हुए दृष्टांत दिया

लोक और अलोक का दृष्टांत : लोक और अलोक के अंतर को समझाने के लिए आगमों में वस्त्र और पैच (थिंगल) का उदाहरण दिया गया है। जैसे एक विशाल वस्त्र के बीचों-बीच एक छोटा सा पैच लगा हो, वैसे ही असीम 'अलोक' के बीच में 'लोक' सागर में एक बूंद के समान समाया हुआ है।

चाहिए। यदि बोलें तो संयमपूर्वक, मितभाषी होकर मृदु बोलें; अन्यथा मौन रहने का प्रयास करें। झूठ, कपट और कटु वचन से बचकर वाणी के संयम

युवाचार्य श्री, साध्वीप्रमुखा जी, साध्वीवर्या जी का विचार-पाथेय :

१. सत्य धर्म व भाव विशुद्धि : युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने दस

खुद से मत छुपाइए : साध्वी जी का वो सच जो सबको सोचना सिखा दे!...

युवाचार्य प्रवर ने रोचक दृष्टांतों के माध्यम से सत्य के तीन प्रमुख अंगों को स्पष्ट किया।

१. भावसत्य (आंतरिकस्वीकारोक्ति): एक साध्वी जी ने जब दूसरे साधक की प्रशंसा सुनकर अपने भीतर उठी हलचल का आत्म-चिंतन किया, तो पाया कि वे स्वयं भी वैसी प्रशंसा की अपेक्षा रखती थीं। बहाने बनाने के बजाय अपने भीतर छिपी इस वास्तविक भावना और कमी को ईमानदारी से स्वीकार करना ही 'भाव सत्य' है।

२. करण सत्य (कथनी और करनी की एकरूपता) : सादगी पर प्रवचन देने वाले एक व्यक्ति को अकेले में, बिना नियम तोड़े भौतिक सुविधाएं बढ़ाने का अवसर मिला। पर उसने खुद से पूछा कि 'क्या मेरी सादगी सिर्फ वाणी में है या निर्णयों में भी?' और

उसने प्रलोभन त्याग दिया। बिना किसी दिखावे या प्रशंसा की परवाह किए अपने सिद्धांतों को जीवन में डालना ही 'करण सत्य' है।

३. योग सत्य (मन-वचन-काया की निर्मलता) : भीतर नाराजगी रखकर बाहर से मधुरता का अभिनय न करना ही 'योग सत्य' है। यह हमें कृत्रिम मिठास छोड़कर मन, वचन और काया—तीनों योगों को भीतर से सहज, शांत और विशुद्ध बनाना सिखाता है।

निष्कर्ष एवं आदर्श : भाव सत्य (भीतर क्या है), करण सत्य (जीवन में कितना उतारा) और योग सत्य (अभिव्यक्ति कैसी है) का संगम ही 'पूर्ण सत्य' बनाता है। आचार्यश्री महाश्रमण जी ऐसे सत्य के जीवंत प्रतीक हैं, जिनकी कथनी और करनी में रत्ती भर अंतर नहीं है।

धर्मों के अंतर्गत 'सत्य धर्म' पर कहा कि सत्य मन, वचन और काया की प्रवृत्तियों में दिखाई देने पर ही परिपूर्ण बनता है। भाव, सत्य का पहला स्पर्श है जिससे भाव विशुद्धि पैदा होती है। आचरण में बिना किसी माया व कुटिलता के सत्य को अवतरित करना आत्मा की महान उपलब्धि है।

२. मौन की यात्रा व भीतरी प्रवेश : साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने वाणी संयम पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मौन की यात्रा करने वाला साधक भीतरी जगत में प्रवेश करता है। भाषा विवेक से संपन्न साधक दिन भर

बोलकर भी मौन की ही आराधना करता है। वाणी संयम के बिना सृजनात्मकता और ज्ञान में वृद्धि संभव नहीं है।

३. लोकवाद का जैन सिद्धांत : साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने 'लोकवाद' विषय पर उद्बोधन देते हुए कहा कि जैन दर्शन के अनुसार लोक अनादि-अनंत, नित्य और शाश्वत है। इसकी किसी ने रचना नहीं की है, यह स्वतः संचालित है। लोक छह द्रव्यों—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय से निर्मित है।



सुधर्मा सभा में पर्वाधिराज पर्युषण के द्वितीय दिवस 'स्वाध्याय दिवस' का आयोजन

ज्ञान और संयम को नई दिशा देता है स्वाध्याय : आचार्यश्री महाश्रमण

स्वाध्याय दिवस पर अनेकांत, मार्दव और आर्जव धर्म का हुआ तात्त्विक मंथन

लाडनूँ।

09 सितम्बर, 2026

तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी लाडनूँ की धरा पर विराजमान जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में पर्वाधिराज पर्युषण का द्वितीय दिवस 'स्वाध्याय दिवस' के रूप में आध्यात्मिक गरिमा के साथ आयोजित हुआ।

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा : मरीचि का भव और वैराग्य :

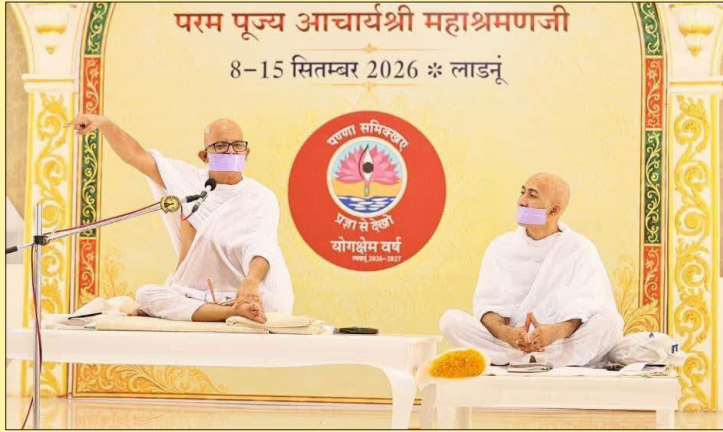
१. नयसार से देवगति और मरीचि का जन्म : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की भवांतर यात्रा का वर्णन आगे बढ़ाते हुए फरमाया कि नयसार 'सम्यक्त्व' की प्राप्ति कर देवलोक में उत्पन्न हुआ। वहाँ से च्युत होकर वह प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के पौत्र और प्रथम चक्रवर्ती भरत के पुत्र 'मरीचि' के रूप में उत्पन्न हुआ।

२. दीक्षा और अलग वेश की साधना : भगवान ऋषभ की देशना सुनकर मरीचि के मन में वैराग्य जगा और उसने दीक्षा ले ली। परंतु साधु जीवन के कठिन परिपक्वों के कारण वह मूल साधु संस्था से अलग हो गया। गृहस्थ जीवन में न लौटकर उसने अलग वेश (गेरुआ वस्त्र, हाथ में त्रिदंड, छतरी, परिमित जल से स्नान, चंदन लेप और खड़ाऊ) धारण कर अपनी साधना जारी रखी।

२४वें तीर्थंकर की भविष्यवाणी और मद का उदय :

१. भगवान ऋषभदेव की उद्घोषणा : सम्राट भरत की जिज्ञासा पर भगवान ऋषभदेव ने फरमाया कि परिषद के बाहर बैठा मरीचि ही आगे चलकर २४वाँ तीर्थंकर, प्रथम वासुदेव और मूक नगरी में चक्रवर्ती बनेगा।

२. मरीचि का अहम् (मद): जब भरत जी ने मरीचि को यह बात बताई, तो मरीचि ने सोचा—'मेरे दादा प्रथम तीर्थंकर, पिता प्रथम चक्रवर्ती और मैं भविष्य का पहला वासुदेव व अंतिम तीर्थंकर बनूँगा!' इस विचार से प्रसन्नता के साथ उसके भीतर अपने कुल का अहंकार (जाति/कुल मद) जागृत हो



'महावीर' का आह्वान: हम बने महाश्रमण भगवान!

युवाचार्य श्री ने आचार्यश्री महाश्रमण जी की ऋजुता (सरलता) और मृदुता के गुणों को वंदन करते हुए कहा कि उनके इन गुणों का कोई पार नहीं है। उन्होंने पंक्तियों के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की: महाश्रमण विभुवर की ऋजुता, मृदुता, अपरम्पार। हम भी वैसा बनकर कर ले भवसागर को पार।।

मन हो ऋजुता से भरपूर।
झूठ कपट मय आचरणों से रहना हमको दूर।।
मन हो ऋजुता से भरपूर।।

मुख्य जीवन सूत्र:

1. आदर्श जीवन: आचार्यश्री के गुणों

से प्रेरणा लेकर हमें भी सरल और कोमल बनकर संसार रुपी सागर को पार करने का प्रयास करना चाहिए।

2. आंतरिक और बाहरी सामंजस्य : अपने 'Public Face' (बाहरी दिखावे) और 'Personal Face' (वास्तविक स्वभाव) के बीच की दूरी को समाप्त करना सच्चा धर्म है।

3. यथार्थ जीवन : जब हम छल, कपट और झूठ का त्याग कर वास्तविक स्वभाव अपनाते हैं, तो जीवन में निखार आ जाता है और 'चार चांद' लग जाते हैं।

करता है तथा संवेग और तप की वृद्धि में सहायक होता है।

३. अनेकांत दर्शन का महत्व : साध्वी वर्या संबुद्धयशा जी ने अनेकांत पर उद्बोधन देते हुए कहा कि जैन दर्शन और अनेकांत पर टिका है। अनेकांत भगवान महावीर की मौलिक देन है, जिसके द्वारा एक ही वस्तु में उपस्थित विरोधी धर्मों के सह-अस्तित्व को सापेक्ष दृष्टि से समझा जा सकता है।

स्वाध्याय की पावन प्रेरणा व बाल साध्वी को कल्याणक बख्शीश :

१. संयमी जीवन की खुराक : पूज्य आचार्यश्री ने स्वाध्याय की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि स्वाध्याय ज्ञान की दिशा में आगे बढ़ने की उत्तम खुराक है। साधु-साध्वियों, समणियों के साथ-साथ श्रावक-श्राविकाओं को भी अधिक से अधिक समय स्वाध्याय में लगाना चाहिए।

२. बाल साध्वी को बख्शीश : पूज्य प्रवर के इंगित पर बाल साध्वी पद्मप्रभा जी ने 'दसवेआलियं' आगम के श्लोकों का सुंदर उच्चारण किया। प्रसन्न होकर पूज्य आचार्यश्री ने बाल साध्वी जी को ५ कल्याणक की पावन बख्शीश प्रदान की।

”
स्वाध्याय संयमी जीवन की
एक उत्तम खुराक है
—आचार्यश्री महाश्रमण

गया। वह एकाकी विचरता रहा और शिष्य बनने आने वालों को भगवान ऋषभ के पास भेज देता था।

युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाजी, साध्वी वर्याजी एवं मुनि श्री का विचार-पाथेय :

१. आर्जव व मार्दव धर्म की व्याख्या : युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने दस धर्मों के अंतर्गत आर्जव और मार्दव धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मार्दव व्यक्तित्व की विनम्रता व कोमलता है, जबकि आर्जव व्यक्तित्व की पारदर्शिता है। आर्जव वह स्थिति है जहाँ मन में छल-कपट न हो और आचरण में बनावट न हो। भावों की शुद्धि और जीवन में मृदुता-कोमलता ही जीवन को निखारती है।

२. स्वाध्याय से अंतः चक्षु का उद्घाटन : साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने फरमाया कि स्वाध्याय से अंतः चक्षु खुलते हैं, बुद्धि में विशिष्टता आती है और अध्यवसाय प्रशस्त होते हैं। स्वाध्याय जिज्ञासा का समाधान

चोरी की चाल, रास्ते में ही बिगड़ा हाल!..

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने 'सरलता' का मर्म समझाते हुए एक प्रेरक प्रसंग साझा किया।

प्रसंग : बुढ़िया और गठरी : सिर पर भारी गठरी संभाले एक बुद्ध महिला रास्ते से गुजर रही थी, तभी एक युवक दयाका भाव दिखाकर मदद के लिए आगे बढ़ा और गठरी अपने सिर पर रख ली। पर थोड़ी ही दूर चलते-चलते, युवक के मन में एक गुप्त पाप पनपने लगा... युवक ने मन ही मन सोचा कि 'अगर मैं यह गठरी लेकर भाग जाता, तो बुढ़िया मेरा क्या बिगाड़ लेती?' इसी बीच महिला ने युवक को रोका और अपनी गठरी वापस मांग ली। युवक ने कहा, 'माता जी, गठरी मुझे ही ले चलने दीजिए, आपको व्यर्थ में देर होगी।' लेकिन महिला ने गठरी युवक को देने से साफ मना कर दिया और गठरी वापस ले ली। जब युवक ने इसका कारण पूछा, तो महिला ने सहजता से उत्तर दिया, 'बेटा, जो बात तुम मन ही मन सोच रहे थे (भागने का विचार), वही

बात मुझे भी समझ आ गई है।'

प्रसंग की सीख (ऋजुता और सरलता) : जिस व्यक्ति का मन भीतर से सरल और निष्कल होता है, उसके पास एक दिव्य विवेक जागृत हो जाता है। वह सामने वाले के मन के कलुषित विचारों को भी सहजता से भांप लेता है—और यही सरलता उसकी सबसे बड़ी रक्षा करती है।

कहानी का यही मर्म समझाते हुए अंत में युवाचार्य श्री ने इस गीत की पंक्तियों के साथ गहरा संदेश दिया:

'सहज तपस्या श्रमण की आर्जव मार्दव भाव, युगल सुखी इह पर भवे यह किसका अनुभाव ।'

सार : जिस साधक के जीवन में सरलता (आर्जव) और विनम्रता (मार्दव) सहज रूप से विद्यमान होते हैं, उसे किसी कठिन शारीरिक तपस्या के बिना भी आत्मिक शांति और सिद्धि प्राप्त हो जाती है, क्योंकि यह सरलता ही अपने आप में सबसे बड़ा तप है।

जब स्वच्छ हाथी ने फिर उड़ाई धूल!...

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी द्वारा 'वृहत् कल्प भाष्य' से वर्णित प्रेरक प्रसंग

1. जिज्ञासा : एक बार एक शिष्य ने अपने गुरुदेव से एक सहज किंतु गहरा प्रश्न पूछा: 'गुरुदेव! जब मैं दीक्षित हो चुका हूँ, साधु के सभी नियमों का सम्यक पालन कर रहा हूँ और पंच महाव्रत में दृढ़ हूँ... तो फिर मुझे निरंतर 'श्रुत' (स्वाध्याय) करने की क्या आवश्यकता है?'

2. दृष्टांत : गुरुदेव ने कोई कठिन परिभाषा देने के बजाय शिष्य को कहा कि हाथी जल में उतरकर अपने पूरे शरीर को बहुत अच्छे से धोता है और एकदम स्वच्छ होकर बाहर निकलता है, लेकिन बाहर आते ही वह अपनी सूंड से ज़मीन की धूल-मिट्टी उठाकर फिर से अपने ही साफ

शरीर पर डाल लेता है! शिष्य यह देखकर विचार में पड़ गया कि इस उदाहरण का साधक के जीवन से क्या संबंध?

3. रहस्योद्घाटन और मुख्य सीख : साध्वी प्रमुखा जी ने इस दृष्टांत का मर्म स्पष्ट करते हुए बताया।

अज्ञान का पुनः आक्रमण : जैसे हाथी स्वच्छ होने के बाद भी स्वयं पर धूल डाल लेता है, ठीक वैसे ही यदि साधक निरंतर स्वाध्याय न करे, तो उसके मन पर फिर से अज्ञान और अशुद्धि की परतें जमने लगती हैं।

ज्ञान की ज्योति : संयम और नियमों का पालन शरीर व आचरण को मर्यादा देता है, लेकिन मन को निर्मल रखने और भीतर के दीपक को प्रज्वलित रखने के लिए स्वाध्याय की निरंतरता अनिवार्य है।

पाँचवीं मंज़िल की वह पहेली: जहाँ 'ऊपर' और 'नीचे' दोनों सही हो गए!...

(साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी द्वारा वर्णित भगवान महावीर का बाल्य प्रसंग)

1. प्रसंग : बालक वर्धमान और मित्रों का संशय: एक दिन बालक 'वर्धमान' (भगवान महावीर) के मित्र उन्हें खेलने के लिए बुलाने आए। वर्धमान महल की पाँचवीं मंज़िल पर थे।

माता त्रिशला का कथन : जब मित्रों ने माँ त्रिशला से पूछा, तो उन्होंने कहा—'वर्धमान ऊपर है।' (क्योंकि माँ दूसरे फ्लोर पर थीं)

पिता सिद्धार्थ का कथन : जब मित्र ऊपर दौड़ते हुए सातवें फ्लोर पर पहुँचे और राजा सिद्धार्थ से पूछा, तो उन्होंने कहा—'वर्धमान नीचे है।' (क्योंकि पिता सातवें फ्लोर पर थे) मित्र असमंजस में पड़ गए कि आखिर कौन सही बोल रहा है और कौन झूठ?

2. समाधान : न कोई झूठ, न कोई भ्रम: साध्वी जी ने स्पष्ट किया कि न तो माता त्रिशला का कथन असत्य था और न ही

पिता सिद्धार्थ का।

माँ की अपेक्षा (दृष्टिकोण) से पाँचवाँ फ्लोर ऊपर था।

पिता की अपेक्षा (दृष्टिकोण) से वही पाँचवाँ फ्लोर नीचे था।

यहाँ केवल 'अपेक्षा भेद' (Perspective) था, जिससे एक ही स्थिति दो अलग-अलग कोणों से भिन्न प्रतीत हो रही थी।

3. मुख्य सीख : सापेक्ष दृष्टि ही अनेकांतवाद है एकांतिक दृष्टि का त्याग : जीवन में कई बार दो परस्पर विरोधी लगने वाली बातें भी अपने-अपने संदर्भ और दृष्टिकोण से पूर्णतः सत्य हो सकती हैं।

समन्वय और सहिष्णुता : अनेकांतवाद हमें सिखाता है कि किसी भी स्थिति या विचार को केवल अपने चश्मे से न देखें। जब हम दूसरों के दृष्टिकोण (अपेक्षा) को समझते हैं, तो मन का संशय और समाज के मतभेद समाप्त हो जाते हैं।



पारखी नजरें ज्योतिचरण की ढूढ़ निकाला कोहिनूर,
 संघ भाल पर युगों युगों, आलेख लिखे नूतन भरपूर ।
 युवराजा के राजतिलक से, निश्चित बने शिरमोर ॥



: श्रद्धाप्रणत :

खेमचंद-ललिता देवी
 विदित-प्रीति
 समकित-गीतिका
 संवृति, जेनिका मुकीम



श्रीMATA GEMS & JEWELS

New Delhi

Vidit Jain & Co.

New Delhi



पर्युषण के पंचम दिवस 'व्रत चेतना दिवस' पर गूँजी पूज्य प्रवर की पावन प्रेरणा

व्रत और संयम का संकल्प ही खोलता है आत्म-कल्याण का द्वार : आचार्यश्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने संयम धर्म पर दिया जागरूकता और त्याग का संदेश

लाडनूँ।

12 सितम्बर, 2026

तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी लाडनूँ स्थित जैन विश्व भारती के सुरम्य परिसर की सुधर्मा सभा में पर्वधिराज पर्युषण का पंचम दिवस 'व्रत चेतना दिवस' के रूप में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में अगाध आध्यात्मिक गरिमा के साथ आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी वृंद के सुमधुर गीत संगान से हुआ।

भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा: त्रिपृष्ठ वासुदेव का पराक्रम, क्रूरता, नरक गमन व चक्रवर्ती भव:

१. शेर व प्रतिवासुदेव अश्वग्रीव का वध : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के क्रम को आगे बढ़ाते हुए फरमाया कि त्रिपृष्ठ ने दोनों जबड़ों को पकड़कर हिंसक शेर का वध कर दिया। भविष्यवाणी के दोनों लक्षण मिलते देख अश्वग्रीव ने छल से बुलाना चाहा, पर त्रिपृष्ठ द्वारा बुझदिल राजा से सम्मान लेने से इनकार करने पर अश्वग्रीव ने आक्रमण कर दिया। युद्ध में त्रिपृष्ठ ने सुदर्शन चक्र से अश्वग्रीव का वध किया और प्रथम वासुदेव बने तथा बड़े भाई अचल बलदेव बने।

२. सम्यक्त्व, शय्यापालक प्रसंग व नरक गमन : ११वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ का प्रवचन सुनकर त्रिपृष्ठ को सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई, जो बाद में लुप्त हो गया। एक बार नींद में व्यवधान पड़ने पर आदेश की अवज्ञा के कारण त्रिपृष्ठ ने शय्यापालक के कानों में पिघला हुआ सीसा ढलवा दिया, जिससे उसकी तड़पकर मृत्यु हो गई। इस तीव्र क्रूरता व दुष्कर्मों के कारण आयुष्य पूर्ण कर वे ३३ सागरोंपम की स्थिति वाले ७वें नरक में उत्पन्न हुए।

३. शेर का भव, चतुर्थ नरक व प्रियमित्र चक्रवर्ती : नरक से निकलकर आत्मा शेर बनी, तत्पश्चात् ४था नरक और फिर २३वें भव में पश्चिम महाविदेह की मूक नगरी में राजा धनंजय व धारिणी के पुत्र 'प्रियमित्र' के रूप में जन्म लिया। प्रियमित्र चक्रवर्ती बने और अंत में संयम



व्रत की चेतना ही व्यक्ति के आत्मबल को बढ़ाती है
-आचार्यश्री महाश्रमण

ग्रहण कर दीक्षा ली। देवलोक गमन के बाद पुनः ७वें देवलोक में उत्पन्न हुए।

व्रत चेतना की पावन प्रेरणा :

१. अणुव्रत व आत्म-कल्याण : पूज्य आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि महाव्रत, सुमंगल साधना व्रत और १२ व्रतों के रूप में व्रत चेतना को देखा जा सकता है। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत को व्यापक रूप प्रदान किया। व्यक्ति जीवन में जितना व्रत-संयम स्वीकार करता है, उतना ही उसके आत्म-

कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है।

युवाचार्य श्री, साध्वीप्रमुखा जी, साध्वीवर्या जी का विचार-पाथेय :

१. संयम धर्म की साधना : युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने दस धर्मों के अंतर्गत 'संयम धर्म' की व्याख्या करते हुए कहा कि संयम आत्मा के निकट जाने का सबसे महत्वपूर्ण सहयोगी तत्व है। जो करें वह जागरूकता से करें और जो नहीं करना है उसे विवेक से रोक दें। सब जीवों के प्रति करुणा और हिंसात्मक वृत्तियों में विवेक रखते हुए गृहस्थ जीवन में भी संयम की दिशा में बढ़ा जा सकता है।

२. अणुगार व अणुगार धर्म तथा मनोबल : साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने 'ठाण' सूत्र के संदर्भ से कहा कि धर्म के

घी से महंगा 'पानी'... सेठ जी की अनोखी डांट!...

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने संयम के महत्व को समझाने के लिए एक सेठ और उनकी बहू का अत्यंत शिक्षाप्रद एवं रोचक प्रसंग सुनाया।

पानी का लोटा और घी का बर्तन :

१. पहली घटना : एक दिन बहू से गलती से पानी से भरा लोटा ठोकर लगने से गिर गया और सारा घी बह गया। हेरान करने वाली बात यह थी कि इतनी बड़ी भौतिक हानि पर सेठ जी बिल्कुल शांत रहे।

सेठ जी का मर्मस्पर्शी उत्तर:

बहू के पूछने पर कि कीमती घी

दो भेद हैं—अणुगार (साधु के ५ महाव्रत) और अणुगार (श्रावक के १२ व्रत)। व्रत की चेतना जगाकर संकल्प स्वीकार करने वाला साधक स्वयं को सुरक्षित कर लेता है। व्रत चेतना से मनोबल और आत्मबल बढ़ता है।

३. पुनर्जन्मवाद का चिंतन: साध्वीवर्या संबुद्धयशा जी ने 'पुनर्जन्मवाद' का विश्लेषण करते हुए कहा कि अस्तिक दर्शन पुनर्जन्म को स्वीकार करते हैं, जिससे मन में आत्मा, कर्मफल, सुगति और दुर्गति के प्रति जागरूकता रहती है। पुनर्जन्म को मानने के साथ-साथ वर्तमान जीवन को श्रेष्ठ जीना अत्यंत आवश्यक है।

गिरने पर वे मौन क्यों रहे, सेठ जी ने संयम का वास्तविक अर्थ समझाया: 'घी का गिरना केवल एक आर्थिक क्षति है, जिसकी भरपाई हो सकती है। लेकिन पानी की एक-एक बुंद में असंख्य सूक्ष्म जीव होते हैं। पानी का व्यर्थ बहाव अनगिनत जीवों की हिंसा है, जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती।'।

मुख्य सीख:

१. सच्चा संयम : संयम का अर्थ केवल बाह्य आडंबर नहीं, बल्कि जीवन की छोटी-छोटी क्रियाओं में अप्रमत्त (जागरूक) रहना है।

२. अहिंसा का पालन : भौतिक नुकसान से ज्यादा महत्व जीवों की रक्षा का है। हर क्रिया में विवेक रखना ही वास्तविक धर्म है।

100 लीलोती से 5 तक का सफर: क्या मन भी 'NO' बोलना सीख सकता है?...

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने तेरापंथ धर्मसंघ के निष्ठावान श्रावक जोधपुर निवासी हस्तिमल जी दूगड़ का प्रेरक प्रसंग साझा करते हुए व्रत चेतना और त्याग के महत्व को रेखांकित किया।

१. गुरु निष्ठा और अप्रतिम समर्पण: हस्तिमल जी का जीवन गुरु भक्ति का अनुपम उदाहरण था। उन्होंने अपने जीवनकाल में जयाचार्य से लेकर कालुगणी तक कुल पाँच आचार्यों के दर्शन एवं सेवा का दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त किया। गुरुदेव चाहे जहाँ भी विराजमान हों, वे प्रतिवर्ष दर्शनार्थ अवश्य पहुँचते थे।

२. व्रत चेतना का क्रमबद्ध विकास: हस्तिमल जी ने अपने जीवन में असंतोष और असंयम को घटाने के लिए छोटे-छोटे संकल्पों से शुरुआत की:

संयम का विस्तार: प्रारंभ में उन्होंने '100 लीलोती' से अधिक ग्रहण न करने का नियम लिया। समय के साथ चेतना

जागृत हुई और यह सीमा घटकर मात्र '5 लीलोती' तक आ पहुँची।

त्याग की पराकाष्ठा: उन्होंने आजीवन रात्रि भोजन का त्याग किया। सूर्योदय के बाद कम से कम एक प्रहर तक अन्न-जल (सचित पानी भी नहीं) ग्रहण न करने का दृढ़ नियम रखा।

साधना का अनुष्ठान: अष्टमी और चतुर्दशी को उपवास व पौषध करते थे। वे बारह व्रतधारी श्रावक बने और प्रतिदिन 18 से 20 सामायिक करने का उच्च अनुष्ठान करते थे।

प्रेरणा पाथेय: हस्तिमल जी का जीवन सिद्ध करता है कि व्रत चेतना आत्मबल को बढ़ाती है और मन को अनुचित लालसाओं के आगे 'ना' कहना सिखाती है। (Mind learns to say NO) छोटे संकल्पों से शुरू होकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को आध्यात्मिक ढर्रे में ढालकर परम संतोष प्राप्त कर सकता है।

खाओ, पियो, मौज करो या फिर पड़ेंगे 'बहुत जूते'?...
(पुनर्जन्म और सुकृत्य: Spiritual Insurance)

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने पुनर्जन्मवाद के दर्शन को स्पष्ट करते हुए आचार्यश्री डालगणी और वैष्णव भक्त बच्छराज जी सिंघवी का एक मार्मिक प्रसंग साझा किया।

एक बार आचार्यश्री डालगणी उदयपुर में विराजित थे। वहाँ वैष्णव मतावलंबी बच्छराज जी सिंघवी आचार्य श्री के ओजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उनके भक्त बने। यात्रा के दौरान आचार्य श्री के मुखमंडल पर बीमारी व थकान की शिथिलता देख बच्छराज जी ने एक शंका रखी।

बच्छराज जी का तर्क : 'महाराज! इतनी कठिनाइयाँ सहकर साधना करना कहाँ तक उचित है? यदि चार्वाक दर्शन की धारणा 'खाओ, पियो और मौज करो' सही निकली, तो आपकी यह कठोर

साधना निरर्थक हो जाएगी।'

आचार्यश्री का प्रश्न : 'और यदि हमारी पुनर्जन्म की मान्यता सही निकली, तो क्या होगा?'

बच्छराज जी का निश्चल उत्तर: 'तब तो हमें अनगिनत जूते (कष्ट) पड़ेंगे! अपने दुष्कृत्यों के कारण हमें भयानक दुर्गति भोगनी पड़ेगी।'

मुख्य सीख:

१. आध्यात्मिक बीमा (Spiritual Insurance) : पुनर्जन्म को मानना या न मानना अपनी जगह है, लेकिन संयम और नैतिकता से जीना जीवन का सबसे सुरक्षित निर्णय है।

२. भविष्य की सुरक्षा : वर्तमान में किए गए सत्कर्म यह सुनिश्चित करते हैं कि आगे जाकर किसी पश्चाताप या दुर्गति का सामना न करना पड़े।



पर्वाधिराज पर्युषण के तृतीय दिवस पर आध्यात्मिक गरिमा के साथ आयोजित हुआ 'सामायिक दिवस'

सामायिक श्रावक जीवन का एक अच्छा अनुष्ठान है : आचार्यश्री महाश्रमण

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने भीतर के अहंकार और मूर्च्छा को मिटाने की दी पावन प्रेरणा

लाडनू।

10 सितम्बर, 2026

तेरापंथ धर्मसंघ की राजधानी लाडनू स्थित जैन विश्व भारती के सुरम्य परिसर की सुधर्मा सभा में पर्वाधिराज पर्युषण का तृतीय दिवस 'सामायिक दिवस' के रूप में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी की मंगल सन्निधि में अगाध आध्यात्मिक गरिमा के साथ आयोजित हुआ। सुगुरु के दर्शन एवं पर्वाधिराज का आध्यात्मिक लाभ लेने हेतु बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

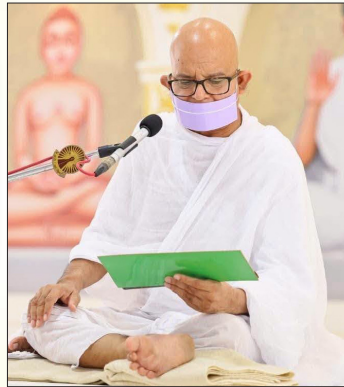
भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा : (मरीचि से त्रिपृष्ठ वासुदेव तक का भ्रमंतांर)

१. मरीचि का अस्वस्थ होना व देवलोक : पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा' के क्रम को आगे बढ़ाते हुए फरमाया कि मरीचि साधु परंपरा से अलग होकर साधना करते हुए बीमार हो गया। शरीर व्याधियों का मंदिर है। मरीचि बाद में स्वस्थ हुआ और आयुष्य पूर्ण कर ५वें देवलोक में उत्पन्न हुआ।

२. भ्रमंतांर व निदान का प्रसंग : ५वें भव में वह कौशिक ब्राह्मण, ६ठे भव में पुष्यमित्र ब्राह्मण बना। देवगति और मनुष्य गति के एकांतर भव करते हुए १५वें भव में पुनः ५वें देवलोक और १६वें भव में राजपरिवार में जन्म लेकर दीक्षा ली। परंतु वहाँ उसने 'निदान' (तप-साधना को भौतिक सुखों के लिए दांव पर लगाना) कर लिया। १७वें भव में वह ७वें देवलोक पहुँचा।

३. पोतनपुर में त्रिपृष्ठ रूप में जन्म व प्रतिवासुदेव अश्वग्रीव : ७वें देवलोक से च्युत होकर १८वें भव में आत्मा ने पोतनपुर के राजा प्रजापति की रानी मृगावती के गर्भ से 'त्रिपृष्ठ' (भावी प्रथम वासुदेव) के रूप में जन्म लिया। दूसरी रानी भद्रा से राजकुमार अचल (बलदेव) का जन्म हुआ। उसी कालखंड में ३ खंडों का अधिपति प्रतिवासुदेव 'अश्वग्रीव' था,

सामायिक: 24 घंटों में से 48 मिनट निकालकर आत्म-साधना में लगाना जीवन को पावन बनाता है
-आचार्यश्री महाश्रमण



अदृश्य बोझ : शिकायतों की 'FILE' डिलीट कीजिए!

युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने विचार लाघव (मन के हल्केपन) को समझाने के लिए एक बहुत ही मार्मिक और व्यावहारिक दृष्टांत दिया।

1. अदृश्य बैग का दृष्टांत : एक साधक अपने साथ एक अदृश्य बैग (Invisible Bag) लेकर चलता था। जीवन में जब भी उसे कोई अपमान, आलोचना या उपेक्षा मिलती, वह मन ही मन एक पत्थर उठाता और उस बैग में डाल लेता।

2. बोझिल चाल और गुरु का बोध : समय बीतने के साथ वह बैग पत्थरों से भर गया और साधक की चाल अत्यधिक भारी हो गई।

गुरु का प्रश्न : 'तुम इतने थके हुए और भारी क्यों लग रहे हो?'

साधक का उत्तर : 'महाराज, मेरे पास कोई भार नहीं है।'

गुरु का समाधान: 'यह भार शरीर का नहीं, मन का है। तुमने अपने भीतर शिकायतों, कड़वाहट और नकारात्मक विचारों का जो डेटा जमा कर रखा है, वही तुम्हें भीतर से दबा रहा है।'

3. आधुनिक उपमा : MOBILE MEMORY : जिस प्रकार मोबाइल में अनावश्यक फाइलें और तस्वीरें भर जाने पर वह हँग हो जाता है और नया डेटा स्वीकार नहीं कर पाता, ठीक उसी तरह जब मन पुरानी शिकायतों से भरा होता है, तो वह न शांत रह सकता है और न ही नए सकारात्मक विचारों को जगह दे पाता है।

4. सार एवं व्यावहारिक सीख : मानसिक शांति की पहली शर्त है — 'मन को खाली करना'। जो व्यक्ति अनावश्यक विचारों और पुरानी कड़वाहट के बोझ को गिरा देता है, वही वास्तव में 'लाघव' (हल्केपन) की साधना कर पाता है।

लाघव) : युवाचार्य श्री महावीर कुमार जी ने दस धर्मों के अंतर्गत 'लाघव धर्म' की व्याख्या करते हुए कहा कि लाघव का अर्थ हल्कापन, लघुता या भारहीनता है। यह दो प्रकार का होता है—द्रव्य लाघव (उपकरणों की अल्पता) और भाव लाघव (अहंकार, मूर्च्छा व गौरव की अल्पता)। गृहस्थ जीवन में अकिंचनता का किंचित् अभ्यास शांतिप्रद है। लाघव की साधना से आत्मा कर्मों से हल्की होकर सिद्धावस्था को प्राप्त कर सकती है।

२. सामायिक की गहराई व राग-द्वेष से मुक्ति : साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने सामायिक दिवस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'समय' का अर्थ है क्षण। जो व्यक्ति वर्तमान क्षण में जीता है, वह राग-द्वेष से मुक्त होकर जी सकता है; वही वास्तविक सामायिक का

संत का अभिमान और 'उस एक क्षण' का रहस्य....

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने सामायिक के महत्त्व को समझाने के लिए एक बहुत रोचक प्रसंग सुनाया।

1. अहंकार और जिज्ञासा : भगवान पार्श्वनाथ के शिष्य वैश्य पुत्र कालास अण्णार स्थविर भगवंतों (वरिष्ठ संतों) के पास जाते हैं और गर्व के साथ कहते हैं कि वे सामायिक, प्रत्याख्यान और संयम का सही अर्थ नहीं जानते। वे स्थविरों को चुनौती देते हुए अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

2. सत्य का साक्षात्कार : स्थविर भगवंत अत्यंत शांति से उन्हें सामायिक का वास्तविक अर्थ समझाते हैं। वे बताते हैं कि आत्मा ही सामायिक है और आत्मा का गुण ही सामायिक है। वे समझाते हैं कि सामायिक का अर्थ 'क्षण' से है; जो व्यक्ति वर्तमान क्षण में राग-द्वेष से मुक्त होकर जीता है, वही वास्तव में सामायिक कर रहा है। 'समय' शब्द का अर्थ केवल घड़ी का समय नहीं, बल्कि 'क्षण' (Present Moment) से जोड़ा गया है। जो व्यक्ति वर्तमान क्षण

में पूरी तरह जागृत रहता है और अपने चित्त को राग-द्वेष से मुक्त रखता है, वह निरंतर सामायिक की स्थिति में होता है।

3. दृष्टिकोण में परिवर्तन : यह नई और गहरी व्याख्या सुनकर कालास अण्णार का अहंकार पूरी तरह टूट जाता है। उन्हें अपनी परंपरा के प्रति मोह का बोध होता है और वे यथार्थता को स्वीकार करते हुए उन स्थविर भगवंतों की परंपरा में दीक्षित होने का निर्णय लेते हैं।

4. व्यावहारिक सीख : यह संदेश दिया गया है कि सामायिक केवल 48 मिनट की एक क्रिया नहीं है, बल्कि यह समता (Equanimity) का निरंतर अभ्यास है। जिस प्रकार आज की युवा पीढ़ी छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ जाती है या क्रोधित होती है, सामायिक हमें उन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी स्थिर रहने की कला सिखाती है। जीवन में सामायिक को एक 'आभूषण' की तरह अपना लें, तो हम अपने दैनंदिन जीवन में भी शांति और समता को अनुभव कर सकते हैं।

जब 16 महीने का हिसाब 16 साल बनकर लौटा : कर्म का वो अटल मोड़...

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी द्वारा प्रस्तुत श्रीकृष्ण वासुदेव की पत्नी रुक्मणी और उनके पुत्र प्रद्युम्न के वियोग का प्रसंग जैन कर्म सिद्धांत और आत्मकर्तित्ववाद की गहराई को स्पष्ट रूप से उजागर करता है, हम जो बोते हैं, वही काटते हैं।

1. पुत्र-वियोग और मानवीय संवेदना : नवजात प्रद्युम्न के अपहरण के पश्चात् माता रुक्मणी का हृदय विदीर्ण हो गया। उनका अत्यधिक आकुल-व्याकुल होकर विलाप करना जहाँ एक ओर स्वाभाविक मानवीय संवेदना है, वहीं आध्यात्मिक दृष्टि से यह उनके पूर्व संचित अशुभ कर्मों का प्रबल उदय था।

2. दिव्य सात्वता एवं सत्य का उद्घाटन : देवर्षि नारद ने सीमंघर स्वामी के समवसरण में जाकर वस्तुस्थिति का बोध प्राप्त किया। नारद जी का संदेश स्पष्ट था कि यह कोई आकस्मिक घटना नहीं, बल्कि 'निकाचित कर्म' का उदय है। इस अपरिहार्य कर्म का फल भोगे बिना मुक्ति संभव नहीं थी, इसलिए रुक्मणी

को 16 वर्षों तक पुत्र का विछोह सहना ही था।

3. पूर्व भव का लेखा-जोखा : पूर्व जन्म में रुक्मणी एक ब्राह्मणी थीं। उन्होंने केवल कौतुक (मस्ती) में एक मोरनी के अंडे को रंग दिया था, जिससे मोरनी अपने बच्चे को पहचान न सकी और तड़पती रही। बाद में उन्होंने मोर के बच्चे को बंदी भी बना लिया। अनजाने में किया गया यह कृत्य भी घोर वियोग का कारण बना।

4. कर्म का सटीक गणित : ब्राह्मणी के रूप में उन्होंने मोरनी को 16 माह का वियोग दिया था, जिसके फलस्वरूप इस जन्म में उन्हें 16 वर्ष का पुत्र-वियोग सहना पड़ा। कर्म का यह गणित अत्यंत सूक्ष्म और निष्पक्ष है।

संदेश : यह प्रसंग हमें सिखाता है कि हर क्रिया का सूक्ष्म प्रतिक्रियात्मक फल अवश्यभावी है। जीवन में निरंतर जागरूकता (MINDFULNESS) और विवेक ही वह एकमात्र मार्ग है, जिससे हम अनजाने में होने वाले पाप-कर्मों से बच सकते हैं।

क्षण है। सामायिक के दौरान पारिवारिक या व्यावसायिक वार्तालाप से बचकर बाहरी दुनिया से ध्यान हटाकर स्वयं को आत्मा से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

३. आत्मकर्तृत्ववाद का सिद्धांत : साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने उद्बोधन

देते हुए कहा कि भगवान महावीर शाश्वतदर्शी थे। आत्मकर्तृत्ववाद जैन दर्शन का महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जिसके अनुसार आत्मा स्वयं अपने कर्मों की कर्ता और भोक्ता है। व्यक्ति अपने कर्तृत्व से ही स्वयं अपने भविष्य का निर्माण करता है।